नये विधानपर

हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टीकी केन्द्रीय कमेटी

का

घोषणा-पत्र

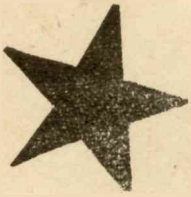

जनवरी १९५०

मूल्य एक आना

नये विधानपर हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टीकी केन्द्रीय कमेटीका

घोषणा-पत्र

कांग्रेसी शासक २६ जनवरी १९५० से हिन्दुस्तानी जनताके ऊपर अपना गुलाम विधान लादने जा रहे हैं।

लड़ाईके बाद फौरन हिन्दुस्तानी जनताने आजादी हासिल करनेके लिये जबरदस्त बगावत कर दी थी। उसे देखकर अंग्रेजोंके साथ-साथ हिन्दुस्तानी पूँजीपति डरके मारे थरथर काँपने लगे। उनके दिलमें डर समा गया कि जनताको लूटने का मौका हाथसे निकल जायगा। अपने काँग्रेसी नुमाइंदोंके जरिये हिन्दुस्तानी पूँजपतिवर्गने देशकी आजादी बेच डाली। कैबिनेट मिशन और माउण्टबेटन योजनाके जरिये ब्रिटिश साम्राजवादके साथ सौदा पटा लिया। दोनोंने मिलकर हिन्दुस्तानी जनताके खिलाफ साजिश रची। हिन्दुस्तानी-ब्रिटिश पूंजीपतिवर्गोंके हितमें जनतापर राज करनेकी साजिश रची। मौजूदा विधान उसी साजिशकी उपज है।

यह विधान कौमी गद्दारों और साम्राज्यवादी शोषकोंके गँठजोड़ेकी उपज है। क्या यह विधान हिन्दुस्तानी राष्ट्रको आजादीकी गारंटी देता है?

नहीं, यह इसकी गारंटी नहीं देता। यह वैसा विधान नहीं है। इसमें हिन्दुस्तानी राष्ट्रको ब्रिटिश साम्राज्यवादियोंकी गुलामी मिली है। नये मालिक अमरीकी शोषकोंकी गुलामी भी मिली है।

यही कारण है कि जनताको निगाहमें रखते हुए भी, कांग्रेसी नेताओंने इस विधानके हर हिस्सेसे "आजाद-हिंदुस्तान" शब्द निकाल दिया है। जनताकी आंखमें धूल झोंकनेके लिए, उन्होंने खुदही पहले प्रस्तावनामें लिखा था कि हिन्दुस्तान एक आजाद प्रजातंत्र होगा। मगर उन्होंने वहांसे भी "आजाद हिन्दुस्तान" शब्द निकाल दिया है।

इस तरह विधान तैयार करनेवाले पूँजीवादी एजेण्टोंने खुले आम ऐलान किया है कि यह आजाद हिन्दुस्तानका विधान नहीं है। यह गुलाम, दूसरोंका हुकुम बजानेवाले, हिन्दुस्तानका विधान है।

जब नेहरूने हिन्दुस्तानको ब्रिटिश साम्राज्यवादी कामनवेल्थ में शरीक कर दिया, उसी समय यह बात साफ हो गयी कि हिन्दुस्तान गुलाम है, दूसरोंका हुकुम बजाता है।

हर रोज यह बात साबित होती जाती है कि हिन्दुस्तान गुलाम है। नेहरू सरकारकी हिम्मत नहीं होती कि अंग्रेजोंके हुकुम पाये बगैर वैदेशिक मामलेमें एक भी कदम उठाये। उसकी हिम्मत नहीं हुई कि दुनियाको कँपानेवाली चीनकी घटनाको मंजूर करे। साम्राज्यवादी मालिकोंने जबतक इजाजत नहीं दी,

तब तक उसकी हिम्मत नहीं हुई कि चीनी जनराष्ट्रको मान्यता दे।

अंग्रेजी पूँजीको हिन्दुस्तानमें अभी भी खास सुविधा मिल रही है। हिन्दुस्तानी सरकारकी आर्थिक नीतिकी नकेल ब्रिटेनके हाथमें है—जैसा कि पौंडके मूल्यकाट (कीमत में कमी) के सवाल पर दिखायी दिया। यह बात एकबार फिर जाहिर करती है कि हिन्दुस्तान गुलाम है।

मूल्यकाटके सवालपर "हिन्दुस्तानी उपनिवेश" की गुलाम सरकारसे कुछ पूछा तक नहीं गया। जरा भी चूं-चपड़ किये बगैर उसे मूल्यकाट मंजूर कर लेना पड़ा। अमरीकी और अंग्रेज मालिकोंके मुनाफेकी भावको बढ़ानेके लिए, उसे अपनी जनताकी झुकी हुई पीठपर और भी बोझ लादना पड़ा।

शासक गुटको ब्रिटिश साम्राज्यवादियोंकी गुलामीसे ही संतोष नहीं है। वह अमरीकी लुटेरोंके लिए हिन्दुस्तानका दरवाजा खोल रहा है। वह उन्हें गारंटी दे रहा है कि हिन्दुस्तानी जनता का शोषण करनेमें उनकी वह पूरी हिफाजत करेगा।

शासक गुट अमरीकी पूँजीपतियोंसे रोटीका कुछ झड़ा-झूड़ा टुकड़ा चाहता है। मिल-जुलकर हिन्दुस्तानी जनताका शोषण करनेके लिए, अपने लड़खड़ाते राजको बचाये रखनेके लिए वह अमरीकियोंकी मदद चाहता है। इसीलिए वह सोवियत विरोधी अंग्रेज-अमरीकी जंगखोर खेमेका समर्थन कर रहा है। उसने दक्खिन-पूरबी एशिया में, साम्राज्यवादियोंके लठधर

पुलिसका काम अंजाम देना कबूलकर लिया है। शासक गुट काश्मीरके मामलेमें दखल देनेके लिए गद्दारीके साथ अमरीका को बुलावा दे रहा है। अंग्रेज अमरीकी जंगखोरोंकी मर्जीके मुताबिक अपनी वैदेशिक नीति तै करता है। अपनी मर्जीके मुताबिक वैदेशिक नीति तै करनेकी हिन्दुस्तानकी आजादी और हक वह बेच रहा है। वह सोवियत विरोधी साजिशोंमें शरीक हो रहा है।

यह विधान विदेशी कायमी स्वार्थवालोंको सलामतीका विश्वास दिलाता है। उन्हें विश्वास दिलाता है कि उनके मुनाफे पर जरा भी आंच नहीं आयगी। इस तरह इस विधान में कूट-कूट कर भरी हुई है—अंग्रेज-अमरीकी गुटके कदमोंपर राष्ट्रीय गुलामीकी नीति, दिन-दिन अमरीकी पूंजीके शिकंजे में फँसते जानेकी नीति, सोवियत संघके खिलाफ लड़ाईकी साजिश रचनेकी नीति।

यह विधान ब्रिटिश और विदेशी बंकशाहों, जूट मुनाफाखोरों चाय इजारेदारियों, कोयला लुटेरोंको तमाम जायदाद और मुनाफेकी हिफाजतकी गारंटी देता है। यह उन्हें गारंटी देता है कि सदियोंतक खुलेआम डाकेजनी करके, उन्होंने हिन्दुस्तानमें जो आर्थिक और औद्योगिक ताकत बटोर ली है, उसपर कोई हाथ नहीं उठा सकता। इतना ही नहीं, बुनियादी कानून के तौर पर, विधानमें बेशरमीके साथ ऐलान किया गया है कि हिन्दुस्तानी जनताको किसी भी उद्योग और पावनाको जप्त

करनेका हक नहीं है, चाहे उसका मालिक, पुराने जमानेमें, मौजूदा जमानेमें या आनेवाले जमानेमें, कोई भी मुनाफाखोर क्यों न हो। इस तरह यह विधान अंग्रेज और विदेशी थैली-शाहोंके साथ-साथ उनके नये देवता—अमरीकी साम्राज्यवादियों से प्रतिज्ञा करता है कि हिन्दुस्तानको आर्थिक तौर पर गुलाम बनानेकी तुम्हें पूरी आजादी है।

यह विधान और भी अच्छी तरहसे कायमी स्वार्थ वालों की पूजा करता है। रेलवेके हिन्दुस्तानी और विदेशी बांड-मालिकोंको अदा किया जानेवाला कर्जा और सूद, पूंजीवादी उद्योग-धन्धों और महाजनोंको भरा-पूरा करनेकी नीयतसे इंडस्ट्रियल फाइनेंस कारपोरेशनके समान पूँजीवादी कंपनियोंको सरकारसे सुरक्षित मुनाफा, हरजानेके नामपर जमींदारों और देशी नरेशोंको सरकारकी ओरसे दिया जाने वाला बांड, हिन्दुस्तानी पूँजीपतियोंके उद्योग-धन्धोंके लिये अंग्रेज-अमरीकी महाजनोंसे लिया जानेवाला कर्जा—ये सबकी सब ऐसी चीजें हैं जिनके लिए विधानमें गारंटी दी गयी है कि सरकारी खजानेसे उनको सबसे पहले अदा किया जायगा। ये ऐसी चीजें हैं जिनपर पार्लमेंटमें वोट भी नहीं लिया जा सकता। यह पूँजीवादी विधान जनताके ऊपर यह बोझ लाद रहा है कि उसे हमेशा लाजिमी तौरपर, टैक्स दे-देकर, हिन्दुस्तानी और विदेशी कायमी स्वार्थवालोंके मुनाफेका पहाड़ उठाते रहना होगा।

इस तरह इस विधानमें है हिन्दुस्तानकी कौमी गुलामी, हिन्दुस्तानी जनता की गुलामीको लम्बे अर्सेतक कायम रखता है। इस विधान के जरिये अंग्रेज-अमरीकी साम्राज्यवादियों के हितमें हिन्दुस्तानी जनताको, सोवियत विरोधी लड़ाईमें तोपका चारा बनाया जा सकता है। एशियाकी आजादी चाहनेवाली जनताके खिलाफ लड़ाईमें उसे तोपका चारा बनाया जा सकता है।

क्या इस विधानमें हिन्दुस्तानी जनताको हिन्दुस्तानी मेहनत कशोंको आजादी दी गयी है? क्या यह जनताके हाथ हुकूमतकी बागडोर सौंपता है? क्या यह जनताको इस लायक बनाता है कि वह जनताको गरीबोंके मुंह में धकेलने वाले शोषकों से लोहा ले सके?

नहीं, यह ऐसा नहीं करता। इसके विपरीत, बेशरमी के साथ यह बिधान साम्राज्यवादियोंसे गँठजोड़ा करनेवाले हिन्दुस्तानी पूँजीपतियों, जमीदारों, राजे-महाराजों को राज करनेका हक देता है।

इस विधानमें हिन्दुस्तानी मेहनतकशोंकी बनिस्वत, हिन्दुस्तानी जनता की बनिस्वत, विदेशी शोषकों को कहीं ज्यादा हक और सुविधा दी गयी है। असलमें इस विधान में विदेशी और हिन्दुस्तानी लुटेरोंको आजादी दी गयी है।

शोषित, हिन्दुस्तानी जनता, मजदूर, किसान, खेत मजूर, मध्यवर्गी जनता, को कोई हक नहीं दिया गया है। अपनी

गरीबी और गुलामी के खिलाफ लड़नेका उन्हें कोई अधिकार नहीं दिया गया है।

दूसरी ओर शोषकों को खानगी जायदाद (व्यक्तिगत-संपत्ति) जमा करनेकी पक्की गारंटी दी गयी है। याने उन्हें शोषणके जरिये पापकी कमाई जमा करने की पक्की गारंटी दी गयी है।

विधानमें देशी-विदेशी शोषकोंको गारंटी दी गयी है कि सरकार कभी भी हरजाना दिये बगैर उनकी जायदाद अपने हाथमें नहीं लेगी। इस गारंटीका मतलब है कि जनता के हितमें उद्योग धन्धोंका राष्ट्रीकरण नहीं किया जायगा। इसका माने है कि पुंजीपति, जनताका बेरोक शोषण करते रहेंगे। विधानमें बुनियादी कानून बनाकर इस हकसे उन्हें अच्छी तरह लैस कर दिया गया है।

हरजाना देनेकी यह गारंटी, राष्ट्रीकरणके तमाम पाक वादों को ताकपर रख देती है। जनताकी आजाद (आर्थिक) मिली जिंदगीकी तमाम संभावनाओं पर पानी फेर देती है। जनताको ऐसी जिंदगीकी संभावना पर पानी फेर देती है जिसमें न शोषण हो न गरीबी।

यह खुलेआम ऐलान करता है कि इस विधानका मकसद है कायमी स्वार्थवालों के हितोंकी रक्षा करना।

इस तरह नेहरू-पटेल मंडली द्वारा तैयार किया हुआ विधान पूंजीपतियों और कायमी स्वर्थवालोंका विधान है। यह सिर्फ टाटाओं, बिड़लाओं और डालमियोंको गारंटी देता है क

तुम्हारा मुनाफा और उद्योग-धन्धा जप्त नहीं किया जायगा। यह उन्हें गारंटी देता है कि मजदूरवर्ग और जनताका बेरोक शोषण करनेकी आजादी तुम्हें बनी रहेगी।

हिन्दुस्तानी विधान बनानेका नाटक खड़ा करनेवाले पूँजीपति, अपने राजकी डूबती हुई नैयाको बचाये रखना चाहते हैं। इस नीयतसे उन्होंने हिन्दुस्तानी समाजके हरेक दकियानूस और सड़े-गले तबकेसे साँठ-गाँठकी है। यह विधान सामंती मुफ्तखोरों, राजा-नवाबों, जमींदारों-जोतदारोंको सहारा देता है। यह जमीन जोतने वालोंको देनेसे इनकार करता है। दूसरी ओर सामंतशाहोंको इस बातकी गारंटी देता है कि जनता या सरकार उनके स्टेटको जप्त नहीं करेगी। यह विधान, निजाम और महाराजा हरीसिंहके समान मुफ्तखोरोंको, किसानों पर जुल्म ढानेके लिए फौज रखनेकी आजादी देता है। इन राजे-नवाबोंने अपनी रैयतके खिलाफ कायरानासे कायराना जुर्म किये हैं। गहरे दोस्ताने ढंगपर कांग्रेसी दोस्तोंने इन राजे नवाबोंके खूनसे रँगे हाथसे हाथ मिलाया है। कांग्रेसी दोस्तोंका विधान इन राजे नवाबोंको राजप्रमुख, उप-राज प्रमुख वगैरहका ओहदा देता है। इस तरह वह इन्हें जिन्दगीभर जनता पर अपनी नादिरशाही चलानेके लिए छुट्टा छोड़ देता है। साथ ही वह इन्हें जनताकी कुरबानी कर मोटी-मोटी तनखाहें, पेंशन, जमींदारी और जायदाद पानेकी गारंटी देता है।

यह विधान हिन्दुस्तानी-विदेशी कायमी स्वार्थवालोंके हितमें

बनाया गया है। यह विधान हिन्दुस्तानी मजदूर-वर्ग, खेतमजूर और किसानोंके खिलाफ़ बनाया गया है। यह दबे कुचले मध्यवर्गियों और प्रगतिशील बुद्धिजीवियोंके खिलाफ बनाया गया है। यह देशकी समूची जनवादी जनताके खिलाफ बनाया गया है।

यह विधान बेशरमीके साथ ऐलान करता है कि सरकार इस बातकी जिम्मेदारी नहीं लेगी कि वह अपने शहरियों (नागरिकों) को काम पाने और जिंदगी बसर करनेके साधन पानेकी गारंटी दे। जनताके लिए गुजारे लायक मजूरी, बेकारी भत्ता, बुढ़ापेकी पेंशन, या ऊँचा रहन-सहनका मान और तंदुरुस्तीका बंदोबस्त करनेकी जवाबदेहीको यह बेशरमीके साथ ठुकरा देता है। जनताको मुफ्त प्राइमरी शिक्षा देनेकी किसी तरहकी कारगर जिम्मेदारी लेनेसे इसने इनकार कर दिया है। इस तरह यह निहायत बेहूदगी के साथ जनताको संस्कृतिसे महरूम (बंचित) करता है। थोड़ेमें, यह घिनौना विधान हिन्दुस्तानी-साम्राज्यवादी मुनाफाखोर-मगरमच्छों को सोलहों आना आजादी देता है। उन्हें आजादी देता है कि वे जनताका बेरहम से बेरहम राक्षसी शोषण करें। दूसरी ओर वह हिन्दुस्तानी जनताको देता है हमेशाके लिए असहनीय गरीबी की मार, बहुत बड़ी बेकारी जहालत (मूर्खता) का गर्त्त हिंदुस्तानी जनताको यह देता है स्थायी अकाल रोगों और महामारियोंके जरिये भयंकर तबाही और बरबादी।

यह विधान मजदूरों और कर्मचारियों को ट्रेड यूनियन बनानेके बिलकुल बुनियादी हक से महरूम (बंचित) करता है। इसने नौकरशाहोंके हाथमें बेरोक ताकत दे दी है कि वे बिना किसी भी सबूत या गवाही के जिस संगठनको भी चाहें, मन-माने तौर पर गैर कानूननी करार दे सकते हैं। हड़ताल और पिकेटिंग करनेका हक छीन लिया गया है। विधानमें अखबार की आजादीका नाम भी नहीं लिया गया है। उसका पूरी तरह गलाघोंट दिया गया है। पूँजीपति वर्ग नहीं चाहता कि मजदूरों और जनताके हाथमें अपना अखबार रहे, जो अखबार शोषकोंकी शैतानियोंका परदा फाश करे, मेहनतकशोंको शिक्षित करे। भाषण करनेकी आजादीका सफाया कर दिया गया है। सभा और प्रदर्शन पर मौजूदा पाबंदियों के साथ-साथ ऊपरसे, पूँजीवादी शासकोंकी मर्जीके मुताबिक और भी कानून और आर्डिनेंस लादनेका वादा किया गया है। इस तरह सभा और प्रदर्शन करनेकी आजादी छीन ली गयी है। विधानमें जनताको हथियार रखनेका हक नहीं दिया गया है। इस तरह विधान रचनेका नाटक खड़ा करनेवालोंने, अपने अंग्रेज मालिकों की कार्यनीति अपनायी है। उन्होंने गुलाम-पालनेकी कार्य-नीति अपनायी है। हथियार रखनेका हक छीनकर वे समूची जनता को नपुंसक बना डालना चाहते हैं। सिर्फ फासिस्टी पुलिस, मिलीटरी और ऐसे लोगोंको हथियार दिया जायगा जिनपर कांग्रेसी नेताओंका भरोसा होगा कि वे मौजूदा हुकुमतकी हिफा-

जत करेंगे। सेवादलके समान संगठनों और पूंजीपतियोंके दूसरे-दूसरे शिकारी कुत्तोंको हथियार दिया जायगा। लाजिमी तौर पर इन हथियारोंका इस्तेमाल किया जायगा निहत्थी जनता के खिलाफ। विधान में कानून बनाकर शासकवर्गने अपने हाथ में बेरोक ताकत रखली है कि अपनी मर्जीके मुताबिक जितना भी दिन चाहे बिना मुकदमा चलाये किसीको नजरबंद कर दे। इस तरह आखिरमें, वे चाहते हैं कि मजदूरों, किसानों और मध्यवर्गीयों के प्रतिरोध को कुचल डालें। जनवादी विरोधियोंकी हरेक आवाजका गला घोंट दें। सुरक्षा कानून विधान के बुनियादी अंग बनालिये गये हैं। यह फासिस्टी नादिरशाहीका विधान है।

काग्रसी नेताओं द्वारा तैयार कराया गया यह विधान, हिन्दुस्तानको भिन्न-भिन्न जातियों की जनताके बीच और भी ज्यादा दुश्मनी पैदा करेगा। यह विधान इस नियतसे बनाया गया है कि जातियोंकी आत्मनिर्णय और अलग हो जानेको जायज मांगको कुचल डाला जाय उस आत्मनिर्णयकी मांगको वे कुचल डालना चाहते हैं जो हर इलाकेकी जनताकी स्वतंत्र आर्थिक और राजनीतिक विकासके लिए पेशकी जाती है। जो तमाम जातियोंकी भाषा और संस्कृतिके स्वतंत्र विकास के लिए पेशकी जाती है।

यह विधान मजबूत केंद्र बनना चाहता है। इसमें राजकी सुरक्षाके नामपर केंद्रीय सरकारके हाथोंमें बेहद ताकत दे दी गयी है। इनका सिर्फ यही मतलब है कि यह एक ऐसा हथकंडा है

जिसके जरिये मारवाड़ी-गुजराती पूँजीपति, तमाम जातियोंकी आर्थिक और राजनीतिक जिंदगी पर पूरी तरह हावी हो जायंगे। आंध्र, तामिल, बंगाल, महाराष्ट्र, आसाम, उड़िया, केरल, कर्णाटक—तमाम जातियोंकी जनता, मारवाड़ी-गुजराती पूँजी की नादिरशाहीकी गुलाम बना ली जायगी।

यह विधान हर भाषाकी समानताको माननेसे इनकार करता है। वह सभी जातियोंके ऊपर अंग्रेजी और हिंदीको राष्ट्रीय भाषा के तौरपर लादता है। आंध्र, बंगाल, तामिलनाद, के मजदूर उसकी भाषाकी समानता का हक छीन लिया गया है।

सभी भाषाओंको समानता पर यह राक्षसी हमला वह हथियार है जो इन इलाकोंके पिछड़ेपनको हमेशाके लिए बरकरार रखना चाहता है जो इन इलाकोंकी जनताको संस्कृति और शिक्षासे महरूम (वंचित) रखना चाहता है। यह ऐसा हथियार है जो मारवाड़ी-गुजराती प्रभुत्वके लिए ठोस बुनियाद तैयार करना चाहता है। क्योंकि अगर जनता अपनी भाषा और संस्कृतिका विकास करेगी तो इतका प्रभुत्व खतरेमें पर जायगा।

भाषावार प्रांत बनानेके सवाल पर कांग्रेसी नेता बिलकुल बेनकाब हो गये। शोषण करने और प्रभुत्व जमानेका उनका लोभ बिलकुल बेनकाब हो गया।

आंध्र कर्नाटक वगैरह के मुकामी शोषक अपनी जानताके शोषणका ज्यादातर हिस्सा चाहते हैं। इसी लिए वे भाषावार प्रांतकी मांग कर रहे हैं।

शासक गुट इन इलाकों की जनताके शोषण से मिलने वाला मुनाफा खुद अपने हाथमें रखना चाहता है। इसी लिए वह भाषावार प्रांत बनानेकी इनकी मांगको नामंजूर कर रहा है।

इस तरह यह विधान राष्ट्रीय दमनका विधान है। इसके मातहत भिन्न-भिन्न राष्ट्रीय इलाकों को ज्यादा से ज्यादा दबाया जायगा। उनके साथ भेद-भावकी नीति बढ़ती जायगी।

इस विधानमें आदिवासी इलाकोंके ओर भी बेरहम शोषण की छूट दी गयी है। इस विधानको बनाने वाले एक ओर आसाम शरहदके आजादी पसंद कबीलों के ऊपर अपना पंजा जमाते जा रहे हैं। दूसरी ओर वे बिहार और उड़ीसा के आदि वासियों की बगावत को बेरहमी से कुचल रहे हैं।

आदिवासी इलाके अच्छे-अच्छे खनिज पदार्थों और नहीं पता लगाये गये साधनों से भरे पड़े है। ये इलाके इस शोषक गुटके कब्जे में आ गये हैं। यह शोषक गुट आदिवासी मजदूरों का शोषण करने के लिए बेरहम से बेरहम तरीका इस्तेमाल करता है।

यह विधान छुआछूत दूर करने का कपटी वादा करता है। इस वादेसे अछूतोंकी दशा रत्ती भर भी नहीं सुधरेगी। आर्थिक शोषण से उनकी तबाही जमीन का प्रभाव और हिन्दुओं द्वारा उनपर सामाजिक अत्याचार कुछ भी कम नहीं होगा।

विधान उन्हें जमीन नहीं देगा। अछूत मेहनत करा मजदूरों और किसानों के अंग हैं। इसलिए विधान उन्हें सभी तरह के

हकों से महरूम करता है। इस विधान के मातहत अछूतोंका शिक्षासंबंधी और आर्थिक पिछड़ापन दूर नहीं होगा। वह और भी बढ़ेगा।

सामाजिक अत्याचार नहीं खतम होगा। क्यों कि कांग्रेसी नेता जात पात मानने वाले भयंकर हिन्दू हैं, वे अछूतोंके दुश्मन हैं। क्यों कि मजदूरों और किसानों के खिलाफ जेहाद में कांग्रेसी नेता हिंदू दकियानूसीकी गंदीसे गंदी ताकतोंका समर्थन कर रहे हैं, बढ़ा दे रहे है। कांग्रेसी नेता हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघवालोंके समान हिन्दू दकियानूस ताकतोंको बढ़वा दे रहे हैं। ये हिन्दू दकियानूस ताकतें कमर कसे हुई हैं कि जात-पात वाले पुराने हिन्दू सभाको फिरसे कायम किया जाय।

संप्रदायवादसे लड़नेके नाम पर यह विधान अल्प संख्यकों-के अधिकारको कुचलता है। खासकर मुसलमान अल्प संख्यकों के अधिकार को कुचलता है।

जिन कायर व बुजदिल संप्रदायवादी नेताओंने इतने दीनोंतक मुसलमान जनताको गुमराह किया था, उनकी अब हिम्मत नहीं होती कि मुसलमान जनता के जायज हकों के लिए लड़े। अपनी घिनौनी चालोंके लिए इन्होंने साम्राज्यवाद का सहारा लिया था। कभी भी उनका इरादा नहीं था कि अपनी निजी आराम तलबी और मुनाफे की कुरबानी कर जनता के सच्चे हितों के लिए लड़े।

विधान के चालू किये जाने के पहले ही मुसल मानों की

स्थिति तेजी के साथ नीचे दर्जे के इंसान की तरह बनती जा रही है।

इस विधान में उर्दू भाषा को बराबरीका हक नहीं दिया गया है। बहुत ही बेरहमी के साथ इसका दमन किया जा रहा है।

विधान में दिखाने के लिए कहा गया है कि हरेक नागरिक को हक है कि अपना कोई भी धर्म माने। कहा गया है कि हर आदमी को हक है कि अपने अक्षर (हरुफ) में लिखे, अपनी संस्कृतिको माने।

विधानमें बात बघारी गयी है कि हर इंसानको हक है कि अपनी भाषा और अक्षरको सुरक्षित रखे। मगर अमलमें सरकारी तौरपर उर्दू भाषाको समानता देनेसे इनकार कर दिया गया है। और गैर सरकारी तौरपर इसको कुचला जा रहा है।

कहनेके लिए यह विधान विचारकी आजादीको मंजूर करता है। मगर यह इस बातकी गारंटी नहीं देता कि दूसरे धार्मिक दलोंके हमलावर साम्प्रदायिक दकियानुसों से अल्प संख्यकों की सचमुच रक्षा की जायगी।

दूसरी ओर विधान बनाने वालों ने अपने कारनामों के जरिये साफ कर दिया है कि अल्प संख्यक जनता को कुचलने के लिए उसके साथ भेद-भाव बरतने के लिए वे हाथ धोकर पड़ चुके हैं। उनके कारनामोंसे साफ हो चुका है कि विधानके कानून सिर्फ जनताको आंखमें धूलझोंकने के लिए हैं।

मुस्लिम लीगके नामपर कोई भी नहीं रोयेगा। मगर एक ओर सांम्प्रदायिक संस्था होनेकी दलील पर मुस्लिम लीगको तोड़ दिया गया है। दूसरी ओर कांग्रेसी नेता हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघके समान घोर हिन्दू सम्प्रदायवादी संगठन को फलने-फूलने दे रहे हैं। इतनाही नहीं, वे इन संगठनोंको बढ़ावा भी देते हैं, इनका संरक्षण भी करते हैं ;

अनेकों कांग्रेसी नेताओंके बयानोंका आखरी नतीजा सिर्फ यही होगा कि अल्पसंख्यकों के साथ भेद-भाव की नीति बढ़ती जायगी। असेम्बलियोंमें बहुतसे कांग्रेसी मिनिष्टर अल्पसंख्यक एम-एल-ए लोगों का खुलेआम धमकियां देते हैं। समुचे अल्पसंख्यकों पर झूठे इलजाम लगाते हैं और उन्हें धमकियां देते हैं। कांग्रेसी-मिनिस्टरों द्वारा अल्पसंख्यकोंको दी जानेवाली धमकियां नाजियों द्वारा यहूदियों को दी जानेवाली धमकियोंकी याद ताजा कर देती हैं।

इस तरह हालत, मुसलमानोंके साथ गैर-सरकारी तौरपर बढ़ती जानेवाली भेदभाव की नीतिकी ओर बढ़ती जा रही है। नौकरियों में उनके साथ भेद-भाव किया जाने लगा है। शिक्षा के मामलेमें और आर्थिक तौर पर उन्हें पिछड़ा हुआ रखा जा रहा है।

यह विधान इस हालतको रोकने में निकम्मा है।

यह विधान अल्पसंख्यकोंको इस नीतिके खिलाफ किसी

तरहकी गारंटी नहीं देता। यह उन्हें पूंजीवादी शासकों की दयापर छोड़ देता है।

बालिग मताधिकारके बारेमें इस विधानका दयनीय कानून एक जालसाजी है। जब प्रचार करनेके सारे साधन पूंजीपतियों और शासकवर्गोंके हाथ में है। जब उनके हाथमें सरकार द्वारा चलाया जानेवाला रेडियो है। पातळू पूँजीवादी अखबार हैं। जब उनके हाथमें सभा करनेके कीमती से कीमती हौल हैं, लाउडस्पीकरका इन्तजाम है, दूसरी ओर जब गरीबोंके पास चुनावके मामूली अधिकार भी नहीं है। क्योंकि मकान संबंधी योग्यता, उम्मीदवारों द्वारा जमा की जानेवाली मोटी रकम वगैरहकी पाबंदियां हैं। ऐसी हालत में यह कहना सफेद झूठ है कि बालिग मताधिकार के जरिये धनी-गरीब सभीको बराबर अवसर मिला है कि वैधानिक ताकत हासिल करे।

उस समय तो बालिग मताधिकार यह दलील दोहरी झूठ बन जाती है जब, जैसाकि इस विधान के जरिये, जनताके बहुत बड़े बहुमतको यह हक नहीं है कि केंद्र और सूबा दोनोंकी ऊँची परिषदों (अपर हाउस) में अपना नुमाइंदा भेजे। जब कि जनता को यह हक नहीं है कि वह संघ के प्रेसिडेंटको चुने, गो कि प्रेसिडट को जनता की जिंदगी और मौतके बारे में ताकत दे दी गयी है। उस समय यह दलील दोहरी झूठ बन जाती है जबकि हर सूबेका स्वेच्छाचारी ताकतवर गवर्नर ऊपर से बहाल होकर लोगोंके सर लादा

जानेवाला है। जब कि सीर्फ कमिश्नवाले सूबों और छोटी-छोटी रियासतोंकी करोड़ों जनता को एसेंबली और पार्लमेंटका कोई हक नहीं है। जबकि उनकी किस्मतका फैसला पूरी तरह हिटलरी प्रेसिडेन्टके हाथ में सौंप दिया गया है। ऐसे विधानके मातहत चुनाव, मखौलको छोड़ कर और कुछ नहीं हो सकता।

निहायत बेशरमीके साथ वोटर-लिस्ट तैयार करनेमें ऐसी तिकड़म की गयी कि अधिकतर लोगोंके लिए वोट देना बिलकुल दुस्वार है। चुनाव अफसर, जनता द्वारा अपने वोटका हक इस्तेमाल किये जाने की राहमें खुलेआम रोड़े अँटकाते हैं। इस कामके लिये सरकारी ताकत का भी धड़ल्ले से इस्तेमाल किया जाता है।

और आखिरमें, जनता के फैसलेसे किनारा काट देने के लिए, सरकारने कम्युनिस्ट पार्टीको गैर-कानूनी करार दिया है। मजदूरवर्ग और जनताकी पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी पर रोक लगा दी हैं। उस कम्युनिस्ट पार्टी पर रोक लगादी है जो जनताके स्वार्थ के लिये लड़नेवाली एक मात्र पार्टी है। मजदूरों और किसानोंको कुचल डालने के लिये मध्यवर्गियोंपर अंकुश लगानेके लिये, उससे धुआंधार दमन शुरू किया है। तेलंगाना और बंगाल, केरल तथा आंध्रके गांवोंमें वह अनसुने दमन चला रही है। सरकार कलकत्ता की सड़कोंपर गोलीबार और लाठी चार्ज कर रही है। मजदूरोंकी हड़तालों, किसानोंकी लड़ाइयों,

विद्यार्थीयोंकी हड़तालों और महिलाओंके जलूस पर वह गोलीबार और लाठी चार्ज कर रही है। ऐसी हालतमें जनताको आजाद चुनावका कौन सा मौका मिलता है ?

इस विधानके मातहत :—

—किसान जमींनकी मांग नहीं कर सकते।

—मजदूर, खेतमजूर और कर्मचारी रोजी या गुजारेलायक मजूरी की मांग नहीं कर सकते।

—मध्यवर्गी जिंदगी बसर करनेके साधन की मांग नहीं कर सकते।

—राष्ट्र, शहरी-आजादी, शिक्षापाने के हक और संस्कृतिकी मांग नहीं कर सकता।

—छुआछूत नहीं मिटेगी। आदिवासियों पर दमन जारी रहेगा।

अगर जनता इन चीजोंकी मांग रखनेकी हिम्मत करे तो विधान उनकी आवाजका गला घोंट देना चाहता है। यह विधान प्रेसिडेन्ट और गवर्नरोंको यह अधिकार देता है कि वे आर्डिनेन्स निकालकर जनताकी आवाज दबा दें। और आखिरमें वे खुद इस विधानकोही खारिज कर दें। यह विधान यह अधिकार देता है कि जब कभी भी कायमी स्वार्थवालोंकी गद्दी डोलने लगे, उस समय प्रेसिडेन्ट ऐलाननामोंके जरिये राज चलावे। राक्षसी स्वेच्छाचारी हुकूमत चालू करे।।

इस विधानके समर्थन करने, इसकी घोर निन्दा नहीं करनेका

मतलब है उस राजका समर्थन और अनुमोदन करना जिसने हिन्दुस्तानी जनता पर पिछले दो सालों तक दमनकी चक्की चलायी है। इसका माने है उन लोगोंका समर्थन करना जो प्रेसीडेन्सी जेल और साबरमती जेलमें, वेल्लोर और कुड्डालोर जेलोंमें गोली बरसाकर राजबंदियोंका खून करते हैं। इसका मतलब है उन लोगोंका समर्थन करना जिन्होंने कलकत्तेके जेलोंमें बन्द मां-बहनोंके साथ ऐसी नीच हरकतें की हैं जिसे सुनकर गुस्साके मारे देह जलने लगती है।'

यह राक्षसी विधान, मुर्दाबाद! अमरीकी और ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के कदमों पर राष्ट्रीय गुलामी का विधान, मुर्दाबाद! गुलामी और फासिज्म का विधान, मुर्दाबाद!

इस विधानका समर्थन सिर्फ नेहरू कम्पनी ही नहीं करती, इसका समर्थन सिर्फ टाटा-बिड़ला मण्डली ही नहीं करती।

सोशलिस्टपार्टीके गद्दार नेता भी इस विधानका समर्थन कर रहे हैं। जनताके दिमागमें यह भ्रम पैदाकर रहे हैं कि इस विधानके मातहत तुम्हारा सब मसला हल हो सकता है। वे यह भ्रम फैला रहे हैं कि इस विधानके जरिये जनता हुकूमतकी बागडोर पर कब्जा जमा सकती है।

सोशलिस्ट नेता हरेक हड़तालके साथ गद्दारी करते हैं। यहां तक कि किसानोंके संघर्षके साथभी गद्दारी करते हैं। वे भी उसी नीतिकी वकालत करते हैं जिसकी कि नेहरू सरकार करती

है। इसलिए सोशलिस्ट नेता नेहरू सरकारकी तिकड़मको ही दोहराना चाहते हैं। जनताको ठगना चाहते हैं।

नेहरू-पटेल कम्पनी ने जनताको ठगा। जनताकी पीठपर चढ़कर गद्दीपर बैठी। और अब जनताका दमन कर रही है।

जयप्रकाश कंपनी अगले चुनावमें जनताका वोट हासिल करना चाहती है। गद्दीपर बैठने और पूंजीपतिवर्गके हितमें फिर जनताको ठगनेके लिए वह उसका वोट चाहती है।

ये गद्दार हर तरह के जंगी संग्रामका विरोध करते हैं। ये वही लोग हैं, यही नरेन्द्रदेव कम्पनी है, जिसने यू० पी० में बेशरमी के साथ मंजूर कर लिया कि जमीन्दारोंको भेंट और बेशुमार हर्जाना (मुआवजा) दिया जाय। अब वे दिखावा कर रहे हैं कि हम ऐसे हरजानेके विरोधी हैं।

ये वही गद्दार हैं, जो त्रिदली सम्मेलनमें विदेशी और हिन्दुस्तानी पूंजीपतियों तथा नेहरू सरकारके साथ मिलकर इस बातके लिए राजी हो गया कि हजारों मजदूरोंको छँटनी करदी जाय। और साथही साथ अपनी इस गद्दारीको छिपानेके लिए वे अब बेकारीके खिलाफ जलूस निकालते हैं।

ये सोशलिस्ट नेता ब्रिटिश साम्राज्यवादी लेबर सरकारका समर्थन करते हैं। दूसरी ओर वे समाजवादी रूसके खिलाफ जहर उगलते हैं।

वे चाहते हैं कि मजदूर और किसान सीधे या घुमा-फिराकर इस विधानको मंजूर करलें। ताकि पूंजीवाद कायम रहे। ताकि

पूंजीपतियोंका हुकुम बजानेके लिए सोशलिस्ट नेताओंके हाथमें ताकत आवे, वे मन्त्रि-मण्डलोंमें शरीक हों।

मजदूरो ! किसानो ! विद्यार्थियो ! दबे-कुचले मध्यवर्गियो !

२६ जनवरीको शोषकोंके इस विधानके खिलाफ प्रदर्शन करो। राष्ट्रीय गुलामीके इस विधानके खिलाफ प्रदर्शन करो !

हड़तालों, जलूसों और प्रदर्शनोंका संगठन करो। हिन्दुस्तानी कायमी स्वार्थवालों और विदेशी शोषकों की इस साजिशके खिलाफ अपने घोर विरोधका इजहार करो।

अपने फैसलेका ऐलान करो कि हम इस विधानको दफना देंगे। यह वैसा विधान है जो पूँजीपतियों, जमींदारों, सामंती राजा-नवाबों, चोरबाजारियों, और अनाजचोरोंके हाथमें हुकूमतकी बागडोर सौंपता है। जो मजदूरोंको गुलाम बनाता है। वैसा विधान है जो मुसलमान अल्पसंख्यकोंके साथ भेद-भावकी नीति बरतता है। अछूतोंपर समाजिक अत्याचार करनेकी छूट देता है। तमाम जातियोंका दमन करता है। इस तरह यह वैसा विधान है जो मेहनतकशोंमें फूट फैलाता है।

जंगखोरों द्वारा तैयार यह विधान, मुर्दाबाद ! हिन्दुस्तानको अंग्रेज-अमेरीकी लड़ाईके खेमेमें घसीट ले जानेवालोंके द्वारा तैयार यह विधान, मुर्दाबाद ! सोवियत संघके खिलाफ लड़ाई की साजिशमें मदद और सहयोग करनेवालोंके हाथमें ताकत सौंपने वाला विधान, मुर्दाबाद !

हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट पार्टी तमाम मेहनतकशोंको, तमाम

ईमानदार लोगोंको बुलावा देती है कि विधान-विरोधी प्रदर्शनको जनताको, मेहनतकशोंकी एकताका प्रदर्शन बनाओ। सच्ची आजादी और स्वाधीनता जीतनेके लिए जनताकी एकताका प्रदर्शन बनाओ।

कम्युनिस्ट पार्टी हिन्दुस्तानके पूरे मजदूर वर्गको, मजदूर-वर्ग के तमाम संगठनोंको बुलावा देती है कि विधान-विरोधी दिवसमें, मजदूर वर्गकी एकता का प्रदर्शकरो चाहे फूटपरस्त सोशलिस्ट कितनी भी कोशिश क्यों न करें।

मजदूर वर्गको महसूस करना चाहिए कि उसकी ताकतमें फूट डालना दुश्मनकी चाल है। अपने दुश्मनके खिलाफ मजदूर वर्गके पास सिर्फ एकही अजेय हथियार है—वह है इसके अपने वर्गकी एकता का हथियार।

मजदूरोंको मजदूरोंसे अलग करनेकी सोशलिस्ट नेताओंकी कोशिशको नाकाम कर दो। मजदूरोंको ठगकर, उनसे टाटा-बिड़लाका यह विधान मंजूर करवा लेनेकी सोशलिस्ट नेताओंकी कोशिशको नकाम कर दो। मजदूर वर्गकी एकता का प्रदर्शन करो।

२६ जनवरीको जबरदस्त जनवादी मोरचा कायम करने के अपने संकल्पका ऐलान करो।

मजदूरों, किसानों, खेत मजूरों, विद्यार्थियों, महिलाओं; कर्मचारियोंके जनवादी मोरचा कायम करनेके संकल्पका ऐलान

करो। मजदूरों और किसानों की दोस्ती पर बने हुए जनवादी मोर्चा कायम करनेके संकल्पका ऐलान करो।

हिन्दुस्तानी जनता जो विधान चाह रही है वह शोषकोंके हाथों नहीं मिलेगा। खुद अपने संग्रामोंकी ताकतपर जनता उसे हासिल करेगी। राजनीतिक और आर्थिक आजादी की लड़ाई जोतकर जनता उसे हासिल करेगी।

मौजूदा विधानको तैयार करनेवाले जब जनताके हकके साथ तिकड़म करनेमें मशगूल थे, उस समय तैलंगानाके दिलेर किसान बहादुरी, कुरबानी, साहस और संकल्पके साथ जनताके हकको लिख रहे थे। वे उस समय जनताके हकको लिख रहे थे जब कि फौजी शासन उनके खिलाफ अनकहे-अनसुने दमन चला रहा था।

तैलङ्गानाके लड़ाकू किसानोंने, दो साल पहले निजामकी अत्याचारी पुलिसको मार भगाया। निजामके जूएसे बहुत बड़े इलाकेको आजाद कर लिया। उन्होंने जोतनेवालोंके हाथमें जमीन सौंपदी। सभीको अच्छे रहन-सहनकी गारन्टी दे दी।

हिन्दुस्तान भरमें लड़ेजानेवाले अनगिनती संग्रामोंमें—जिनमें मजदूर और किसान साहस, सङ्कल्प और दिलेरीके साथ लड़ रहे हैं—जनताका विधान बनानेवाली ताकत पैदा हो रही है। केरल, आंध्र, मेदनीपुर और काकद्वीपमें चलनेवाले ऐसी संग्रामोंमें जनताका विधान बनानेवाली ताकत पैदा हो रही है। इन अग्नि-परिक्षाओंमें किसानोंको जमीन पानेका हक, मजदूरोंको गुजारे

लायक मजूरी पानेका हक, जनताको आर्थिक (माली) और राजनीतिक सुरक्षाका हक लिखा जा रहा है।

तब, मौजूदा विधान, मुर्दाबाद !

जनताके विधानकी ओर आगे बढ़ो—ऐसे विधानकी ओर आगे बढ़ो—

—जिससे हिन्दुस्तानी जनताको आजादी और स्वाधीनता मिलेगी,

—जो जोतनेवालोंको जमीन, औद्योगिक और खेत मजदूरोंको गुजारे लायक मजूरीकी गारन्टी देगा,

—जो उद्योग-धन्धोंका राष्ट्रीकरण करेगा, सभीको काम करनेका हक और आर्थिक सुरक्षाकी गारन्टी देगा,

—जो मेहनतकशोंके हाथमें सत्ता सौंपेगा, शान्तिके पक्षमें, लड़ाईके खिलाफ, जो सोवियत संघ, चीन और जनराष्ट्रोंके साथ हिन्दुस्तानी जनताकी दोस्तीकी गारन्टी देगा,—

जनताके उसी विधानकी ओर आगे बढ़ो !

(অ)-অনশন ধর্ম্মঘট সম্পর্কে পি-বি'র প্রস্তাব

ভারতের কমিউনিস্ট পার্টি,
পশ্চিমবঙ্গ প্রাদেশিক কমিটি

দাম ঃ ছয় আনা

১৭ই জানুয়ারী, ১৯৫০

(অ)—অনশন ধর্মঘট সম্পর্কে পি·বি প্রস্তাব ও নোটের বিভিন্ন সংখ্যা ও আক্ষরিক সংকেতের অর্থ

অ—বোম্বাই

(১) টি অধিকারি, (২) ডি-এস বৈদ্য, (৩) এস-ভি পারুলেকর, (৪) এস-কে ওক্, (৫) সর্দার জাফরী, (৬) যমনাদাস মোদি, (৭) জয়ন্তীলাল পারেখ, (৮) এস-এ ডাঙ্গে, (৯) এ-কে ঘোষ, (১০) এস-ভি ঘাটে, (১১) এস-এম জোশী, (১২) মোরে, (১৩) মোরারজী গোজি, (১৪) মত্ত দেশমুখ, (১৫) বোম্বাইয়ের প্রধানমন্ত্রী, (১৬) খের, (১৭) নাজ্জাপ্পা, (১৮) কোঠাওয়ালা, (১৯) কোলহাৎকর।

(ক) নাসিক, (খ) যারবেদা, (গ) বোম্বাই কমিটি, (ঘ) আর্থার রোড, (ঙ) আহমেদাবাদ, (চ) মহারাষ্ট্র কমিটি, (ছ) জেল কমিটি, (জ) ওয়ার্লি, (ঝ) সবরমতী, (ঞ) দেউলী, (ট) কাম্বোয়ার, (ঠ) মহারাষ্ট্র, (ড) ক্রাণগাঁও, (ঢ) ১১ই মে, (ণ) ওয়ার্কার্স এণ্ড পেজান্টস্ পার্টি, (ত) বহুজন সমাজবাদীরা, (থ) কেন্দ্রীয় (দ) সাম্য।

(অ)-অনশন ধর্মঘট সম্পর্কে পি-বি'র প্রস্তাব

গত মে মাসে (অ) রাজবন্দীদের অনশন ধর্মঘটের ব্যাপারে (ক) এবং (খ) নেতৃত্বের ধর্মঘট-ভাঙা চাপের কাছে আত্মসমর্পণ করার জন্য পি-বি কমরেড (১)-কে তীব্র নিন্দা করছে। অনশন ধর্মঘট যখন চূড়ান্ত পর্যায়ে উঠেছে কমরেড (১) সেই সময় নেতৃত্বের একাংশের ক্রমবর্দ্ধমান ভীতির দ্বারা নিজেকে অভিভূত হতে দেন। এইভাবে তিনি ধর্মঘটের প্রতি বিশ্বাসঘাতকতার সাহায্য করেন।

কেন্দ্রীয় কমিটির সভ্য (২), (৩), (৪)-কে পি-বি তীব্র নিন্দা করছে। তাঁরা এই বিশ্বাসঘাতকতার বিরুদ্ধে লড়তে পারেন নি, এবং জেল নেতাদের কাপুরুষোচিত উপদেশের দ্বারা নিজেদের অভিভূত হতে দিয়েছেন। পি-বি লক্ষ্য করছে যে, কমরেড (৪) তাঁর অপরাধকে এতই লঘুভাবে নিয়েছেন যে তিনি নিজের কাজের কোন কৈফিয়ৎ বা আত্মসমালোচনা পেশ করেন নি। পি-বি কমরেড (৪)-কে তাঁর কৈফিয়ৎ পেশ করার জন্য ১৫ দিন সময় দিচ্ছে। অন্যথায় পি-বি কেন্দ্রীয় কমিটির কাছে কমরেড (৪)-কে পার্টির কেন্দ্রীয় কমিটি এবং প্রাদেশিক কমিটি থেকে বহিষ্কার করার সুপারিশ করবে।

(গ) অথবা (গ)-সম্পাদকমণ্ডলী যে সংস্কারবাদী পথে অনশন ধর্মঘট পরিচালনা করেছেন, সে সম্পর্কে (গ)-র সভ্যদের ব্যক্তিগত কৈফিয়ৎ পেশ করার জন্য পি-বি ১৫ দিন সময় দিচ্ছে। পি-বি কোন লম্বা কৈফিয়ৎ চায় না। (গ)এর সভ্যরা সর্বান্তকরণে পি-বি প্রস্তাব এবং দলিলগুলি স্বীকার করেন কিনা, এবং তাঁরা নিজেদের ভুলগুলি স্বীকার করেন কিনা তাই পি-বি জানতে চায়।

(অ)'র শ্রমিক শ্রেণীর বীর সন্তান, অসংখ্য পার্টিসভ্যরা যেরকম বীরত্ব এবং সাহসের সঙ্গে এই অনশন ধর্মঘট চালিয়েছেন, তারজন্য পি-বি তাঁদের অভিনন্দন জানাচ্ছে। (খ)'র মহিলা কমরেডদের মত যাঁরা (৫)-এর মত লোকদের বিশ্বাসঘাতকতার বিরুদ্ধে লড়েছেন এবং পার্টির সম্মান রক্ষা করেছেন, পি-বি তাঁদের উদ্দেশ্যে বিশেষ অভিনন্দন জানাচ্ছে।

আমাদের (ঙ)'র শহীদ-কমরেড (৬) এবং (৭)-এর স্মৃতির প্রতি পি-বি অভিবাদন জানাচ্ছে এবং যেসব কুৎসাকারীরা আমাদের (ঙ)-কমরেডদের বীরত্বকে ছোট করতে চাইছে তাদের বিরুদ্ধে লড়াই চালাবার জন্য জেলের সমস্ত পার্টি মেম্বারদের পি-বি আহ্বান জানাচ্ছে।

অনশন ধর্মঘট সম্পর্কিত বিভিন্ন ঘটনায় তাঁর মনোভাব এবং কার্য্যকলাপের জন্য কমরেড (৮)-কে পি-বি তীব্র নিন্দা করছে। পি-বি নোটে তাঁর এইসমস্ত মনোভাব এবং কার্য্যকলাপেরই বিস্তৃত বিবরণ আছে। পি-বি মনে করে যে, কমরেড (৮)-এর মনোভাবের অর্থ অনশন ধর্মঘটকে প্রকাশ্যে বানচাল করা এবং পার্টি কংগ্রেস তাঁকে কেন্দ্রীয় কমিটির সভ্য নির্বাচন করে তাঁর উপর যে বিশ্বাস স্থাপন করেছিল কমরেড (৮) সে বিশ্বাস ভঙ্গ করেছেন। এইসঙ্গের নোটে (৮)-এর কার্য্যকলাপের পরিষ্কার বিশ্লেষণ করা হয়েছে, তাই পি-বি তাঁর খুঁটিনাটির মধ্যে যাওয়া দরকার মনে করে না।

(৮)-এর সঙ্গে কমরেড (৯) এবং (১০) অনশন ধর্মঘট পরিচালনায় কাপুরুষের মত ভয় পাওয়ার দোষে দোষী—এবং (৮)-এর সঙ্গে সঙ্গে এই দুজন কমরেডকেই ধর্মঘটের সার্বিক ভাবে প্রধানত দায়ী বলে ধরতে হবে। (৯) এবং (১০)কে কেন্দ্রীয় কমিটির সভ্য নির্বাচন করে পার্টি কংগ্রেস তাঁদের উপর যে বিশ্বাস স্থাপন করেছিল, (৮)-এর মত (৯) এবং (১০)ও সে বিশ্বাস ভঙ্গ করেছেন।

পি-বি সিদ্ধান্ত করেছে যে, এই কমরেডদের কার্য্যকলাপ কেন্দ্রীয় কমিটির কাছে পেশ করা হবে এবং আরও কোন শাস্তিমূলক ব্যবস্থা গ্রহণ করা দরকার কিনা সে সম্পর্কে কেন্দ্রীয় কমিটির মত চাওয়া হবে। তবে পি-বি কেন্দ্রীয় কমিটির কাছে সুপারিশ করছে যে, চূড়ান্ত ব্যবস্থা কিছুদিন স্থগিত রাখা হোক এবং নিজেদের ভুল সম্পর্কে আত্মসমালোচনা করার জন্য এই কমরেডদের একটা সুযোগ দেওয়া হোক।

পি-বি এই কমরেডদের ট্যাকটিক্যাল লাইন (রণকৌশল সংক্রান্ত নীতি) দলিলগুলি বিশেষ মনোযোগ দিয়ে পড়তে, জেলের মধ্যে নিজেদের কার্য্যকলাপ সম্পর্কে সেগুলো প্রয়োগ করতে এবং নিজেদের কাজের বাস্তব আত্মসমালোচনা করে, সেই সমালোচনা একটা সঙ্গত সময়ের মধ্যে কেন্দ্রীয় কমিটির কাছে পেশ করার জন্য আহ্বান করছে।

(গ) এবং (চ)-এর বেশ কয়েকজন সদস্য (খ)-তে আছেন বলে পি-বি জানতে পেরেছে। অনশন ধর্মঘট সংক্রান্ত বিভিন্ন ঘটনায় তাঁরা কি করেছিলেন সে সম্পর্কে পি-বি'র কাছে একটি বিবৃতি পেশ করতে পি-বি তাঁদের আহ্বান জানাচ্ছে। এছাড়াও তাদের পি বি প্রস্তাব ও নোটের ভিত্তিতে আত্মসমালোচনা করতে এবং এই দুটি দলিল স্বীকার করেন কিনা তা জানাতে বলা হচ্ছে।

(খ)-র দুজন কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্য—(৮) এবং (৯) নিজেদের দ্বিধা এবং সুবিধাবাদকে মতবাদগত যুক্তি দিয়ে ঢাকবার চেষ্টা করেছেন; সরকারী ত্রাসের কাছে বিনা প্রতিবাদে আত্মসমর্পণ করার নীতিকে অথবা মনকে বোঝাবার জন্য কেবল আনুষ্ঠানিক বিরোধীতা করে কার্য্যত বি-শ্রেণীর বন্দীদের এ-শ্রেণী থেকে পৃথক করার এবং বন্দী শিবিরে (কনসেন্ট্রেশন ক্যাম্প) স্থানান্তর করার বেপরোয়া আক্রমণের বিরুদ্ধে সমস্ত প্রতিরোধ বর্জন করার নীতিকে

বোকাগুলি সমর্থন করেছেন। (খ) জেল কমিটি সর্বসম্মতি-ক্রমে এঁদের সমর্থন জানিয়েছে। স্থানান্তর করার চেষ্টাকে সমস্ত রকম সম্ভাব্য উপায়ে প্রতিরোধ করতে বলে (অ)র কেন্দ্রীয় কমিটির সভ্যরা একখানি সার্কুলার দিয়েছিলেন, এঁরা এক চিঠিতে উদ্ধতভাবে সে সার্কুলার প্রত্যাহার করার দাবী জানান। এই চিঠিখানিতে সমস্ত রকমের প্রতিরোধ বর্জন করার যুক্তি ছাড়া আর কিছুই নেই। শ্রমিকদের মনকে বিভ্রান্ত করার জন্য এই কমরেডরা স্বপ্নবাদী বাগ্মিতা প্রভৃতি লেনিনবাদী কথা খুব ব্যবহার করেন। তাই এঁদের সুবিধাবাদী কার্য্যকলাপের লেনিনবাদের মুখোস ছিন্নভিন্ন করে দেওয়া দরকার।

প্রথমত, প্রস্তাবটা বিষয়ে নিজেদের ভুল দৃষ্টিভঙ্গী এবং তার থেকেই ধর্ম-নেওয়া দোদুল্যমানতাবের জন্যই যে ধর্মঘটের প্রতি বিশ্বাসঘাতকতা করা হয়েছে, সেকথা এই কমরেডরা বুঝতে অক্ষম।

যথার্থ সুবিধাবাদীর মত তারা এই অনশন ধর্মঘটের প্রধান প্রশ্ন—শ্রেণীগত প্রশ্নটাই ধরতে পারেন নি, তাই তাঁদের এই বোঝার অক্ষমতা। কংগ্রেস যখনও শাসক দল নি তখনকার দিনের অনশন ধর্মঘটেও যেহেতু শ্রেণী-বিভাগ রদ করা, পারিবারিক ভাতা ইত্যাদি দাবী থাকত, কাজেই এই কমরেডরা দিশেহারা হয়ে গেলেন, অনশন ধর্মঘট এবং তার দাবীগুলির নতুন শ্রেণী-চরিত্রটা আর তাদের নজরে পড়লো না।

শ্রেণী-বিভাগের ব্যবস্থা প্রবর্তন করে, কারাওয়ালা শ্রমিক-দের জোরদার করে এবং তাদের পারিবারিক ভাতা দিতে অস্বীকার করে; শ্রমিকদের এবং তারপর মেহনতী কৃষকদের প্রতি জঘন্যতম ব্যবহার করে কংগ্রেস সরকার আমাদের পার্টির বন্দিদের উপর আক্রমণ করছিল, আমাদের শ্রেণী—শ্রমিক শ্রেণীকে আক্রমণ করছিল এবং পরিবারকে উপবাসে রেখে তাদের স্ত্রী-পুত্রকে ধীরে ধীরে মৃত্যুর মুখে ঠেলে দিয়ে, আমাদের সভ্যদের ব্যক্তিগতভাবে ভয় পাইয়ে দেবার চেষ্টা করছিল। এক কথায়, এ ছিল পার্টির বন্দিদের, পার্টির প্রাণ—শ্রমিক কমরেডদের নিরাশ এবং ভয় পাইয়ে দেবার একটা চেষ্টা।

সি-শ্রেণীর রাজবন্দীরা সবাই শ্রমিক। তাদের পৃথক করবার চেষ্টার অর্থ হচ্ছে, অন্য যারা মতবাদগত কার্য্যকলাপ চালাতে পারে তাদের কাছ থেকে জোর করে সরিয়ে এনে শ্রমিক বন্দীদের রাজনৈতিক ভাবে দুর্বল করার আর একটি ব্যবস্থা। এই ব্যবস্থার আর একটি উদ্দেশ্য, শ্রমিক রাজবন্দী-দের ওপর পুরোদমে দমননীতি এবং জেলের জুলুম সুরু করা।

সরকার মনে করে যে, নেতাদের এবং অন্যান্য মধ্যবিত্ত বন্দীদের কাছ থেকে একবার পৃথক করতে পারলে শ্রমিক বন্দীদের ওপর এইরকম সন্ত্রাসরাজ চাপিয়ে দেওয়া অপেক্ষাকৃত সহজ হবে এবং সেই অত্যাচারের খবর সহজেই লুকিয়ে রাখা যাবে।

সেই সঙ্গেই, ভাল ব্যবহারের একটা নকল লোকদেখান ব্যবস্থা করে আমাদের আন্দোলনের ধারকে ভোঁতা করে দেবার জন্য সরকার পার্টির নেতাদের এবং পার্টির মধ্যেকার শিক্ষিত বুদ্ধিজীবিদের জন্যে অপেক্ষাকৃত ভাল ব্যবস্থা করেছে। কিছু কিছু লোককে নষ্ট করে, তাদের মারফৎ সমস্ত শ্রেণীর লড়াইকে নরম করাবার এবং বানচাল করাবার চেষ্টা ছাড়া এটা আর কিছু নয়। পার্টির পরিচিত নেতাদের এবং শিক্ষিত মধ্যবিত্তদের যখন প্রথম শ্রেণীতে রাখা হয়েছে তখন জেলে বন্দীদের অবস্থা বাইরের চেয়ে খারাপ নয়—মধ্যবিত্ত জনমতকে বোকা বানিয়ে তার মধ্যে এই বিশ্বাস সৃষ্টি করারও এতে সাহায্য হয়েছে।

সরকারের চেষ্টা ছিল, প্রথম শ্রেণীকে দেওয়া বিশেষ সুবিধাগুলির ওপর সকলের দৃষ্টি নিবদ্ধ রেখে একটা সরকার-চিত্ত-কাছে ধারণা সৃষ্টি করা এবং দ্বিতীয় শ্রেণীর সঙ্গে যে বর্বর ব্যবহার করা হচ্ছে সে তথ্যকে লোকচক্ষুর অন্তরাল করে রাখা।

(ক)-সরকার তার প্রচারে ঠিক এই পথই অনুসরণ করেছে। এক কথায়, বিভিন্ন শ্রেণীতে ভাগ করার ব্যবস্থা করে [অ]-সরকার পার্টির মধ্যেকার অ-শ্রমিক অংশকে সন্তুষ্ট রাখার এবং শ্রমিকদের দমন করার চেষ্টা করছিল।

এই নীতির ফলেই দেখা গেল যে, ২০ বছর শ্রমিক শ্রেণীর সেবা করেছেন এমন শ্রমিক নেতাকে দ্বিতীয় শ্রেণীতে রাখা হয়েছে, অথচ ডিগ্রী আছে বলে মধ্যবিত্তরা প্রথম শ্রেণীতে স্থান পেয়েছে। সরকার প্রতিহিংসা নেবার জন্যেই জেলের মধ্যেও শ্রেণীবিভেদ বজায় রেখেছে এবং শ্রমিক শ্রেণীকে অপমান করার, হীন করার চেষ্টা করেছে।

বাইরের এবং ভেতরের কেন্দ্রীয় কমিটির সভ্যরা যে একথা বোঝেন নি তা পরিষ্কার বোঝা যায়। তাঁদের ধারণা ছিল সংস্কারবাদী ধারণা—যেন এটা শুধু কয়েকটি ছোটখাট দাবীর প্রশ্ন, একটা সমগ্র শ্রেণীর সঙ্গে জড়িত প্রশ্ন নয়। সরকার যে আমাদের শ্রেণীকে আক্রমণ করার, ভয় পাইয়ে দেবার চেষ্টা করছে সেটা যেমন তাঁদের নজরে পড়ে, তেমনি আমাদের শ্রেণীকে যে অপমান করা হচ্ছে সেটাও তাঁরা দেখতে পান নি। বহু বছরের সংস্কারবাদের ফলে, শ্রমিক শ্রেণী সম্পর্কে সমস্ত গর্ব তাঁদের মন থেকে মুছে গেছে; শ্রমিক শ্রেণীর প্রতি কোন অপমান এবং অসম্মান তাঁদের মনে কোন সাড়া দেয় না; তাঁদের এমনই কড়া সংস্কার বাধ্য করে দিয়েছে যে, পার্টির মধ্যে শ্রেণী বিভেদ মেনে নিতে এবং প্রবর্তন করতেও তাঁরা প্রস্তুত। আক্রমণের এই শ্রেণী চরিত্র দেখতে না পাওয়া আসলে তাঁদের পক্ষ থেকে পার্টির মধ্যে শ্রেণীবিভেদ মেনে নেওয়া ছাড়া আর কিছুই না।

কমিউনিস্ট নামের যোগ্য, শ্রমিক শ্রেণীর প্রতি বিশ্বস্ত প্রত্যেক কমিউনিস্টের প্রাথমিক কর্তব্য ছিল এই আক্রমণকে, শ্রমিক শ্রেণী থেকে আসা নতুন বন্দীদের ভয় পাইয়ে দেওয়ার এই চেষ্টাকে, স্ত্রীপুত্রকে উপবাসী রেখে বন্দীদের আত্মসমর্পণ করতে বাধ্য করার এই চেষ্টাকে পরাস্ত করা। এটা সাধারণ অর্থে জেলে ব্যবহারের প্রশ্ন নয়। এ হোল শ্রমিক শ্রেণীর সংগ্রামের স্বাধীনতার প্রশ্ন, শ্রমিক শ্রেণী এবং কমিউনিজমের আদর্শের জন্য কেউ লড়াই করলে তারা প্রতিশোধ হিসাবে তার—স্ত্রীপুত্রকে অনাহারে রাখা যাতে না যায়—সেই অধিকার প্রতিষ্ঠার প্রশ্ন, ধনিক শ্রেণীর

বিরুদ্ধে শ্রেণী-সংগ্রাম চালাবার যে স্বাধীনতা পার্টি দাবী করেছে এ হোল তারই অংশ।

স্পষ্টই বোঝা যায় যে এই লড়াইয়ে কোন আত্মত্যাগই বেশী নয়। কোন কমিউনিস্ট যদি এই মহান আদর্শের জন্য তার সব কিছু বলি দেবার ক্ষমতা না রাখে তবে বুঝতে হবে যে সে কোন মহৎ আদর্শের জন্যই লড়তে পারবে না। কিন্তু (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যদের মনোভাব কি ছিল?

সরকার জোর করে খাওয়ান শুরু করে দেওয়ায় তারা আতংকিত হয়ে উঠলেন, জোর করে খাওয়ান বন্ধ করার ব্যাপার নিয়ে প্রায় পাগলের মত হয়ে গেলেন, ভাবতে লাগলেন যে এ হচ্ছে তাঁদের মেরে ফেলার জন্যে ষড়যন্ত্রী পরিকল্পনা; যে কোন প্রকারে হোক অনশন ধর্মঘট প্রত্যাহার করাবার জন্যে, (১১) এবং (১২)র হিংস্র অত্যাচার বন্ধ করার জন্য তাঁরা বাইরে একাধিক আতংকপূর্ণ চিঠি পাঠালেন। "যে ভাবে হোক আমাদের বাঁচাও" এই ছিল তাদের শ্লোগান। যত দিন যেতে লাগল তত তাদের মনোভাব অবশেষে চরমপত্রের রূপ নিতে লাগল। এবং (ক) জেল থেকে অনুরূপ চরমপত্র পাঠিয়ে (গ) তাদের সাহায্য করলেন।

গত ১৮ মাসে সমস্ত প্রদেশে বন্দী পার্টির সভ্যরা একাধিক অনশন ধর্মঘট চালিয়ে গেছেন। এবং প্রত্যেকটিতেই সাধারণ সভ্যরা, আমাদের পার্টি সভ্যদের শতকরা নিরানব্বই জন বীরের মত, সাহসের সঙ্গে লড়েছেন। এবং পার্টি সঙ্গতকারণেই তাদের জন্য গৌরব অনুভব করে।

এই সব লড়াইয়ে হিংস্র এবং নৃশংস অত্যাচার দেখা গেছে, কিন্তু (ক) এবং (খ)র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যদের মত নেতৃত্বের তরফ থেকে এমন প্রকাশ্য এবং স্থূল কাপুরুষতা এবং আতংক আর কখনও দেখা যায় নি।

অনশন ধর্মঘট প্রত্যাহার করার কি যুক্তি (খ)র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা দিয়েছিলেন? মৃত্যু অথবা পঙ্গু হবার ঝুঁকি না নিয়ে অনশন ধর্মঘট চালান তাদের পক্ষে আর সম্ভব ছিল না। মৃত্যু অথবা পঙ্গু হবার আশংকায় (খ)র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা ভয় পেয়েছিলেন—কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যদের একজনও ধর্মঘট করেন নি—মনে হয় শুরুতেই ধর্মঘট থেকে রেহাই দেওয়া হয়েছিল। শ্রেণী বিভেদ রদ করা, শত শত শ্রমিকের পরিবারের জন্য ভাতা, কংগ্রেস সরকারের ভ্রান্ত নীতির বিরুদ্ধে লড়াই করে, শ্রমিক শ্রেণীর বিরুদ্ধে শ্রেণী-বিভেদের ব্যবস্থা—এগুলি তাদের মতে এমন কিছু গুরুতর ব্যাপার নয় যার জন্যে, তাদের মহামূল্যবান জীবন বলি দেওয়া যায়, অথবা এমনকি পঙ্গু পর্যন্ত হতে দেওয়া যায়। শ্রমিক শ্রেণীর প্রতি তাদের ঘৃণার, তাদের কমরেড, একই পার্টির সভ্য শ্রমিক রাজবন্দীদের প্রতি সরকারী ব্যবহারে তাদের ক্ষোভের এই হোল নমুনা।

মৃত্যুর বা শারিরীক আঘাতের ঝুঁকি নিতে এই অস্বীকার করা, শ্রেণী-সংগ্রাম থেকে প্রকাশ্য পলায়ন ঘোষণা, শ্রমিক শ্রেণীকে ছেড়ে মধ্যবিত্তদের প্রকাশ্য পলায়ন ছাড়া আর কিছু নয়। কাপুরুষের মত ধর্মঘট প্রত্যাহার করার এই হোল শ্রেণীগত অর্থ, এ ছাড়া তার আর কোন অর্থ হতে পারে না। জেলে পার্টি নেতৃত্বের মধ্যে মধ্যবিত্ত শ্রেণীর দ্বিধার প্রতিফলন দেখা যায়, কারণ এই নেতৃত্বের অধিকাংশই সেই শ্রেণীর লোক।

শ্রেণী-বিভেদ অবসান করার দাবী আদায় করা অসম্ভব বলে নেতারা মনে করেছিলেন। কিন্তু সেটা অসত্য নয়। (ক)র সভ্যসাধারণ হয়ত জানেন না যে বাংলায় এবং মাদ্রাজে রাজবন্দীদের ক্ষেত্রে শ্রেণী-বিভেদ রদের ব্যবস্থা রদ হয়েছে। এই ঘটনায় থেকেই প্রত্যেকের বোঝা উচিত যে লড়াইয়ের ক্ষমতা, এবং আদর্শে বিশ্বাস যথেষ্ট থাকলে সহজেই এই দাবী জেতা যায়।

(খ) এবং (ক)র নেতারা, কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা যদি বেপরোয়াভাবে ধর্মঘট চালিয়ে যাবার সিদ্ধান্ত করতেন, প্রথম থেকেই যদি তারা আপোষহীন মনোভাব দেখাতেন, এবং অনশন ধর্মঘট সহজেই ভাঙা যাবে বলে কর্তৃপক্ষের মনে ভরসা সৃষ্টি না করতেন, তাহলে তারা নিশ্চয়ই জয়লাভ করতেন। লড়াই সফলই হোক বা বিফলই হোক, সেই লড়াইয়ের মধ্যে কেউ কেউ শহীদ হলেও—জীবন দেবার মত আদর্শের জন্যই তাদের মৃত্যু হোত। সে আদর্শের জন্য—শ্রমিক শ্রেণীর জন্য প্রাণ দেওয়া সম্মান এবং সৌভাগ্যের কথা।

কিন্তু এই আদর্শের জন্য প্রাণ দেবার কর্তব্যের কথা (ক) এবং (খ)র নেতৃত্বের মনে ঘুনাক্ষরেও ছিল না। এই নেতৃত্বের মধ্যে অধিকাংশই সুবিধাভোগী প্রথম শ্রেণীর। তারা প্রথম থেকেই এই লড়াইকে দ্বিতীয় শ্রেণীর লড়াই হিসাবে দেখেছেন। (৯) বারবার তার চিঠিতে লিখেছেন যে, দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীরা ক্রমেই বেশী বেশী সংখ্যায় ধর্মঘট ছেড়ে দিচ্ছে। যাদের জন্য তারা লড়ছেন তারা নিজেরাই ধর্মঘট ছেড়ে দিচ্ছে; আর ধর্মঘট চালান নিরর্থক, এ দোষ দিয়ে একথা বলার জন্য কোন মানেই হয় না। লড়াই সম্পর্কে এই ছিল তাদের মনোভাব।

তাছাড়া, অনেক দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দী অনশন ধর্মঘট ছেড়ে দিচ্ছে বলে ধর্মঘট প্রত্যাহার করা দরকার—(খ)'র নেতাদের এই যুক্তিও মিথ্যা যুক্তি। মিথ্যা এই জন্যে যে, সমস্ত দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দী ধর্মঘট ছেড়ে দিলেও অনশন ধর্মঘট চালিয়ে যাওয়াই ছিল প্রথম শ্রেণীর বন্দীদের অপরিহার্য দায়িত্ব। এটা ছিল একটা যুক্ত লড়াই, প্রথম শ্রেণীর বন্দীরা প্রতিরোধ চালিয়ে গেলে তার ফল হোত, দ্বিতীয় শ্রেণীর রাজবন্দীরা আবার লড়াইয়ে যোগ দিত।

দ্বিতীয়ত, অধিকাংশ দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দী (খ)তে ছিলেন না, সুতরাং (খ)তে দ্বিতীয় শ্রেণীর রাজবন্দীদের দুর্বলতার অজুহাতে ধর্মঘট প্রত্যাহারের দাবী কখনই করতে দেওয়া যায় না।

তৃতীয়ত, (খ)তে দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীদের প্রায় সকলেই ছিলেন পার্টির বাইরের সাধারণ কৃষক, পার্টির সঙ্গে তাদের কোন সংযোগই ছিল না বলা চলে। তারা তো দ্বিধা দেখাবেনই। কিন্তু এই অবস্থায় দ্বিধার ওপর নির্ভর করার অর্থ নিজের দ্বিধাকে ঢাকবার জন্যে আড়াল খোঁজা।

পার্টি সভ্যদের অধিকাংশই ছিলেন (ক) কিংবা (ক)কে

—(৮)এর কিন্তু তাদের কথা মনেই নেই—যদিও তারাই দ্বিতীয় শ্রেণীর রাজবন্দীদের অধিকাংশ।

এই ভাবে দেখা যাবে যে, লড়াই যেখে পৌঁছেছে আগাম, কোন না কোন রকমে তার পক্ষে যুক্তি খাড়া করার কোন প্রচেষ্টাই বাদ দেওয়া হয়নি।

আবার যেখানেও দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীদের মধ্যে দ্বিধা দেখা দিয়ে থাকতে পারে। এটা স্বাভাবিক, কারণ প্রথম থেকেই নেতৃত্ব ছিল দুর্বল এবং দ্বিধাগ্রস্ত। কিন্তু কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যদের দ্বিধার সেটা কোন যুক্তি নয়। দ্বিধা বাড়তে দেখলে তাদের উচিত ছিল নিজেরাই লড়াইয়ে ঝাঁপিয়ে পড়া। (৯) এবং (১০)কে রেহাই দেওয়া হয়ে থাকলেও, লড়াইয়ের চূড়ান্ত মুহূর্তে তাদের লড়াইয়ে যোগ দেওয়া উচিত ছিল।

সি-পি মনে করে যে কেন্দ্রীয় কমিটির এই সদস্যরা মধ্যবিত্ত শ্রেণীর হয়ে লড়াইয়ের সঙ্গে বিশ্বাসঘাতকতার পরিচয় দিয়েছেন; নিজেদের মধ্যবিত্ত শ্রেণীসুলভ মনোভাবের দরুন মধ্যবিত্ত শ্রেণীর জঙ্গী লড়াইটা তাদের কাছে অবাস্তব হয়ে গেছে; সেই জন্যেই, লড়াই যখন চূড়ান্ত রূপ নিচ্ছে উচ্চতম স্তরে পৌঁছচ্ছে ঠিক সেই সময়েই তাদের মধ্যে বিশ্বাসের অভাব এবং আতংক দেখা দিয়েছিল।

সি-পি মনে করে যে সংশ্লিষ্ট কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা যদি সকলের আগে এগিয়ে যেতেন এবং দ্বিধাহীন নেতৃত্ব দিতেন তবে ধর্মঘট আরও বহুদিন চলতে পারত।

এরপর, [খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সংখ্যা সদস্যদের পৃথক করার চেষ্টাকে প্রতিরোধ না করা অথবা কেবলমাত্র আনুষ্ঠানিকভাবে নিষ্ক্রিয় প্রতিরোধ করার পক্ষে ওকালতি শুরু করেন। এই ব্যাপারে [ছ] সর্বসম্মতিক্রমে তাদের সমর্থন করে। কেবল জঙ্গী কায়দায় প্রতিরোধের নীতিকে তারা অস্বীকার করেন। এবং কেবল শুধু অনশন ধর্মঘট অথবা অন্য কোন সক্রিয় প্রতিরোধ—তাদের ভাষায় আত্মরক্ষামূলক প্রতিরোধ—ছাড়া আর কিছুই করা উচিত নয়—এই সুবিধাবাদী তত্ত্ব তারা জাহির করেন। একে যাতে কেউ নির্ভেজাল অহিংস নিষ্ক্রিয় প্রতিরোধ না বলতে পারে, সেজন্য তারা শুধু হাত দিয়ে অথবা অস্ত্র যা হাতে পাওয়া যায় তাই দিয়ে প্রতিরোধের কথা বলেন। এটা সম্পূর্ণ চোখ-ঠারান ছাড়া আর কিছু নয়। তারা নীতিগতভাবে গণ-প্রতিরোধকে নাকচ করেন এবং আগে থেকে সেইরকম প্রতিরোধের জন্য প্রস্তুত হতে অস্বীকার করেন। এরপর শুধু হাতে প্রতিরোধ প্রভৃতি কথার অর্থ অসংগঠিত নিষ্ক্রিয় প্রতিরোধ ছাড়া আর কিছু নয়। এই ব্যাপারে তারা বুর্জোয়া নেতা গান্ধিরই অনুকরণ করেছেন। গান্ধিও মেয়েদের শুধু হাতে প্রতিরোধ করতে, নখ দিয়ে আঁচড়ে দিতে এবং দাঁত দিয়ে কামড়াতে বলত। গান্ধি এইসব ধরনের প্রতিরোধকে অহিংস আখ্যা দিয়ে কিছু ভুল করেনি, কারণ এগুলি নামমাত্র প্রতিরোধের চেয়ে বেশী কিছু নয়।

[খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা সংস্কারবাদের পাঁকে এতখানি ডুবে গেছেন যে তারা এই সামান্য ঢাকা অহিংস প্রতিরোধের সম্ভাবনাকে ক্ষুণ্ণ এবং সশস্ত্র গণ-প্রতিরোধ ও প্রতিরোধের অধিকারকে নীতিগতভাবে অস্বীকার করেন।

প্রকৃত এবং গণ-প্রতিরোধের প্রশ্নে করতে যে এই সদস্যরা নীতিগতভাবে অস্বীকার করেন তা এই থেকেই বোঝা যায়—"আমরা যে আদর্শের পথ ঠিক করেছিলাম তাকে বলা যায় আত্মরক্ষামূলক প্রতিরোধ। অর্থাৎ, আমরা এক জায়গায় জড়ো হবো; ঘেরাও দিতে থাকব এবং পুলিশদের থেকে আক্রান্ত হলে বা লাঠি-চার্জ হলে অস্বীকার করব। ওরা যদি আমাদের আক্রমণ করে তাহলে আমরা শান্তভাবে আত্মরক্ষা করব, পারলে ওদের লাঠি ছিনিয়ে নেব ইত্যাদি। কিন্তু আমরা ইটপাটকেল ছোঁড়া করব না, পুলিশের ওপর চড়াও হব না।" ১৯৬৬ সালের আগষ্ট মাসে, যখন সারা পশ্চিমবাংলা এবং পার্টি পরিচালিত জনগণ দেশের ভেতরে এবং বাইরে শোষণের যুদ্ধ চালাচ্ছে, সেই সময় এখন কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্য যে এরকম হাস্যকর নীতি লিখতে পারেন এবং প্রাদেশিক প্রাদেশিক কমিটি তাকে সমর্থন করতে পারেন, একথা বিশ্বাস করাও কঠিন।

পুলিশের বিরুদ্ধে প্রতিরোধের জন্য কোন সশস্ত্র তৎপরতাকে ... করাকে [খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা নীতিগতভাবে অস্বীকার করেন। অবশ্য পুলিশের হাত থেকে লাঠি ছিনিয়ে নেবার কথা বলে তাঁরা নিজেদের নীতির কাপুরুষতাকে ঢাকবার চেষ্টা করেছেন। যারা নীতিগতভাবে গণ-প্রতিরোধ সংগঠন করতে অস্বীকার করে, তারা যে কখনও পুলিশের হাত থেকে লাঠি ছিনিয়ে নিতে পারবে না তা সহজেই বোঝা যায়।

[খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যদের মতে, পুলিশের বিরুদ্ধে আক্রমণ পর্যন্ত তোলার আগে পুলিশের তরফ থেকে তাদের আক্রমণ করাটা অপরিহার্য।

তাদের যুক্তিটা এই রকমের: "প্রশ্ন হচ্ছে, একেবারে গোড়া থেকেই কি আমাদের অস্ত্র শস্ত্রের ব্যবস্থা—পাথর জড়ো করা ইত্যাদি ব্যবস্থা করা উচিত, সেইসব পাথর ছুঁড়ে পুলিশকে আমাদের কাছে আসতে না দেওয়া উচিত, তাদের আক্রমণ করার সুযোগ না দিয়ে আমাদেরই উদ্যোগ নেওয়া উচিত?"

[খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা উদ্যোগ নিতে ভয় পান; তারা চান যে পুলিশই আগে শুরু করুক—এই হোল তাদের নীতির সারমর্ম এবং তাদের মতে, পুলিশ যখন লাঠি বন্দুক নিয়ে আপনার ব্যারাকের দিকে এগিয়ে আসছে তখনও পুলিশের আক্রমণ শুরু হয়নি, একমাত্র যখন আপনার মাথা ফাটাতে শুরু করেছে, আপনার ইয়ার্ডে ঢুকে পড়েছে, আপনার বাড়ির মধ্যে ঢুকে পড়ে আক্রমণ চালাচ্ছে, একমাত্র তখনই পুলিশের আক্রমণ শুরু হয়েছে বলা যায়; তাদের মতে, আক্রমণ যখন অর্ধেক সফল হয়ে গেছে, আপনার যখন চূড়ান্ত বেকায়দা, তখনই মাত্র আক্রমণ শুরু হয়েছে। যোশী বলেছিল, "পুলিশ যতক্ষণ না তোমাদের বাড়ীঘর জ্বালাতে এবং মেয়েদের ওপর বলাৎকার করতে শুরু করছে ততক্ষণ প্রতিরোধ কোরো না", অর্থাৎ পুলিশ তোমাকে তোমার প্রতিরোধকে খতম করে দেবার আগে প্রতিরোধ কোরো

না। জোশীর সেই কথার সঙ্গে এঁদের নীতির কোন তফাৎ নেই।

[খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা বুঝতে পারছেন না যে, তারা যে-নীতির পক্ষে ওকালতি করছেন সে হচ্ছে বিশ্বাসঘাতকের মত সমস্ত প্রতিরোধকে বানচাল করার নীতি; বুঝছেন না যে, ১৯৪৭এর ফেব্রুয়ারী মাসে জোশী তার কুখ্যাত পল-অর্গ চিঠিতে যেসব বিশ্বাসঘাতকের যুক্তি দিয়েছিল, তারা সেগুলিরই পুনরাবৃত্তি করছেন।

[খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা জঙ্গী প্রতিরোধের জন্য প্রস্তুত করতে অস্বীকার করেছেন এবং জঙ্গী প্রতিরোধের ধারণারই নীতিগত ভাবে বিরোধ করেছেন। তারা খোলাখুলি ভাবেই বলেছেন যে, জেলে এটা সম্ভব নয়, করা উচিতও না। তারা লিখেছেন: "আমরা মনে করি যে, সাধারণ ভাবে বলতে গেলে, জেলে যে দুই ধরণের সংগ্রাম সম্ভব সে হচ্ছে অনশন ধর্মঘট এবং বিক্ষোভ প্রদর্শন। প্রথমটির সম্পর্কে কিছু বলার দরকার নেই। সকলেই স্বীকার করেন যে, সবচেয়ে গুরুত্বপূর্ণ জেল-সংগ্রামের মধ্যে এটি একটি। দ্বিতীয়টা, অর্থাৎ বিক্ষোভ প্রদর্শনের রূপ কি হওয়া উচিত সে সম্পর্কে মতভেদ আছে। সমস্ত রকমের শারিরীক প্রতিরোধকেই আমরা এই পর্যায়ে ফেলি। কারণ, আমাদের লড়াইয়ের ফলে বাইরে যদি সরকারের বিরুদ্ধে এমন প্রতিরোধ জেগে না ওঠে যাতে সরকার তার নীতি—যে নীতির ফলে লড়াই শুরু হয়েছে, যেমন ধরুণ: স্থানান্তরের নীতি—ত্যাগ করতে বাধ্য হন, তাহলে আমরা যে কায়দাই নিই না কেন সরকার আমাদের হার মানাতে পারবে, এবং হার মানাবেই। সুতরাং এইসব লড়াইও আসলে বিক্ষোভ প্রদর্শন।

"এখন কথা হোল—এইসব লড়াই কি ধরণের হওয়া উচিত? বহু যত্নে বিচারের পরও আমরা এই স্থির সিদ্ধান্তে পৌঁছেছি যে, এগুলি আত্মরক্ষামূলক প্রতিরোধের ধরণের হওয়া উচিত—সত্যাগ্রহ ধরণের নামমাত্র প্রতিরোধ নয়, আমাদের সর্বশক্তি নিয়ে আত্মরক্ষামূলক প্রতিরোধ, তার ফলে যদি গুলি চলে তবুও।"

এঁরাও যে আত্মরক্ষামূলক প্রতিরোধের ওকালতি করছেন সে যে কতখানি ভূয়া তা ইতিমধ্যেই প্রকাশ হয়ে গেছে। গুলি চলবে, কিংবা আত্মরক্ষামূলক প্রতিরোধ আর সত্যাগ্রহ এক নয়—এসব কথার কোন দাম দেওয়া যায় না। কোন জঙ্গী প্রতিরোধ করা হবে না এই জিনিষটাই শুধু স্পষ্ট হয়ে উঠেছে।

এই সংস্কারবাদী সিদ্ধান্তে পৌঁছবার জন্যে বিক্ষোভ প্রদর্শন সম্পর্কে ভুল যুক্তি এবং ধারণা আমদানী করা হয়েছে। অনশন ধর্মঘট ছাড়া অন্য সমস্ত রকমের সংগ্রাম জঙ্গী লড়াই পর্যন্ত, বিক্ষোভ প্রদর্শন—(খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যদের এই কথার অর্থ কি? তারা এই কথাই বোঝাতে চান যে, অনশন ধর্মঘটই হোল একমাত্র সংগ্রাম যাতে সাফল্য লাভ করা যায়, আর অন্য সব ধরণের সংগ্রাম নামমাত্র প্রতিবাদের বেশী কিছু নয়। এবং তারা আরও বোঝাতে চান যে, জঙ্গী কায়দায় সংগ্রামের ফলে শেষ পর্যন্ত শত্রুর কাছে হার মানা ছাড়া আর কিছু হয় না। সংগ্রামের উচ্চতর রূপ, যার ফলে পুলিশের সঙ্গে সংঘর্ষ বাধে এবং কঠিন লড়াই শুরু হয়—এই অর্থে বিক্ষোভ প্রদর্শন কথাটাকে এখানে ব্যবহার করা হয় নি। নামমাত্র অথবা শাসনতান্ত্রিক প্রতিবাদের অর্থেই কথাটি এখানে ব্যবহার করা হয়েছে। যুক্তির ধারাটা হোল এই—অনশন ধর্মঘট ছাড়া অন্য কোন সংগ্রামই আসল সংগ্রাম নয়, সুতরাং সেসব ক্ষেত্রে বেশী দমননীতি, জীবন হারান প্রভৃতির ঝুঁকি না নেওয়া উচিত।

অন্য সমস্ত ধরণের সংগ্রামকে বিক্ষোভ প্রদর্শন বলার যুক্তি দেওয়া হয়েছে—"আমাদের কাজের ফলে যদি তেমন প্রতিরোধ সৃষ্টি না হয় তাহলে শেষ পর্যন্ত সরকার আমাদের হার মানাতে পারবে এবং হার মানাবেই···সুতরাং এই সব লড়াইও আসলে বিক্ষোভ প্রদর্শন।" এই যুক্তি থেকেই স্পষ্ট বোঝা যায় যে, অনশন ধর্মঘট ছাড়া আর সব কিছুকে বিক্ষোভ প্রদর্শন বলার পিছনে উপরোক্ত উদ্দেশ্য ছাড়া আর কিছু ছিল না।

তাহলে অনশন ধর্মঘট এবং জঙ্গী ধরণের প্রতিরোধের মধ্যে তফাৎ হোল এইখানে যে, শেষেরটাতে হার হতে বাধ্য, সুতরাং তাতে কখনও সফল হওয়া যায় না, সুতরাং প্রতীক হিসাবে ছাড়া তার কোন মূল্য নেই। এইভাবেই [খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা এগিয়ে এসেছেন অহিংস সংগ্রামের সমর্থক আর হিসাবে, অনশন ধর্মঘটই একমাত্র হাতিয়ার এই যুক্তির সমর্থনে।

সেই সঙ্গে এ কথাও মনে রাখা দরকার যে লড়াইয়ের জঙ্গী কায়দার প্রতি এই মনোভাব হোল খোলাখুলি পরাজিতের মনোভাব। [খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা কোন নতুন কথা বলছেন এমন নয়। সুবিধাবাদের বিরোধী রাজনীতির যুগে বুর্জোয়া ভদ্রলোকেরা, জেলের ভেতরে অথবা বাইরে, সমস্ত ধরণের জবরদস্তিমূলক প্রতিরোধকেই এই দৃষ্টিতে দেখেছে। তারা যুক্তি দিত যে, এর ফলে লড়াই ভেঙ্গে যায়। তাদের এ যুক্তি লড়াইর বিপ্লবী কায়দা বর্জন করা ছাড়া আর কিছু নয়।

আবার, একথাও ঠিক নয় যে জঙ্গী ধরণের লড়াইয়ে কেবল হারই হয়! সংস্কারবাদী মাত্রেই ঠিক এই কথাই প্রমাণ করতে চায়। [খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা সেই সংস্কারবাদীদের সঙ্গেই যোগ দিয়েছেন। এই সম্পর্কে আন্তর্জাতিক গণসংগ্রামের অভিজ্ঞতা বা আমাদের নিজেদের অভিজ্ঞতার কথা উল্লেখ করায় এখানে নিষ্প্রয়োজন। যে সব যুক্তি দেওয়া হয়েছে সেগুলির চরম সংস্কারবাদী রূপ খুলে দেবার পক্ষে ঐসমস্ত অভিজ্ঞতার কথা স্মরণ করিয়ে দেওয়াই যথেষ্ট, যদিও এইসব যুক্তি শুধু জেলের মধ্যেকার সংগ্রাম সম্পর্কেই উপস্থিত করা হয়েছে।

জেলের মধ্যে বিভিন্ন সংগ্রামের অভিজ্ঞতাও প্রমাণ করে যে [খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা সে সম্পর্কে কিছুই বোঝেন না। বাংলার জেল-কমরেডদের জঙ্গী প্রতিরোধ সংগঠিত করতে গিয়ে নিজেদের ব্যারাকে ব্যারিকেড করতে হয়েছিল, ব্যারাকের মধ্য থেকে লড়তে হয়েছিল এবং চারজন কমরেডকে প্রাণ দিতে হয়েছিল। কিন্তু জঙ্গী প্রতিরোধের ফলে বন্দীদের হার হয়নি, বরং সর-

কারের ঘরেই আতংক সৃষ্টি হয়েছিল। সরকারকেই প্রতিশ্রুতি দিতে হয় যে, আগেকার চুক্তির শর্ত পালন করা হবে। ওপর থেকে মনে হয়েছিল যে বন্দীদের বুঝি হার হয়েছে, কেননা পুলিশ তাদের ব্যারাক দখল করতে পেরেছে। কিন্তু প্রকৃত ঘটনা অন্য রকম। সংঘর্ষের ফলে বন্দীদের মনোবল ভাঙা তো দূরের কথা, তাদের রাগ আরও বেড়ে গেল। পুলিশের গুলিচালনার সম্পর্কে অনুসন্ধান করার দাবীতে তারা আর একটা অনশন ধর্মঘট শুরু করলেন। বাংলায় সে সময় এ শ্লোগান কেউ তোলেনি যে, "পুলিশ আমাদের খতম করে দিতে চায়, সুতরাং নিজেদের প্রাণ বাঁচান যাক।"

অনশন ধর্মঘট বহুদিন চলে আর জঙ্গী কায়দায় লড়াই অল্প সময় চলে—[খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা নিজেদের খেয়াতে এই দুটিকে তুলনা করে ভাবছেন যে শেষেরটাতে কেবলমাত্র কোন সম্ভাবনা নেই। একথা কেউ বলেনি যে, জঙ্গী কায়দায় প্রতিরোধ অনশন ধর্মঘটের মত দীর্ঘদিন ধরে চলতে পারে। সেই কারণেই কেউ একথাও বলেনি যে, সমস্ত অবস্থায়ই জঙ্গী কায়দায় প্রতিরোধই একমাত্র হাতিয়ার। এ সম্পর্কে সঠিক দৃষ্টিভঙ্গী হচ্ছে এই: বর্তমান বিপ্লবী যুগে, জনগণের বর্তমান মনোভাব অনুযায়ী সরকারের বিরুদ্ধে লড়াইয়ের বর্তমান পর্যায়ে, অনেক সময় একমাত্র ঐ ধরণের প্রতিরোধই সরকারকে থামাতে পারে, এবং আমাদের শ্রেণীকে জাগাতে পারে, এবং সরকারের স্বরূপ আরও ভালভাবে প্রকাশ করে দিতে পারে। এবং রাজনৈতিক বন্দীদের ওপর সরকারের দমননীতি চালিয়ে যাওয়ার ফল সম্পর্কে সরকারকে সাবধান করে দিতে পারে। ঐ ধরণের প্রতিরোধ সরকারকে পরিষ্কার বুঝিয়ে দেয় যে, রক্তগঙ্গা সৃষ্টি না করে সে তার নীতি চালু করতে পারবে না। এবং জেলের মধ্যে বারবার রক্তপাত করে, নিজের বিরুদ্ধে জনগণের ঘৃণা জাগাবার, নিজের অস্তিত্ব বিপন্ন করার সাহস নেহরু সরকারের নেই। সেই জন্যেই ঐ ধরণের প্রতিরোধ তাকে থামাতে পারে। কলকাতার রাস্তায় ঠিক এই ব্যাপারই দেখা গেছে। একটুও অতিরঞ্জন না করে বলা যায় যে সেখানে শুধু পুলিশের গুলি অগ্রাহ্য করে, বারবার পুলিশের গুলির মোকাবিলা করেই আমরা জিতেছি, এবং সরকারকে পিছু হটতে বাধ্য করেছি। আমাদের কমরেডদের যদি নিজেদের ওপর এবং জনগণের ওপর বিশ্বাস থাকে তাহলে নেহরু সরকার এবং তার জেল কর্তৃপক্ষ কেঁপে উঠবে।

সুতরাং, প্রতিরোধের জঙ্গী কায়দাগুলি হচ্ছে সমীচীন প্রতিরোধ, প্রতিরোধের সেই চরম পর্যায় যাতে নেহরু সরকারের ফ্যাসিস্ট চেহারা প্রকাশ করে দেয়, বাইরের জনগণকে জাগায় এবং ভেতরের লড়াইকে ইস্পাতের মত শক্ত করে তোলে। এর জন্যে পরিকল্পনা করা, একে সংগঠন করা প্রত্যেক বিপ্লবীর অপরিহার্য দায়িত্ব। কোন কোন ক্ষেত্রে এই ধরণের লড়াই করতে হবে সে সম্পর্কে সিদ্ধান্ত করার ব্যাপারে অনেকখানি উদ্যোগ এবং বিচারের ভার অবশ্য স্থানীয় কমিটিগুলির ওপর থাকবে। বাইরে থেকে শুধু বন্দী শিবিরে স্থানান্তর করা অথবা বন্দীদের পরস্পর থেকে পৃথক করে রাখা অথবা এধরণের কোন ক্ষেত্রের কথা বলা যেতে পারে। এছাড়াও যে আরও অনেক ক্ষেত্রে ঐধরণের লড়াই দরকার হবে সেকথা সহজেই বোঝা যায়। কোন ব্যাপার নিয়ে লড়াই হবে, কোন ধরণে লড়াই হবে সে সিদ্ধান্তের ভার সাধারণত স্থানীয় কমিটির ওপরই থাকবে। স্থানান্তর, পৃথক করে রাখা বা ঐধরণের সাধারণ প্রশ্নগুলি বাদ দিলে, কোন বিশেষ ক্ষেত্রে কি ধরণের লড়াই করতে হবে সেকথা সবসময় বলে দেওয়া বাইরের পার্টির পক্ষে সম্ভব হবে না। হঠাৎ এমন কোন সমস্যা দেখা দিতে পারে, এমন কোন ঘটনা ঘটতে পারে যার জন্য তৎক্ষণাৎ ব্যবস্থা অবলম্বন করা দরকার। সেই জন্যেই, যদিও অনেক পরামর্শ নেওয়ার মধ্য দিয়ে পার্টির নির্দেশ পাওয়া যেতে পারে, তবু এমন অনেক সময় হবে যখন স্থানীয়ভাবেই সিদ্ধান্ত নিতে হবে। এবং সেই সিদ্ধান্ত ঠিক যতখানি পরিমাণে [খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যদের নীতির বিপরীত হবে, ঠিক ততখানি পরিমাণেই নির্ভুল হবে।

পি-বি একথা লক্ষ্য না করে পারে না যে, [খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যদের দলিলখানা কোন মামুলি দলিল নয়। এতে অন্যান্য জেলের বীরত্বপূর্ণ লড়াইগুলির ওপর খাটো করার চেষ্টা করা হয়েছে, ঠিক সংস্কারবাদী কায়দায় [খ]'র সংগ্রামকে ছোট করার চেষ্টা হয়েছে এবং এমন একটা নীতি খাড়া করা হয়েছে যার অর্থ হচ্ছে পি-বি'কে বিভিন্ন জেলে কমরেডদের জঙ্গী লড়াইগুলি অস্বীকার করতে বলা।

তারা লিখেছেন: "এতদিন পর্যন্ত আমরা প্রথম ধরণের প্রতিরোধ—যাকে আমরা বলেছি আত্মরক্ষামূলক প্রতিরোধ—তাকেই লড়াইয়ের উপযুক্ত কায়দা বলে মনে করতাম। কিন্তু বিভিন্ন জেলে সংঘর্ষের যে রিপোর্ট আমরা পেয়েছি তার ফলে সমস্ত ব্যাপারটা আমাদের নতুন করে ভেবে দেখতে হয়েছে। নিচে আমাদের কমিটির সুচিন্তিত অভিমত জানাচ্ছি।" এর থেকেই স্পষ্ট বোঝা যায় যে, অন্যান্য জেলে যেসব নীতি অনুসরণ করা হয়েছে তার সঙ্গে তারা একমত নন, সেই নীতির পরিবর্তেই তারা নিজেদের সুবিধাবাদী নীতি পাঠিয়েছেন।

অন্যান্য জেলের প্রতিরোধ দেখে অনুপ্রাণিত না হয়ে, নিজেদের সুবিধাবাদী কার্যকলাপ বিশ্লেষণ না করে, তারা অন্যদের বিচার করতে বসেছেন এবং তাদের সুবিধাবাদী কার্যকলাপ অনুযায়ী না চলার জন্যে অন্যদের দোষ দিয়েছেন।

তার ওপর তারা আবার (ক)'র বীর কমরেডদের বিরুদ্ধে এইভাবে কুৎসা প্রচার করেছেন: "(ক)তে যেরকম পাশবিকভাবে গুলি চালান হয়েছে তার থেকে বোঝা যায় যে, সরকার আমাদের যত বেশীজনকে সম্ভব শারীরিকভাবে খতম করতে অথবা চিরদিনের মত পঙ্গু করতে চায়। এই পরিকল্পনা কার্যকরী করার সুবিধা হয় এমন ধরণের লড়াই করা উচিত নয় বলেই আমরা মনে করি।"

তাহলে, (ক) কমরেডরা শত্রুর পরিকল্পনা কার্যকরী করার সুবিধা করে দেওয়ার দোষে দোষী! সমস্ত জঙ্গী প্রতিরোধকে, যে কেউ মরণ তুচ্ছ করত তাকেই যেমন

কোনো "উস্কানি দেওয়া" বলত, এও ঠিক তেমনি। ভালাগার এবং পুন্নাপ্পার বীরদের সম্পর্কে জোশীর কুৎসার যে পর্যায়ের এও তাই। এই রকম ধরণের কুৎসা প্রচারের জন্য পি-বি এই কমরেডদের তীব্র নিন্দা করছে। এর থেকে প্রমাণ হয় যে বিপ্লবী লড়াইয়ের তাৎপর্য্য পর্য্যন্ত বোঝার ক্ষমতা তাদের নেই, নিজেরা সে রকম লড়াই করা তো দূরের কথা।

তাদের এই বিকৃত ব্যাখ্যা কিন্তু আকস্মিক নয়। জেলের মধ্যে সমস্ত রকমের জঙ্গী লড়াইয়ের যে সমালোচনা তারা করেছেন এটা হচ্ছে আসলে তারই সারমর্ম্ম। এগুলি সব উস্কানি দেওয়া, এগুলির ফলে শুধু শত্রুরই সাহায্য হয় —এই বলে তারা জঙ্গী লড়াইয়ের নিন্দা করতে চান। বিপ্লবী লড়াইয়ের এইভাবে বিরোধ করাটা কিছু নতুন নয়। এই হচ্ছে বিপ্লবী আন্দোলন বানচাল করাকে পার্টিকে রক্ষা করা বলে চালিয়ে দেওয়ার জোশীবাদী কায়দা। এ রকম জঙ্গী লড়াইকে উস্কানি দেওয়া বলে নিন্দা করার জোশী-বাদী তত্ত্ব। তাত সাফাইটা হোল এইখানে: দমন ব্যবস্থা-গুলির ওপর দৃষ্টি নিবদ্ধ রাখা; মিথ্যা করে দেখান যে দমনের ফলে শ্রেণী শত্রুর জোর বাড়ছে, জনগণ হেরে যাচ্ছে; যারা লড়ছে তাদের বীরত্বকে চাপা দেওয়া; যে বেপরোয়া অবস্থা এবং ক্রমবর্দ্ধমান চেতনার ফলে জনগণ লড়ে, মৃত্যুর মুখোমুখি দাঁড়ায় তাকে ঢেকে রাখা; এই ধরণের সংগ্রামের ফলে যে সরকারই—শ্রেণী শত্রুই, সমর্থন হারাচ্ছে এবং জনগণ আর তাদের পার্টিই আরও শক্তিমান, আরও দৃঢ়পণ হচ্ছে। সেই সত্যকে পর্দার আড়াল করে রাখা।

(খ)'র কমিটি যে ১৯৪৯ সালের আগষ্ট মাসে জোশীর এই ডাকাত্মক তত্ত্বকে আবার এনে হাজির করেছেন, তা থেকেই বোঝা যায় যে তারা সংস্কারবাদের পাঁকে কত-খানি ডুবে গেছেন।

জঙ্গী লড়াই এড়িয়ে যাবার জন্যে এই ধরণের সংস্কারবাদ কোন অজুহাত দিতে, কোন যুক্তি ব্যবহার করতে কসুর করে না। পার্টির নিরাপত্তার, কর্মীদের নিরাপত্তার, অত্যধিক ক্ষতি এড়াবার মিথ্যা দোহাই পাড়া হয়। (খ)'র কমিটি সব সময়ই বলে আসছে যে, তারা ভয় পায় নি, তারা সব কিছুর জন্যেই প্রস্তুত, কিন্তু শেষ পর্যন্ত কমিটি জঙ্গী সংগ্রামের বিরোধীতা করেছে। ঐ ধরণের লড়াইয়ের বিরোধীতা করার যুক্তি হিসাবে এক জায়গায় তারা বলেছেন যে, আমাদের পক্ষে ভীষণ ক্ষতি হবে অথচ শত্রুর প্রায় কোন ক্ষতিই হবে না। এইভাবে তারা দেখাতে চেয়েছেন যে তারাও যেন শত্রুর ক্ষতি করতে চান। তারা লড়াইয়ের জন্য কোন সত্যিকারের প্রস্তুতি করতে চান না। এই কাজ করতে অস্বীকার করার পর আবার তারা অনশন যুদ্ধের যুক্তি দেন। এর উদ্দেশ্য, সমস্ত জঙ্গী প্রতিরোধের অবসান করা ছাড়া আর কিছুই নয়।

এই কমরেডরা বারবার বলেন যে, মৃত্যু বা শারিরিক ক্ষতির পরোয়া না করে তারা পার্টির সম্মান রক্ষার জন্য প্রস্তুত। কিন্তু তাদের অনুরোধ, অহিংস প্রতিরোধের সময় যেন তাদের গুলি করে মেরে ফেলা না হয়। তারা লিখেছেন: "আমরা যদি পাথর জোগাড় নাও করি, আমাদের প্রতিরোধ যদি খালি হাতে নিজেদের রক্ষা করা এবং লাঠি কেড়ে নেওয়ার সীমা পার নাও হয়, তবুও ওরা আমাদের গুলি করে মারবে এ সম্ভাবনা খুবই আছে। যারা কলকাতার রাস্তায় মেয়েদের গুলি করে মারে তারা বন্দী-দেরও প্রতিরোধের সূত্রপাতেই গুলি করে মারতে পারে। ...ওরা যখনই সে রকম করবে তখনই আমাদের হাতের কাছে যা পাই তাই তুলে নিতে হবে এবং সাধ্যমত পাল্টা আঘাত করতে হবে। এ হোল এককথা, আর আগে থেকে ইট-পাথর জড়ো করে রাখা, পুলিশ যখন ব্যারাকের দিকে আসছে তখনই সে সব তাদের ওপর ছোড়া এবং এইভাবে গুলি চালনা অনিবার্য্য করে তোলা হোল অন্য কথা।" এই যুক্তির অর্থ হচ্ছে এই যে, আমরা বিনা প্রতিরোধে গুলি খেয়ে মরতে রাজি আছি কিন্তু প্রতিরোধ করে মরতে রাজি নই।

শুধু তাই নয়। অহিংস প্রতিরোধ করতে গিয়ে মৃত্যু-বরণ করে নেবার এই কথাও মিথ্যা। গুলি এবং মৃত্যুর হাত এড়াবার জন্যেই অহিংস প্রতিরোধের প্রস্তাব করা হয়েছে। তারা বলেন যে, জঙ্গী কায়দার ফলে গুলি চালনা অনিবার্য্য হয়ে পড়ে, তাই তারা এর বিরোধী। অহিংস কায়দা নিলে বড় জোর গুলি চালনার সম্ভাবনা থাকে, সুতরাং তারা হয়ত গুলি এড়িয়ে যেতে পারবেন। তারা নিজেরাই এই দুইয়ের মধ্যে এইভাবে তফাৎ করেছেন। শ্রেণী সংগ্রামের প্রয়োজনের দিক থেকে নয়। কোনটিতে তারা আহত কম হবেন সেই দিক থেকেই তারা বিচার করেছেন।

ব্যারিকেড সম্পর্কে ওরাই যে (খ) কমিটির মনকে আচ্ছন্ন করে রেখেছে সেকথা নিচের উদাহরণ থেকেই স্পষ্ট বোঝা যায়: তারা লিখেছেন, "ভীষণ গুলি বৃষ্টির সময় জেলের মধ্যে ব্যারিকেডগুলি আর আত্মরক্ষা বা আক্রমণের হাতি-য়ার থাকে না, মৃত্যু-ফাঁদে পরিণত হয়, কেননা তখন আর পিছনেও হটা যায় না, দরকারমত এক যায়গা থেকে অন্য যায়গায় চলাচল করা যায় না, আশ্রয়ও নেওয়া যায় না।" ব্যারিকেড যুদ্ধ বলতে এই কমরেডরা কি মনে করেন তা বোঝা কঠিন। জেলের ময়দানে বা মাঝখানকার মাঠে ব্যারিকেড খাড়া করতে কোন কমরেডদের কেউ বলেনি। বাংলায় কমরেডরা তাদের ব্যারাকের সামনে, এবং বোধ হয় তাদের ইয়ার্ডেও, ব্যারিকেড করেছিলেন। তারা ত এ অভিযোগ করেন নি যে, ব্যারিকেডগুলি সব মৃত্যু-ফাঁদ হয়ে দাঁড়িয়েছিল, এবং স্বভাবতই তারা সব চেয়ে সুবিধাজনক স্থান বেছে নিয়েছিলেন।

কিন্তু আসল কথা হচ্ছে, এই কমরেডরা চান যে পার্টি অনশন ধর্মঘটকে লড়াইয়ের উপায় হিসাবে এবং প্রতীক বিক্ষোভ প্রদর্শনকে সাহায্যকারী উপায় হিসাবে অনুমোদন করুক। তারা লিখেছেন, "সরকারের স্বরূপ প্রকাশ করে দেওয়া, তার বিরুদ্ধে জনগণকে জাগিয়ে তোলা, আমাদের সাহস এবং দৃঢ়তার পরিচয় দেওয়া এবং পার্টির জন্য সম্মান ও প্রশংসা অর্জন করা—আমাদের এই সব উদ্দেশ্য, আমাদের মতে, অনশন ধর্মঘট এবং আমাদের প্রস্তাবিত কায়দায় বিক্ষোভ প্রদর্শন মারফৎই—সফল হতে পারে। আমাদের শক্তি এবং জেলের মধ্যেকার অবস্থার সঙ্গে লড়াইয়ের এই

ধরণই খাপ খায়।" এইভাবে অনশন ধর্মঘটকেই হাতিয়ার বলে জাহির করা হয়েছে—সমস্ত জঙ্গী প্রতিরোধকে নাকচ করা হয়েছে। এই নেতারা কি ধরনের অনশন ধর্মঘট চালিয়েছিলেন তাও আমরা জানি। সেই সঙ্গে একথাও বলে রাখা দরকার যে, একমাত্র অনশন ধর্মঘট এবং প্রতীক বিক্ষোভ প্রদর্শনই আমাদের শক্তি এবং জেলের মধ্যেকার অবস্থার সঙ্গে খাপ খায় একথা সম্পূর্ণ মিথ্যা। আমাদের যদি তাকে ব্যবহার করার মত সাহস থাকে তাহলে লড়াইয়ের সব চেয়ে জঙ্গী কায়দাও জেলে আমাদের শক্তির সংগে খাপ খায়। কেবল মাত্র জঙ্গী কায়দাই জেলের মধ্যে আমাদের শক্তির সংগে খাপ খায়, এমন কথা কেউ বলেনি। বাংলার কমরেডরা পুলিশের সংগে জঙ্গী লড়াই চালিয়েছিলেন, আবার পরে তারা পুলিশের গুলিচালনা সম্পর্কে নিরপেক্ষ তদন্ত কমিটির দাবী আদায়ের জন্য অনশন ধর্মঘট সুরু করেন।

যা করে হোক লড়াইয়ের এমন কায়দা বের করো' যাতে কিছুতেই জীবন হারাতে অথবা পঙ্গু হতে হবে না—এই হোল (খ)'র নীতির সারমর্ম। তাদের মতে তাদের শক্তি এবং জেলের মধ্যেকার অবস্থার সংগে অহিংস অনশন ধর্মঘটই খাপ খায়। কিন্তু এই ধর্মঘটের সময়ও তারা পঙ্গু হতে অথবা মরতে প্রস্তুত ছিলেন না, আতংকে তারা ধর্মঘট উঠিয়ে নেন।

আর যখন জঙ্গী কায়দার কথা উঠেছে, তখন গুলিচালনা অনিবার্য্য হবে, এসব হচ্ছে মৃত্যু-ফাঁদ, এতে কর্ম্মী হারাতে হয় বলে তারা তাকেও নাকচ করে দিচ্ছেন।

স্পষ্টই বোঝা যায় যে, যদিও তারা বারবার বলছেন পার্টির জন্য তারা মরতে প্রস্তুত আছেন, কিন্তু তাদের আসল দাবী হোল—অহিংস বা সশস্ত্র লড়াই কোনটাতেই যেন মরতে বা আহত হতে না হয়। তাদের যুক্তির ধারা সুবিধাবাদী এবং প্রতি-বিপ্লবী, এর অর্থ হচ্ছে সমস্ত প্রতিরোধ বানচাল করা। পি-বি তাদের এইসব যুক্তিকে অগ্রাহ্য করছে।

[খ]'র কমিটি চায় যে বর্তমানে জেলে সংগ্রামের রূপ কি হবে তা পি-বি ঠিক করে দিক। লক্ষ্য করা দরকার যে, একমাত্র [খ] থেকেই এই দাবী উঠেছে। অধিকাংশ জেলে কমরেডরা পি-বি'র কাছে বিশেষভাবে জিজ্ঞাসা না করেই পার্টির নীতি সঠিকভাবে বুঝেছেন, এবং নিজেরাই বহুবার জঙ্গী প্রতিরোধ করেছেন। বাংলা, কাণপুর, ভেলোর, কুড্ডালোর এবং [ঝ] জেলে কমরেডরা যে প্রতিরোধ করেছেন তা ঠিকই হয়েছে।

[খ]'র দলিলটার সমালোচনায় যা বলা হয়েছে তার থেকেই পি-বি'র মূলনীতি সন্দেহাতীতভাবে পরিষ্কার হওয়া উচিত। তাছাড়াও পি-বি বলছে যে, অবস্থা আজ এমনই যে সবচেয়ে জঙ্গী ধরনের লড়াইও, অনেক সময় দরকার এবং সঙ্গত। অনেক সময় এগুলিই হয় শত্রুকে পিছু হটাবার এবং তার আক্রমণকে পরাস্ত করার একমাত্র হাতিয়ার। যে কোন লোক এগুলিতে নীতির দিক থেকে অগ্রাহ্য করে, অথবা নীতিগতভাবে সমর্থন করেও কার্যত বর্জন করে তার জন্যে পার্টিতে কোন স্থান নেই।

সেই সংগে একথাও স্পষ্ট যে, বন্দীদের প্রতিরোধের চূড়ান্ত পর্যায়—জংগী প্রতিরোধ রোজ করা যায় না। সুতরাং, অনশন ধর্মঘট প্রভৃতি লড়াইয়ের অন্যান্য কায়দাও বাতিল হয়ে যায় নি, এখনও তার দাম আছে। জংগী প্রতিরোধকে বর্জন করে শুধু অনশন ধর্মঘটকে আঁকড়ে থাকার এই সুবিধাবাদী ঝোঁকের বিরুদ্ধে সচেতন লড়াই চালান দরকার।

(খ) কমরেডরা যদি নিজেদের ধারণা সম্পূর্ণ পাল্টে ফেলতে পারেন তাহলে দেখবে যে, অবস্থা অনুযায়ী লড়াইয়ের কায়দা ঠিক করতে কোন অসুবিধাই হবে না। তারা নিজেরাই এই সিদ্ধান্তে পৌঁছবেন যে, বন্দীশিবিরে স্থানান্তর, পৃথক করার ব্যবস্থা বা ঐ ধরনের ব্যাপারে জংগী কায়দা দরকার এবং সংগত।

(খ) কমরেডদের পি-বি আরও এই কথাটা ভাল করে বুঝিয়ে দিতে চায় যে, অনশন ধর্মঘটের সময় তাদের কাপুরুষের মত ব্যবহারের ফলে শত্রুর সাহস বেড়ে গেছে, তার দৃঢ়বিশ্বাস হয়েছে যে মৃত্যু এবং দমননীতি দিয়ে কমিউনিস্টদের জব্দ করা যায়। (খ) জেলে বর্বর গুলিচালনার ফলে (খ) কমিটির সদস্যদের শুধু এই কথাই মনে হয়েছে যে তাহলে আমরা নিশ্চয়ই লড়াইয়ের ভুল কায়দা নিয়েছিলাম। এই ঘটনা থেকেই বোঝা যায় যে দমননীতিতে তাদের মনোবল ভেংগে গেছে, তারা আতংকিত হয়ে উঠেছেন। এর থেকে প্রমাণ হয় যে, (খ) কমিটি যদি নিজের সংস্কারবাদী দৃষ্টিভংগী সম্পূর্ণ বর্জন না করে তাহলে (ঙ)'র উদ্দেশ্য—বন্দীদের ভয় পাইয়ে দেবার চেষ্টা—সফল হবে।

অনশন ধর্মঘট কাপুরুষের মত পরিচালনা করা এবং সংস্কারবাদী দৃষ্টিভংগী টিকে থাকার ফলে (ভ)'র রাজনৈতিক বন্দীদের সংগ্রাম ইতিমধ্যেই বিপন্ন হয়ে পড়েছে। এরপর আবার যখন প্রতিরোধ সংগঠন করা হবে তখন তার বিরুদ্ধে নৃশংস হিংসা প্রয়োগ করা হবে, কারণ শত্রুর ভরসা হয়েছে যে বন্দীদের বিরুদ্ধে দ্রুত বিজয় লাভ করা যাবে। (ব)'র মত নির্মম গুলিচালনা আবার হতে পারে। দ্রুত বিজয় লাভের আশা থাকলে উন্মত্ত বুর্জোয়া শ্রেণী যেকোন কাজ করতে পারে। তা সত্ত্বেও দমননীতিকে পরাস্ত করা যায়, যদি নেতারা দৃঢ়তার সংগে লড়াইয়ে নামেন এবং তার আত্মসমর্পণকারী নীতির ফলে যে অসুবিধার সৃষ্টি করেছে তা দূর করতে পারেন। পি-বি কোন রঙীন আশা দেখাতে চায় না। কিন্তু পি-বি এই বলে সতর্ক করে দিতে চায় যে মনোবল যেন নষ্ট না হয় এবং দমননীতি ও মৃত্যুকে যেন শত্রুর জয় বলে বোঝা না হয়।

(খ)'র এবং অন্যান্য নেতাদের পি-বি এই বলে সতর্ক করে দিতে চায় যে, তাঁরা যেভাবে অনশন ধর্মঘট পরিচালনা করেছেন তার ফলে সারা ভারতে রাজনৈতিক বন্দীদের সংগ্রামের ক্ষতি হয়েছে। শত্রুর সাহস বেড়েছে এবং তার মনে এই বিশ্বাস সৃষ্টি করেছে যে আরও দমননীতি চালালে কমিউনিস্টদের আত্মসমর্পণ করতে বাধ্য করা যাবে। শত্রু সর্বদাই আমাদের দুর্বল স্থান খুঁজছে। আমাদের মধ্যেকার প্রতিটি দুর্বলতার সে সুযোগ নিতে চায়। আমাদের বন্দী

কমরেডদের বীরত্বপূর্ণ এবং বারবার প্রতিরোধের ফলে এদেশে এবং বিদেশে সরকারের বদনাম হয়েছে। তাই সে সর্বপ্রকারে রাজনৈতিক বন্দীদের কণ্ঠরোধ করতে চায়।

জেলের মধ্যে এমন ব্যাপকভাবে আগুন জ্বলে উঠবে, এত দীর্ঘস্থায়ী প্রতিরোধ চলবে তা সরকার আশা করে নি। সরকারের বিরুদ্ধে এই নতুন ফ্রন্ট সৃষ্টি হওয়ায় তারা আতংকিত হয়ে ওঠে। এই ফ্রন্ট সংক্রান্ত ব্যাপারে নিজের দুর্বলতার কথা সরকার জানে। বুর্জোয়া কাগজগুলি অবশ্য রাজনৈতিক বন্দীদের সম্পর্কে সমস্ত খবর চেপে যায়। কিন্তু তা সত্ত্বেও বন্দীদের বিরুদ্ধে দমননীতি প্রয়োগের খবর প্রকাশ হয়ে যায় এবং সরকারের বদনাম হয়। অনশন ধর্মঘট সম্পর্কে বিবৃতিগুলিতে সরকার খোলাখুলি মিথ্যার আশ্রয় নেয়। এ থেকেই বোঝা যায় যে সে মধ্যবিত্ত জনমতকে পর্যন্ত ভয় করে, কেননা এই জনমত রাজনৈতিক বন্দীদের প্রতি খারাপ ব্যবহার করা হচ্ছে শুনলে অতি সহজেই উত্তেজিত হয়। সরকার একদিকে রাজনৈতিক বন্দীদের কিছু কিছু সুবিধা দেয় আর অপরদিকে জাহির করে বেড়ায় যে কোন সুবিধাই দেওয়া হয় নি। এই ঘটনার থেকেই বোঝা যায় যে তারা হার স্বীকার করতে ভয় পায়, কারণ তার ফলে অন্য জায়গায় লড়াই স্নুরু হয়ে যেতে পারে।

রাজনৈতিক বন্দীদের সংগ্রাম নেহরু সরকারের বিরুদ্ধে সংগ্রামের একটা গুরুত্বপূর্ণ অংশ। সরকার এই ফ্রন্টে খুব দুর্বল। এইরকম অবস্থায় আমাদের নিজেদের মধ্যে দুর্বলতা থাকা, বিশ্বাসের অভাব হওয়া অথবা সংস্কারবাদ টিঁকে থাকাটা জঘন্য অপরাধ, ধর্মঘট ভাঙ্গা এবং শত্রুপক্ষে যোগ দেওয়ার সমান।

(অ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যদের পাঠান এক সার্কুলারের উত্তরে (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা একটি চিঠি লেখেন। [ছ] এই চিঠি সমর্থন করে। ঐ চিঠিখানিতে তারা সংস্কারবাদের সবচেয়ে নিচে নেমে গেছেন।

দ্বিতীয় শ্রেণীর রাজবন্দীদের সম্পূর্ণভাবে পৃথক করার জন্যে সরকার তাদের [ক] পাঠাচ্ছিল এবং তাদের প্রদেশের বাইরে বন্দীশিবিরে পাঠাবার জন্যে ব্যবস্থা করছিল। বাইরে থেকে পাঠান এই সার্কুলার হইতে এইদিকে জেল কমরেডদের দৃষ্টি আকর্ষণ করা হয়।

সার্কুলারে সমস্ত রাজবন্দীদের এই স্থানান্তর প্রতিরোধ করতে এবং পশ্চিম বাংলা, তেলেঙ্গানা ও সালেমের কমরেডদের গৌরবময় দৃষ্টান্ত অনুসরণ করার ডাক দেওয়া হয়। যেকোন অন্য কৌশল করতে পারেন তাই নিয়ে লড়াই করার এবং ঐধরণের লড়াইয়ের জন্যে প্রস্তুত হবার জন্য সার্কুলারে তাদের বলা হয়।

সার্কুলারটাতে আসল কথাকে খুব নরম করেই বলা হয়েছে। এতে জেল কমরেডদের অত্যন্ত সহজবোধ্য কাজ করতে বলা হয়েছে, অন্যান্য যায়গায় কমরেডরা যেভাবে প্রতিরোধ করেছেন সেইভাবে প্রতিরোধ করতে বলা হয়েছে। এতে বিশেষ করে বলা হয়েছে যে, সরকারী চালের প্রধান লক্ষ্য বিশেষ করে শ্রমিক এবং কৃষক বন্দীরা, এ হচ্ছে শ্রেণীগত ব্যবস্থা। যার সমস্ত শ্রেণীচেতনা এবং শ্রেণী-গর্ব যায় সম্পূর্ণ নষ্ট হয়ে যায় নি এমন যেকোন লোক এই ব্যাপারে প্রাণপণ লড়াই চালাবার প্রয়োজনীয়তা বুঝতে পারবে। কঠিন লড়াইয়ের ভয়ে নীল হয়ে যায় নি এমন কোন লোক পশ্চিম বাংলার কমরেডদের দৃষ্টান্ত অনুসরণ করতে অস্বীকার করবে না অথবা নির্দিষ্ট উপায়ে লড়াইয়ের জন্য প্রস্তুত হতে অস্বীকার করবে না।

নীতিগত ভাবে এই সার্কুলার এবং নির্দেশের তীব্র বিরোধীতা করে [খ]'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা এবং [ছ]'র সদস্যরা নিজেদের সারা গায়ে কালি মেখেছেন এবং এই কথাই প্রকাশ করে দিয়েছেন যে, তারা শুধু মতবাদের দিক থেকেই বিভ্রান্ত নন, জেলের মধ্যে কোন কার্যকরী প্রতিরোধ দেবার সম্ভাবনায়ও তারা ভয় পান।

এই চিঠিতে তারা আগেকার চিঠির সমস্ত কটি লজ্জাজনক যুক্তিরই পুনরুক্তি করেছেন এবং তার সংগে যোগ দিয়েছেন কোন সতীত্বকারের নিম্নবীর পক্ষে অশোভন আরও কয়েকটা ভুয়া এবং সুবিধাবাদী যুক্তি।

সামান্যতম লজ্জাও বিসর্জন দিয়ে তাঁরা (ঝ) সম্পর্কে কুৎসার পুনরুক্তি করেছেন এবং এমন ধৃষ্টতা যে (ঝ)-এর পরের ঘটনাবলী তাদের কথাকেই সমর্থন করে বলে দাবী করেছেন। পৃথক করার নীতির বিরুদ্ধে এবং শ্রমিক শ্রেণীর বিরুদ্ধে প্রকাশ্য বিভেদ নীতির বিরুদ্ধে সমস্ত সংগ্রাম বন্ধ করার দাবী করে, এবং (ঝ)'র সংগ্রাম সম্পর্কে কুৎসা রটনা করে এই মধ্যবিত্ত নেতারা লিখেছেন, "আসল যে কারণে (ঝ)তে সংঘর্ষ হোল—অর্থাৎ (ঞ)'র পরিকল্পনা—সেটা মোটেই জনসাধারণের নজরে এলো না। তার কারণ সংঘর্ষটা হয়েছিল (খ)তে স্থানান্তরের ব্যাপার নিয়ে। অন্যান্য জেলেও ঐ একই ব্যাপার—অর্থাৎ প্রদেশের মধ্যে অন্য জেলে স্থানান্তর নিয়ে ঐ ধরণের সংঘর্ষের ফলও এর চেয়ে ভাল কিছু হবে না, (ঞ)'র পরিকল্পনাকে সামনে তুলে ধরার কোন সাহায্য হবে না। বহু মূল্যবান জীবন নষ্ট হবে, বহু কমরেড সারা জীবনের মত পঙ্গু এবং কর্মক্ষমতাহীন হয়ে যাবে—সরকারও ঠিক এই জিনিষটাই চায় সেও চায় যে আসল প্রশ্নটা লোকচক্ষুর আড়ালে থেকে যাক। কমিউনিস্টরা যে মৃত্যুর পরোয়া করে না শুধু সে কথা প্রমাণ করার প্রশ্ন এটা নয়। বিশেষ করে (ঞ)র ব্যাপার এবং অন্য প্রদেশে স্থানান্তর করা সম্পর্কে জনসাধারণের দৃষ্টি আকর্ষণ করার প্রশ্ন এখানে রয়েছে। চিঠিতে যে ভাবে কাজ করার কথা বলা হয়েছে তাতে এর কোন সাহায্য হবে না।"

আবার সেই মৃত্যু এবং পঙ্গু হবার ভয়। অবশ্য এবার সেই ভয়কে ঢাকার জন্যে ব্যাপারটাকে জনসাধারণের সামনে তুলে ধরার কথা বারবার উল্লেখ করা হয়েছে।

দ্বিতীয়ত, (ঝ)তে শুধু মূল্যবান জীবনই নষ্ট হয়েছে একথা নির্জলা মিথ্যা। স্পষ্টই বোঝা যায় যে (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা (ঝ)'র বীরত্বে অনুপ্রাণিত হওয়া দূরের কথা বরংচ ভয় পেয়ে গেছেন। কিন্তু জেলের বাইরে সমস্ত পার্টি সভ্য, পার্টির কাছের যত লোক (ঝ)'র

বীরত্বপূর্ণ কাহিনী শুনেছেন, এবং খবরের কাগজগুলি চেপে যাওয়া সত্ত্বেও যেসব লোক সে কাহিনী জানতে পেরেছেন, তারা সবাই বিক্ষুব্ধ হয়ে উঠেছেন এবং পার্টির সভ্য ও সমর্থকদের মধ্যে নেহরু সরকারের বিরুদ্ধে লড়াই করার সংকল্প আরও ইস্পাতের মত শক্ত হয়েছে।

(ক)'র সংগ্রামের ফলে নেহরু সরকারের বর্বরতাও আরও প্রকাশ হয়ে গেছে এবং সরকারকে বিব্রত করে তুলেছে। বাংলায় জেলে এবং রাস্তায় জালিয়ানওয়ালাবাগ ঠিক এমনই হয়েছিল। পার্টির যে সভ্যগণকে অনশন ধর্মঘটের সময় (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা জলের দরে বিকিয়ে দিয়েছিলেন (ক)'র কমরেডরা শহীদ হয়ে তাকে পুনরুদ্ধার করেছেন।

(ক)'র সংগ্রাম জনগণের সামনে (ঞ)তে স্থানান্তরের চেয়ে অনেক বড় একটা জিনিষ তুলে ধরেছে—সে হচ্ছে সরকারের বর্বরতা এবং ফ্যাসিস্ট চরিত্র।

(ক)র সমর্থন নিয়ে (খ)র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা কি বোঝাবার চেষ্টা করছেন? পৃথক করার নীতির বিরুদ্ধে, প্রদেশের বাইরে পাঠাবার প্রাথমিক ব্যবস্থা হিসাবে প্রথম এবং দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীদের ভিন্ন ভিন্ন জেলে জড়ো করার বিরুদ্ধে সমস্ত সংগ্রাম বন্ধ করে দেওয়া হোক—এই হোল তাদের উদ্দেশ্য। সজ্ঞানে বিনা দ্বিধায় তারা নিজেদের দাবীগুলিকে এইভাবে উপস্থিত করেছেন: "জনসাধারণ কোন সমস্যা সম্পর্কে সচেতন এবং বন্দীরা কি চায় না চায় সেসব বিচার না করেই, সরকার (ঞ)র পরিকল্পনা করছে এই অজুহাতে (ক) থেকে (খ)তে স্থানান্তরের সমস্ত চেষ্টার প্রতিরোধ করতে নির্দেশ দেওয়া হয়েছে।" (খ)র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা যদি মনে করেন যে, (ঞ)তে স্থানান্তর করার কথাটা বাইরে পার্টির দ্বারা প্রচারিত একটা গুজব মাত্র, সরকারের সেরকম কোন ইচ্ছা নেই বলে যদি তাদের নির্ভরযোগ্য খবর থাকে, তাহলে সে কথা স্পষ্ট করে বলা উচিত। তাছাড়া তাদের আরও প্রমাণ করা দরকার যে দ্বিতীয় শ্রেণীর কয়েদীদের পৃথক করার কোন উদ্দেশ্য সরকারের নেই। এ যদি তারা প্রমাণ করতে পারেন তাহলে স্থানান্তরের প্রশ্নটাকে প্রত্যেক (ঘ)র বিচার অথবা প্রত্যেক লোকের পছন্দ অনুযায়ী বিচার করা যেতে পারে।

কিন্তু তার আগে স্থানান্তরের বিরুদ্ধে লড়াই করতে অস্বীকার করার অর্থ পৃথক করার বিরুদ্ধে লড়তে অস্বীকার করা, প্রদেশের বাইরে স্থানান্তরের প্রথম ধাপের বিরুদ্ধে লড়তে অস্বীকার করা। বাংলা দেশে [illegible] সরকার রাজবন্দীদের বক্সা ক্যাম্পে পাঠাবার জন্যে গোপনে [illegible] হচ্ছে। (অ) সরকারও নিশ্চয়ই এই ধরনের কোন ব্যবস্থা করছে—কারণ এটা সর্বভারতীয় নীতি।

এই অবস্থায় পৃথক করার জন্যে—স্থানান্তরের বিরুদ্ধে অথবা প্রাথমিক স্থানান্তরের বিরুদ্ধে জঙ্গী কায়দায় লড়াই না করার অর্থ প্রকাশ্য বিশ্বাসঘাতকতা ছাড়া আর কিছুই নয়। এবং (খ)র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা তার পক্ষেই ওকালতি করেছেন। সংগ্রাম সংগঠন [illegible] হয়ে পড়ে এসে সময় পর্যন্ত সংগ্রাম স্থগিত রাখ—এই হচ্ছে তাদের কৌশল।

অবশ্য এক্ষেত্রে ঠিক যোগীদের মত, লড়াই থামাবার অজুহাত দেওয়া হয়েছে এই বলে যে সংগ্রামের বিষয়টা লোকের কাছে পরিষ্কার করে দেওয়া দরকার। এই কমরেডদের একটা কথা মনে রাখা দরকার—জনসাধারণ বোকা নয়, পৃথক করার বিরুদ্ধে কিংবা প্রদেশের বাইরে স্থানান্তর করার বিরুদ্ধে লড়াইয়ের অর্থ তারা সহজেই বুঝতে পারে। (ক)র কমরেডরা শুধু (খ)তে স্থানান্তর করার ব্যাপার নিয়ে লড়লেও লোকে তা বুঝত, কারণ অনশন ধর্মঘটের একটা দাবীই ছিল যে, রাজনৈতিক বন্দীদের তাদের জেলার মধ্যে রাখতে হবে।

সংগ্রাম লড়াই ছেড়ে পালাবার চেষ্টায় (খ)র কমরেডরা হাস্যকর পর্যায়ে গিয়ে পৌঁছেছেন। তারা বলছেন যে, জংগী প্রতিরোধের ফলে যদি সরকার অন্য প্রদেশে পাঠাবার ব্যবস্থা প্রত্যাহার করতে বাধ্য হয়, তাহলেও যথেষ্ট হবে না। "আমরা বিশেষ জোর দিয়ে বলতে চাই যে, পরপর কয়েকটা জেল সংঘর্ষের পর সরকার যদি (ঞ)তে স্থানান্তরের চেষ্টা ছেড়ে দেয়, তাহলেও আমাদের উদ্দেশ্য সফল হবে না। আমাদের উদ্দেশ্য শুধু অভিপ্রায়টাকে পরাস্ত করা নয়। সরকার যে পরাস্ত হয়েছে সেকথা জনসাধারণকে দেখান এবং বোঝানটাও আমাদের লক্ষ্য। সরকার যেন পরে এই যুক্তি দেওয়ার সুযোগ না পায় যে, (অ)র বন্দীদের (ঞ)তে স্থানান্তর করার কোন ইচ্ছাই তার কখনও ছিল না।"

এই যুক্তি অনুসরণ করে (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা তো একথাও বলতে পারতেন যে, প্রথমে নিজেদের (ঞ)তে স্থানান্তরিত হতে দিয়ে তারপর লড়াই শুরু করাটাই জনসাধারণের কাছে সরকারের হার প্রমাণ করার শ্রেষ্ঠ উপায়। তাঁদের বর্তমান যুক্তির চেয়ে এযুক্তি কিছু বেশী হাস্যকর নয়। (ঞ)তে স্থানান্তর করার প্রাথমিক ব্যবস্থা হিসাবে সরকার যখন বন্দীদের একটি বা দুটি জেলে জড়ো করছে জেলসমূহ প্রতিরোধ শুরু করলে, সরকারী পরিকল্পনাকে পরাস্ত করেও আমাদের উদ্দেশ্য সফল হবে না: শুধু বন্দীদের প্রতিরোধের উদ্দীপনার জোরে, সংঘর্ষ এবং প্রাণদানের জোরে সেই প্রতিরোধ যদি সরকারকে তার পরিকল্পনা বর্জন করতে বাধ্য করে তাহলেও নয়। কেন? কারণ, নিজের পরিকল্পনা বর্জন করতে বাধ্য হওয়ার পর সরকার হয়ত এক বিবৃতি দিয়ে বলবে যে, কোন বন্দীকে (ঞ)তে স্থানান্তর করার কোন ইচ্ছাই তার ছিল না। তাহলে জনসাধারণ আর বুঝবে না যে সরকারের হার হয়েছে। এই হোল এই কমরেডদের যুক্তি। (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা যা মনে করেন জনসাধারণ কিন্তু তার চেয়ে অনেক বেশী বুদ্ধিমান, রাজনৈতিক ভাবে অনেক বেশী সচেতন রক্তাক্ত সংঘর্ষের পর সরকারকে বিবৃতি প্রকাশ করতে দেখলে জনসাধারণ নিজের মত পরে বুঝে নেবে এবং সরকারী বিবৃতিকে মিথ্যা বলে ধরে নেবে। কারণ জনসাধারণ [illegible] আনন্দ পাওয়ার জন্যে [illegible] নয়। [illegible] পার্টিকে তারা সত্যিকারের বিপ্লবী পার্টি বলে এবং তার সভ্যদের সত্যিকারের বিপ্লবী বলে মনে করে। জনসাধারণ ঠিক উল্টো সিদ্ধান্তই করবে।

তারা বলবেন যে সরকার থেকে নিজে এমন ভয় দেখাবার চেষ্টা করবে। এই ধরনের সরকার কোনোর অতিরঞ্জিত এই কথাই বলে। (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা রাজনৈতিক শিশু নন, তাদের একথা বোঝা উচিত। কিংবা হয়ত জনসাধারণ বলতে তারা বোঝান বুর্জোয়া শ্রেণীর প্রভাবাধীন অনুচরদের এবং তাদের আশেপাশের লোকজনকে। তারা ভুলে গেছেন যে জনসাধারণের মধ্যে শ্রমিক, কৃষক এবং মধ্যবিত্তদের সাচ্চা অংশও আছে। একটার পর একটা লড়াইয়ের খবর লুকিয়ে রাখা যায় না। এবং সে খবর শুনে এরা সবাই নিশ্চয়ই চঞ্চল হয়ে উঠবে, সরকারী বিবৃতির বাগাড়ম্বর পেছনকার আসল তথ্য বুঝতে পারবে।

জনসাধারণ এবং তাদের চেতনার অভাবের ঘাড়ে দোষ চাপিয়ে নিজের সংস্কারবাদ এবং কাপুরুষতা ঢাকা—এ এক পুরাণ খোলীপন্থী ধারণা। (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা তারই পুনরুক্তি করেছেন। সরকারের পরিকল্পনা পরাস্ত হলেও তাতে খুব লাভ হবে না—তাদের এই হাস্যকর উক্তি কিন্তু আকস্মিক নয়। তারা চান যে পার্টি সমস্ত ধরনের জঙ্গী লড়াই বর্জন করুক। সমস্ত ধরনের জঙ্গী লড়াইয়ের বিরুদ্ধে সংস্কারবাদী প্রচারের এটা একটা অংশ। পৃথিবীর সর্বত্রই জঙ্গী কায়দা সম্পর্কে বিশ্বাস নষ্ট করার চেষ্টায় সংস্কারবাদীরা একাধিক পথ গ্রহণ করে। তারা বলে যে প্রতিরোধের জঙ্গী কায়দা গ্রহণ করলে পরাজয় সুনিশ্চিত; এ কথায় কোন ফল না হলে তারা প্রচার করে যে, এতে ফল হতে পারে কিন্তু অযথা অতিরিক্ত ক্ষতি স্বীকার করতে হবে; অহিংস সংগ্রামেও সেই একই ফল পাওয়া যায়; এই প্রচারেও যদি কাজ না হয় তখন তারা বলে যে, জঙ্গী কায়দায় অযথা কাজে বিশেষ কোন লাভ নেই। (খ)র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা নিজেদের সুবিধা অনুযায়ী এই সব কটি যুক্তিই ব্যবহার করেছেন। তাদের একমাত্র উদ্দেশ্য হচ্ছে জঙ্গী প্রতিরোধ সম্পর্কে আস্থা নষ্ট করা।

বাইরে থেকে পাঠান নির্দেশের বদলে তারা নিজেরা কোন পরিকল্পনা চালু করতে চান? প্রথম: পৃথক করার জন্য—স্থানান্তরের বিরোধিতা করো না—এই নিরীহ কথাটির মধ্যে তারা প্রদেশের মধ্যে স্থানান্তরকেও ধরেছেন এবং দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীদের স্থানান্তর যে অধিকাংশ ক্ষেত্রে এই পৃথক করার জন্যই করা হয় সেকথা চেপে গেছেন। দ্বিতীয়তঃ পৃথক করা সম্পূর্ণ হয়ে গেলে এবং প্রদেশের বাইরে অথবা (ট)র মত কোন জায়গায় স্থানান্তরের হুকুম এলে তবে প্রতিরোধ করা। তৃতীয়তঃ এবং তারপরও যে প্রতিরোধ করবে সে হচ্ছে নিষ্ক্রিয় প্রতিরোধ, "আত্মরক্ষামূলক প্রতিরোধ" কিন্তু কোনক্রমেই জঙ্গী প্রতিরোধ নয়। এইভাবে নীতিগত ভাবেই জঙ্গী প্রতিরোধকে নাকচ করে দেওয়া হয়েছে।

এই কৌশলের অর্থ যে শত্রুকে সহজেই জিততে দেওয়া এবং সচেতনভাবে সমস্ত প্রতিরোধ বানচাল করা ছাড়া আর কিছুই নয় সেকথা সহজেই বোঝা যায়, সেবিষয়ে সন্দেহ থাকার কোন কারণ নেই।

অন্যদের চোখে ধুলো দেবার জন্য (খ)র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা নিজেদের বক্তব্যে মার্কসবাদী বুলি দিয়ে সাজিয়েছেন। অথচ তারা যে ধরনের 'মার্কসবাদ' প্রচার করেন তার সঙ্গে মার্কসবাদ-লেনিনবাদের কোনই সম্পর্ক নেই।

নিজেদের সুবিধাবাদকে সমর্থন করার জন্য তারা বাইরের পার্টিকে বিদ্রূপ করেন, সে জনগণকে জমায়েৎ করতে পারে না বলে। তারা একবারও ভেবেও দেখেন নি যে, তারা নিজেরা যে রোগে ভুগছেন বাইরেও হয়ত সেই কারণেই এই অবস্থা।

তারা এও বোঝেন না যে, অন্যরাও হয়ত সংগঠন এবং সংগ্রামের বিপ্লবী নীতি এবং কায়দা আয়ত্ত করতে পারে নি এবং সেইজন্যেই কঠিন বে-আইনী অবস্থার বাধা ভেংগে এগোতে পারছে না।

বাইরে থেকে পাঠান চিঠিখানির অর্থ দাঁড়ায় যে বাইরের আন্দোলনের অবস্থার সংগে আন্দোলনের কোন সম্পর্ক নেই—এই অভিযোগ তারা করেছেন। কিন্তু তাদের সে অভিযোগ ভুল। পাকা সংস্কারবাদীদের মত তারা বর্তমান বিপ্লবী যুগের কথা, সারা ভারতের ঘটনাবলীর কথা, তাদেরই কমরেডরা অন্যান্য প্রদেশে যেসব লড়াই চালাচ্ছেন তার কথা ভুলে গেছেন। সেই জন্যেই তারা ঐ অভিযোগ এনেছেন। (অ) শহরে কি ঘটছে বা না ঘটছে তাকেই এই কমরেডরা আন্দোলনের অবস্থা বলে মনে করেন। তেলেঙ্গানার সংগ্রামের কথা, অন্ধ্র, কেরালা, তামিলনাদে প্রতিরোধের কথা, বাংলায় মেদিনীপুরের মত বিভিন্ন জায়গায় যে দীর্ঘদিন ধরে যুদ্ধ চলছে সেই অপূর্ব প্রতিরোধের কথা, কৃষক জনতা, কৃষক মহিলারা পুলিশের হাত থেকে কমিউনিস্ট নেতাদের উদ্ধার করার জন্যে যে বারবার আক্রমণ করছে তার কথাও তাদের মনে থাকে না। মনে না থাকাটাই সুবিধাজনক।...'র চিঠিতে এই এই অবস্থার এই বিপ্লবী যুগের পরিপ্রেক্ষিতেই নির্দেশ দেওয়া হয়েছিল। যে কোন প্রকারে সুবিধাবাদী কার্যকলাপ চালিয়ে যাবার জন্যে (খ)'র কমরেডরা এতই উৎসুক যে, যে বিপ্লবী যুগের ফলে সারা ভারতে বারবার সংঘর্ষ হচ্ছে, (ঠ) এবং (ড)'র গুলিচালনা ঘটেছে, সেই বিপ্লবী অবস্থার কথাই তারা সুবিধামত ভুলে গেছেন। এবং এর পর তারা যুক্তি দিতে চান যে, একমাত্র অহিংস প্রতিরোধই প্রতিরোধকে বানচাল করাই—বাইরের আন্দোলনের অবস্থার সঙ্গে খাপ খায়। আন্দোলনের অবস্থার সঙ্গে খাপ খাইয়ে আন্দোলনের রূপ ঠিক করা বলতে তারা এই বোঝান! তাদের আসল দাবী হোল, পার্টির অগ্রসর ইউনিটগুলির সঙ্গে তাল রেখে নয়, অথবা জঙ্গী জনগণের মনোভাব কিংবা দেশে শ্রেণী-সংগ্রামের অবস্থা অনুযায়ী নয়, কয়েকটি পার্টি ইউনিটের পশ্চাৎপদতা এবং বিশৃঙ্খলার সঙ্গে খাপ খাইয়ে লড়াইয়ের রূপ ঠিক করতে হবে।

প্রকৃতপক্ষে (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা দেশে বিপ্লবী অবস্থা এবং বিপ্লবী ঘটনাবলীর অস্তিত্বই অস্বীকার করেন। কারণ, তারা প্রথমে বলেছেন, জেলের মধ্যে এবং বাইরের আন্দোলনের অবস্থার সঙ্গে খাপ খাইয়ে আন্দোলনের রূপ ঠিক করতে হবে; তারপর তারা বলছেন ভারতের সর্বত্রই

লড়াইয়ের জঙ্গী কায়দা বর্জ্জন করতে হবে। এ থেকেই স্পষ্ট বোঝা যায় যে তাদের মতে ভারতের কোন জেলের অবস্থার সঙ্গেই লড়াইয়ের জঙ্গী ধরণ খাপ খায় না। সুতরাং বেশ বোঝা যায় যে তারা আজকের বিপ্লবী যুগকে, বিপ্লবী সম্ভাবনাকে এবং তেলেঙ্গানার জংগী বিপ্লবী লড়াইকে স্বীকার করেন না। এই হোল তাদের মার্কসবাদের পরিণতি।

তাছাড়া, কোন একটা বিশেষ ব্যাপারে জনগণের-সাড়া পাওয়া গেল কি গেল না, তারই ওপর ভিত্তি করে আন্দো-লনের অবস্থা বোঝার চেষ্টা করা ছেলেমানুষি ভুল। সাং-গঠনিক ভুলের কথা ছেড়ে দিলেও, কোন বিশেষ ব্যাপারে জনগণের সাড়া আরও অনেকগুলি কারণের ওপর নির্ভর করে। পার্টির প্রভাব এবং বিপ্লবী চেতনা যতই বাড়বে, গুরুত্বপূর্ণ এবং প্রধান প্রধান ব্যাপারগুলিতে জনগণের সাড়াও ততই সমান হবে। কিন্তু তখনও কম বেশী হবেই। আই-কি-পির জেল পরিদর্শনের সময় (ঘ) জেলের সামনে বিক্ষোভ প্রদর্শন করা যায় নি, কিংবা [ট]তে কোন প্রতিবাদ ধর্ম্মঘট করা যায় নি—এই ঘটনা থেকেই বাইরের আন্দোলনের অবস্থা বিচার করার চেষ্টা নিতান্তই অর্থহীন।

এইভাবে বিচার করলে, তেলেংগানাকে অনেকদিন আগেই আমাদের শেষ করে দেওয়া উচিত ছিল। তেলেং-গানার সমর্থনে পার্টি কি কোন প্রত্যক্ষ সংগ্রাম করতে পেরেছে? তেলেংগানার বাণী প্রচার করা এবং তার বিরুদ্ধে কুৎসার বিরোধীতা করা ছাড়া পার্টি আর কি করতে পেরেছে? তেলেংগানার সমর্থনে কোন সক্রিয় গণসমর্থন জাগান গেছে? কোন প্রতিবাদ ধর্ম্মঘট, কোন সাধারণ ধর্ম্মঘট? আজও কি তা সংগঠন করা সম্ভব? জনতার সাড়া যখন এই রকমের, তখন সারা ভারতীয় আন্দোলনের অবস্থার সংগে তেলেংগানা খাপ খায় না—এই কথা বলে প্রতিরোধ বন্ধ করে দেওয়াই কি আমাদের উচিত ছিল? বন্ধ করলে জঘণ্যতম বিশ্বাসঘাতকতার কাজ হোত।

তেলেঙ্গানা লড়ে চলেছে এবং হাজার হাজার শ্রমিক কৃষক যোদ্ধাকে অনুপ্রেরণা দিচ্ছে। তারা তেলেঙ্গানার সমর্থনে কোন সংগ্রাম সংগঠিত করতে না পারলেও, সাধা-রণ শত্রুর বিরুদ্ধে লড়াই শুরু করে তেলেঙ্গানাকে সাহায্য করছেন। তেলেঙ্গানাকে প্রত্যক্ষভাবে সাহায্য করার জন্যে কলকাতার জনগণ যে প্রায় কিছুই করেনি সেকথা কে অস্বীকার করবে? কিন্তু একথাই বা কে অস্বীকার করবে যে তাদের নিজেদের বারবার লড়াই এবং সংঘর্ষ তেলে-ঙ্গানাকে সাহায্য করেছে! যে বিপ্লবী মনোভাব চরমে উঠেছে, তেলেঙ্গানার মত এগুলিও যে সেই একই বিপ্লবী মনোভাবের প্রতিফলন তাইবা কে অস্বীকার করবে? যেহেতু তেলেঙ্গনার ব্যাপারে কোন জঙ্গী লড়াই হতে পারেনি, সুতরাং তেলেঙ্গানা বা জংগী লড়াই কোনটাই আন্দোলনের অবস্থার সংগে খাপ খায় না, সুতরাং এ দুই-কেই বর্জ্জন করা উচিত—একথা বলা যুক্তিসংগত হবে না। অথচ (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যদের নীতির এই অর্থই দাঁড়ায়। আমরা বুর্জ্জোয়া বিরোধী আন্দোলনের অংশ হিসাবে নয়, কমিউনিস্ট হিসাবে লড়ছি। জনতার সাড়ার কথা ভাববার সময় আমাদের কমরেডরা এই কথাটি বোধহয় ভুলে যান। তারা বোধহয় আরও ভুলে যান যে, তারা আগেকার তুলনায় পৃথক শক্তির বিরুদ্ধে লড়ছেন—আজকে (ঝ)তে গণসমর্থন জমায়েৎ করার অর্থ কংগ্রেস সরকারের বিরুদ্ধে প্রত্যক্ষভাবে কমিউনিস্টদের সমর্থনে গণসমর্থন জমায়েৎ করা। এবং তার জন্য সরকার, শ্রমিক এলাকার মূল কর্মীদের নিয়ন্ত্রণ করে যে সোস্যালিস্ট পার্টি তার কার্যকরী প্রতিরোধকে এবং খবর কাগজগুলির খবর চেপে যাওয়াকে পরাস্ত করা।

(গ)'র কাজের ধারা এবং সাংগঠনিক ব্যবস্থা যদি সংস্কারবাদ থেকে মুক্ত হোত, ১লা মের বিরাট গণ-সমা-বেশের সুযোগ নিয়ে সে যদি প্রতিবাদ ধর্ম্মঘটের তারিখ ঘোষণা করত, সে যদি কাজের বিপ্লবী সাংগঠনিক কায়দা-গুলিকে মিলিয়ে প্রয়োগ করতে পারত এবং (থ) ও অন্যান্য জায়গায় নেতারা যদি আতংকে তাড়াতাড়ি ধর্ম্মঘট উঠিয়ে না নিতেন, তাহলে যে বিপুল সাড়া পাওয়া যেত সে সম্পর্কে সন্দেহ নেই। একথা মনে রাখা দরকার যে, শুধু বাইরের কমরেডরাই শ্রমিকদের আশা ভঙ্গ করেননি; ঠিক যখন অবস্থা চরমে উঠছে, প্রশ্নটা জনসাধারণের নজরে এসে পড়ছে, ঠিক সেই সময় অনশন ধর্ম্মঘট প্রত্যাহার করে অনশন ধর্ম্ম-ঘটের নেতারাও শ্রমিকদের আশা ভঙ্গ করেছেন। (থ)র কমরেডরা বাইরের কমরেডদের সমালোচনা করেছেন কিন্তু এই বিশৃংখল অবস্থা সৃষ্টির জন্য নিজেদের দায়িত্বের কথা ভুলে গেছেন। এবং এখন তাদের দাবী, তারা নিজেরা এবং বাইরের বিভিন্ন কমিটি যে বিশৃংখল অবস্থা সৃষ্টি করেছেন তাতেই আন্দোলনের অবস্থার প্রকৃত ছবি বলে ধরে নেওয়া হোক, আর তার সংগে খাপ খাইয়ে প্রতি-রোধের রূপ ঠিক করা হোক।

এসব ছাড়াও, বাইরের আন্দোলন এবং সাড়ার সংগে জেল সংগ্রামের সম্পর্ক কি, সে সম্বন্ধেও (খ)র কেন্দ্রীয় কমি-টির সদস্যদের ধারণা সম্পূর্ণ ভুল। সরকারের স্বরূপ প্রকাশ করে দেওয়া, জনসাধারণকে জাগান আর সরকারকে আপোষ এবং আত্মসমর্পণে বাধ্য করার ব্যাপারে জেল সংগ্রামের যে নিজস্ব স্বাধীন ভূমিকা এবং দায়ীত্ব আছে, সেটা তারা দেখতে পান না। যে পার্টির নেতৃত্বে বাইরে থেকে প্রত্যক্ষ সমর্থন সরকারকে পরাস্ত করা এবং ভেতরের আর বাইরের লড়াইকে সংযুক্ত করার পক্ষে খুব শক্তিশালী হাতিয়ার তাতে সন্দেহ নাই। রাজনৈতিক বন্দীদের সংগ্রাম যে অত্যন্ত গুরুত্বপূর্ণ রাজনৈতিক সংগ্রাম তাতেও কোন সন্দেহ নেই, যেসব পার্টি কমিটি এই সংগ্রামের পিছনে সমর্থন জমায়েৎ করার জন্য বিশেষ চেষ্টা করে না, তাদের সংগ্রাম বানচাল করার অপরাধে অপরাধী বলে মনে করতে হবে। [অ] এবং [চ]র তরফ থেকে সমর্থন গড়ে তুলতে না পারাটা নিঃসন্দেহে একটা গুরুতর ব্যাপার। কিন্তু অনশন ধর্ম্মঘট কারীদেরও জনসাধারণের কাছে, শ্রমিক শ্রেণীর কাছে আবেদন করার একটা শক্তিশালী হাতিয়ার ছিল—তাদের নিজেদের অনশন ধর্ম্মঘট। এই অস্ত্রের জোরে কিছুদিন আগে বা পরে, সরকার আপোষ করতে বাধ্য হোত।

তাছাড়া, বাইরের পার্টি সমর্থন গড়ে তোলার নিরবিচ্ছিন্ন সুযোগ পেত। অবশ্য অংগহানি হবার বা জীবন হারাবার ঝুঁকি না নিয়ে এর কোনটাই করা যায় না—আর সেখানেই যত গণ্ডগোল।

বাইরের পরিকল্পনা ফেঁসে যাওয়ায় অনশন ধর্মঘটের নেতাদের দায়িত্ব আরও বেশী হয়ে পড়েছিল। সে দায়িত্ব পালন করার মত যোগ্যতা তারা দেখাতে পারেন নি। জনগণকে জাগাবার ব্যাপারে জেল সংগ্রামের স্বাধীন ভূমিকা আর সরকারকে আত্মসমর্পণ বা আপোষে বাধ্য করার ক্ষমতা তাদের মনে ছিল না। তারা ভুলে গিয়েছিলেন যে, অনশন ধর্মঘট সরকারের বিরুদ্ধে জনগণের কাছে আবেদন করার প্রত্যক্ষ হাতিয়ার। এসব কথা ভুলে গিয়েছিলেন বলেই তারা ব্যর্থ হয়েছেন।

তাদের ব্যর্থতার কারণ, জেল সংগ্রাম এবং বাইরের জনগণের মধ্যেকার সম্পর্ক সম্বন্ধে তাদের ভ্রান্ত সংস্কারবাদী ধারণা। তাদের দৃষ্টিভঙ্গীর অর্থ দাঁড়ায় যে, জেলের ভেতরকার সংগ্রাম কেবল প্রতীক-সংগ্রাম, আর আসল সংগ্রাম চালাবার দায়িত্ব জনগণের অথবা বাইরের পার্টির। এবং সেটাও করে ফেলতে হবে কারোর জীবন বা অঙ্গহানির আশংকা দেখা দেবার আগেই। কংগ্রেসীরা জেলের মধ্যে সকল লড়াই করত, বাইরে সরকার বিরোধী কাগজগুলো তাদের সমর্থন করত এবং শেষপর্য্যন্ত একটা তুচ্ছ আপোষ হয়ে যেত। কংগ্রেসীদের সেই ধারণাকেই এই কমরেডরা আমদানী করেছেন। এইসব কেন্দ্রীয় কমিটির সভ্যরা যে দলিলখানা পাঠিয়েছেন এবং যেসব যুক্তি দিয়েছেন তার এছাড়া কোন অর্থই হয় না।

সেইসঙ্গে একথাও বলে রাখা দরকার যে, অধিকাংশ জেল কমরেডরাই কলকাতার মত রাজপথে সংঘর্ষ, বিক্ষোভ প্রভৃতির সুবিধা ছাড়াই নিজেদের লড়াই চালিয়েছেন। নিজেদের প্রতিবাদ এবং কষ্টভোগের মধ্য দিয়ে জনগণকে জাগাবার কাজ তারা চালিয়ে গেছেন এবং সাধারণতঃ সরকারকে আপোষ বা আত্মসমর্পণ করতে বাধ্য করেছেন। কলকাতায় বা অন্য কোন জায়গায়ই আমাদের কমরেডদের অনশন ধর্মঘটের সমর্থনে বা তাদের ওপর গুলি চালনার প্রতিবাদে শ্রমিকদের সাধারণ ধর্মঘট করা সম্ভব হয় নি। শ্রমিক শ্রেণীর তরফ থেকে এই সমর্থনের অভাব বা অন্যান্য প্রদেশে কোন প্রকাশ্য বিক্ষোভের অভাবকে কেউ অনশন ধর্মঘট প্রত্যাহার করার এবং জেলের মধ্যে প্রতিরোধ সম্পর্কে বিশ্বাস হারাবার অজুহাত করে নি। কলকাতার বাইরে অন্যান্য জায়গার কমরেডদের কলকাতার তুলনায় স্বতন্ত্র অবস্থার মধ্যে লড়তে হয়েছে। কিন্তু তা বলে তারা ঘাবড়ে যান নি। নিজেদের অনশন ধর্মঘটের ক্ষমতা আর ভূমিকা তারা সঠিকভাবে বুঝতে পেরেছিলেন এবং রাজনৈতিক বন্দীদের অধিকার আর পার্টির সুনাম রক্ষার দায়িত্ব তারা পালন করে গেছেন।

সুতরাং বোঝা গেল যে, (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সভ্যরা বন্দীদের লড়াইয়ের মূল দায়িত্ব এবং ভূমিকার কথা, নিজেদের অন্ত-নিরপেক্ষ শক্তির কথা ভুলে গেছেন। জনগণ আসল লড়াই চালাবে আর তারা নিজেদের লড়াইকে নামমাত্র প্রতিরোধে পরিণত করতে চান।

নিজেদের সুবিধাবাদী নীতির সমর্থনে (খ)'র কমরেডরা লেনিন এবং স্ট্যালিনের উল্লেখ করেছেন। অবশ্য তারা কোন উদ্ধৃতি দেন নি। না দিয়ে ভালই করেছেন। কারণ তাদের সুবিধাবাদী নীতির সমর্থনে একটি উদ্ধৃতিও তারা খুঁজে পাবেন না। তাদের যুক্তিটা মোটামুটি এইরকম:—বন্দী কায়দায় জেল সংগ্রাম চালানটা তাদের মতে আন্দোলনের অবস্থার সংগে খাপ খায় না, তাছাড়া (খ) জেলের কিছু কিছু অদলীয় লোক হয়ত তাতে সমর্থন করবে না—এই জনসাধারণের লড়াই চালানর অর্থ শুধু পার্টির কর্মীদের নিয়ে লড়াই করা, শুধু অগ্রণী দলকে নিয়ে লড়াই করা। সুতরাং এ লড়াই লেনিন এবং স্ট্যালিনের শিক্ষাসম্মত নয়। কমরেডদের কথা শুনলে মনে হয় যেন তাদের জেলের মধ্যে নিজেরাই একটা বিপ্লব সংগঠিত করতে এবং রাজনৈতিক ক্ষমতা প্রতিষ্ঠা করতে বলা হয়েছে। অবশ্য এমন অদ্ভুৎ কোন দাবী করা হয় নি। পার্টি কর্মীদের শুধু এই কথাই বলা হয়েছে যে, শ্রমিক বন্দীদের পৃথক করার এবং বন্দীশিবিরে পাঠাবার চেষ্টাকে বন্দী কায়দায় প্রতিরোধ করতে হবে। জেলের মধ্যে পার্টি কর্মীরাই বিপুল সংখ্যাধিক, তারা ছাড়া এই লড়াই আর কে করবে? আর, কোন কোন অদলীয় লোক যদি এই লড়াইয়ে যোগ না দেয়, তাহলেও পার্টি কি বসে তাদের তোষণ করে এবং লড়াই ছেড়ে পালায়? এ অদলীয় লোকদের নেতৃত্ব দেওয়া নয়, এ হচ্ছে লড়াই বানচাল করার অজুহাত হিসাবে তাদের ব্যবহার করা। বারবার (গ)'র কথা উল্লেখ করে কেন্দ্রীয় কমিটির সভ্যরা এই কথাই প্রকাশ করে দিয়েছেন যে, লড়াই এবং আন্দোলন মারফৎ এইসব লোকদের পক্ষে আনবার সব আশাই তারা ছেড়ে দিয়েছেন, এবং এদের দোমনাভাব দিয়ে নিজেদের সুবিধাবাদকে ঢাকবার চেষ্টা করছেন। যে যুক্ত-ফ্রণ্টে পার্টি তার সহযোগীদের দ্বিধাকেই ভিত্তি করে, শ্রেণী-সংগ্রামের প্রয়োজন নয়, তাদের দ্বিধাকেই বিচারের মাপকাঠি করে, তাকে যুক্তফ্রণ্ট বলা যায় না, সে হচ্ছে পাকা বোম্বীপন্থী কায়দায় অন্যদের কাছে আত্মসমর্পণ।

(খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যদের নীতিগত বক্তব্য হচ্ছে—আমরা হলাম অগ্রণী বাহিনী; আমাদের একলা লড়াইয়ে ঠেলে দিতে পার না—কারণ, লেনিন এবং স্ট্যালিনের শিক্ষা অনুযায়ী সেটা ভুল হবে। কেন্দ্রীয় কমিটির এই সদস্যরা যদি লেনিন পড়ার কষ্ট স্বীকার করতেন এবং উদ্ধৃতি দিতেন, তাহলে ভাল হোত। অগ্রণী বাহিনী এবং জনতার মধ্যে সম্পর্ক সম্বন্ধে লেনিন যা বলেছেন তা এই:

"শ্রমিক শ্রেণীর অগ্রণী বাহিনীকে পক্ষে আনা গেছে, সে পার্লামেন্টারী প্রথার বিরুদ্ধে সোভিয়েট সরকারের পক্ষে, বুর্জোয়া গণতন্ত্রের বিরুদ্ধে সর্বহারার একাধিপত্যের পক্ষে দাঁড়িয়েছে, এতেই প্রধান জিনিষটা—অবশ্য, মোটেই সমস্তটা নয়, কিন্তু প্রধান জিনিষটা সম্পন্ন হয়েছে। সর্ব

হারার অগ্রণী বাহিনীকে মতবাদের দিক থেকে গড়ে তোলা হয়েছে। এই হোল প্রধান কথা। এ ছাড়া বিজয়ের দিকে প্রথম পদক্ষেপও সম্ভব নয়। কিন্তু এরপরও বিজয় আরও অনেক দূরে। শুধু অগ্রণী বাহিনীকে দিয়েই জয়লাভ করা যায় না। সমগ্র শ্রেণী, সমগ্র জনগণ প্রত্যক্ষভাবে অগ্রণী বাহিনীকে সমর্থন করার, কিংবা অন্তত তার প্রতি সহানুভূতিশীল নিরপেক্ষতার অবস্থায়, যখন তারপক্ষে আর কিছুতেই শত্রুকে সমর্থন করা সম্ভব নয়। এমন অবস্থায় আসার আগে অগ্রণী বাহিনীকে একলা চূড়ান্ত লড়াইয়ে নামিয়ে দেওয়া।...[পৃঃ ৬২৬-৬২৭, বামপন্থী কমিউনিজম্—লেনিনের দুইখণ্ড সংস্করণের দ্বিতীয় খণ্ড।]

অগ্রণী বাহিনীকে লড়াইয়ে নামিয়ে দেওয়া সম্পর্কে অসাধারণ কথাবার্তা না বলার শিক্ষা এর থেকে (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যদের হওয়া উচিত। লেনিন এখানে "সর্বহারা বিপ্লবের দিকে অগ্রসর হওয়ার এবং রূপান্তরের বিভিন্ন রূপ অনুসন্ধান করা" সম্পর্কে লিখেছেন। এই উপলক্ষেই তিনি চূড়ান্ত লড়াইয়ে অর্থাৎ ক্ষমতা দখলের লড়াইয়ে অগ্রণী বাহিনীকে একলা, জনগণকে তা কাছে এসে পৌঁছবার সুযোগ না দিয়েই, নামিয়ে দেওয়ার বিরুদ্ধে সতর্ক করে দিয়েছেন।

উপযুক্ত অবস্থা সৃষ্টি হওয়ার আগেই রাষ্ট্রক্ষমতা দখলের চেষ্টার বিরুদ্ধে, অগ্রমিক অংশকে সেই সিদ্ধান্তে এসে পৌঁছবার সুযোগ না দিয়ে, সর্বহারা অগ্রণী বাহিনী একলা সোভিয়েটের পক্ষে সিদ্ধান্ত নিয়েছে—শুধু এই তথ্যের জোরে চূড়ান্ত লড়াইয়ে নেমে যাওয়ার বিরুদ্ধে এই সতর্কবাণী। জেলে পৃথক করার ব্যবস্থা প্রভৃতির বিরুদ্ধে কমিউনিস্ট পার্টির সভ্যদের লড়াইয়ের সংগে এর অনেক তফাৎ। এবিষয়ে অন্তত কোন স্পষ্টতার অভাব থাকা উচিত নয়।

আসলে, অগ্রণী বাহিনীর নামে (খ)'র কমরেডরা জেলের মত যে কোন লড়াইয়ের দায়িত্বই এড়িয়ে যেতে চান। এরা বোধ হয় ভাবেন যে, যেসব লোক লড়াই করতে চায় না তাদের নিয়েই অগ্রণী বাহিনী তৈয়ার হয়; এবং মার্কসবাদী তত্ত্বের কথা ছেড়ে দিলেও, ব্যক্তিগত বীরত্ব, সাহস, শ্রেণী সম্পর্কে গর্ব, এসব জিনিষও অগ্রণী বাহিনীর থাকার দরকার নেই। বহু বছরের সংস্কারবাদের ফলে, কিছু লোক কাপুরুষতাকেই বড় করতে শুরু করেছে এবং সাহসী, বীরত্বপূর্ণ প্রতিরোধের ভূমিকাকে তুচ্ছ করতে শুরু করেছে। সংস্কারবাদের ফলে অনেকেই ভুলে গেছেন যে, একজন কমিউনিস্টের ব্যক্তিগতভাবে সাহসী হওয়া দরকার এবং তাকে জনগণের দাবীর জন্য লড়াইয়ের সামনে থাকতে হবে। (খ)'র কমরেডদের যুক্তি গ্রহণ করলে, পার্টির নেতাদের বা সভ্যদের দ্বারা সংগঠিত প্রত্যেকটি সভা বা শোভাযাত্রা পুলিশের দ্বারা আক্রান্ত হলেই—বন্ধ করে দিতে হয়। কারণ, তা না হলে অগ্রণী বাহিনীকে বলি দিতে হয়। পার্টি তার কর্মীদের বাঁচাবার চেষ্টা করে এবং চেষ্টা যে করাই দরকার সে সম্পর্কে কোন সন্দেহ নেই। কিন্তু শ্রেণী সংগ্রামকে বানচাল করে, তার স্বার্থ বলি দিয়ে কিংবা শ্রেণী সংগ্রাম ছেড়ে পালিয়ে গিয়ে সেকাজ হয় না।

(খ)'র কমরেডরা এই পথই নিয়েছেন। বাইরের পার্টি এই পথ গ্রহণ করলে, লড়াইয়ের সংগঠন হিসাবে পার্টি শেষ হয়ে যাবে। বাইরে, প্রকাশ্যেই হোক আর গোপনেই হোক, পার্টির সভা এবং কর্মীদের সমাবেশ পরিচালনা করতেই হবে। তাতে অনেকে ধরা পড়েন; অনেকের জীবনও যায়। নতুন কর্মীরা এসে তাদের জায়গা নেয়। সংগ্রামের অগ্রগতি থামে না। সেই সংগে, পার্টি নেতৃত্বের মূল কেন্দ্রকে বাঁচিয়ে রাখার, একটানা নেতৃত্ব বজায় রাখার জন্যে সমস্ত রকম ব্যবস্থা করা হয়। লড়াই দিলে লড়াই ছেড়ে পালিয়ে নয়, অসুবিধা সত্ত্বেও লড়াই পরিচালনা করেই পার্টির অগ্রণী ভূমিকা প্রতিষ্ঠিত হয়।

আসলে [খ] কমরেডদের নীতি হচ্ছে জেল সংগ্রামে সবদিক থেকে পার্টির অগ্রণী ভূমিকা বর্জন করার নীতি। অদলীয় লোকদের সম্পর্কে নিজেদের অগ্রণী ভূমিকা তারা বর্জন করেছেন। এইসব অদলীয় লোকের চেতনাকে শ্রমিক শ্রেণীর চেতনার পর্য্যায়ে তুলে না এনে তারা অদলীয় নেতাদের হাতেই উদ্যোগ ছেড়ে দিয়েছেন। পৃথক করার বিরুদ্ধে লড়াইয়ে তাদের পরিচালনা না করে এই কমরেডরা তাদের লড়াই মেনে নিয়েছেন এবং সংগ্রামে বিশৃংখলা সৃষ্টি করেছেন। সংগ্রামের রূপ সম্পর্কেও তারা পশ্চাৎপদ অশ্রমিক অংশের কাছে হার স্বীকার করেছেন। তাদের সংগে মতের মিল আছে বলেই তারা একাজ করেছেন। এইভাবে দেখা যায় যে, এই কমরেডরা নিজেদের অগ্রণী বাহিনী বললেও আসলে তাদের সংগে অদলীয় লোকদের কোন তফাৎ নেই, তারা বোধ হয় ভাবেন যে, অগ্রণী বাহিনী তাদের কাজ এখন সব জঙ্গী সংগ্রাম এড়িয়ে চলা এবং মুক্তির পর বেরিয়ে এসে নেতৃত্ব নেবার জন্য অপেক্ষা করা। এভাবে নেতৃত্ব প্রতিষ্ঠা হয় না, অগ্রণী বাহিনীও এভাবে বেড়ে ওঠে না।

পার্টির অগ্রণী ভূমিকা সম্পর্কে স্ট্যালিন বলেছেন:

"যে পার্টি বোঝে যে সে শ্রমিক শ্রেণীর অগ্রণী বাহিনী এবং যে **পার্টি জনগণকে শ্রমিক শ্রেণীর শ্রেণী-স্বার্থের স্তরে তুলে আনতে পারে** [বড় হরফ পি-বি'র] একমাত্র সেই পার্টিই শ্রমিক শ্রেণীকে ট্রেড ইউনিয়নবাদের পথ থেকে সরিয়ে এনে তাকে এক স্বাধীন রাজনৈতিক শক্তিতে পরিণত করতে পারে।"

[লেনিনবাদের ভিত্তি, পৃঃ ৮২]

৮৩ পৃষ্ঠায় স্ট্যালিন লেনিনের উদ্ধৃতি দিয়েছেন:

"জনসাধারণের বিপুল থেকে বিপুলতর অংশকে সব চেয়ে উঁচু স্তরে তোলবার যে স্থায়ী দায়িত্ব অগ্রণী বাহিনীর রয়েছে তা ভুলে যাওয়ার অর্থ হোল শুধু নিজেদের ঠকানো, কর্তব্যের বিরাটত্বের দিকে চোখ বুজে থাকা এবং এই কর্তব্যকেই সংকীর্ণ করে ফেলা।"

[খ]'র কমরেডরা নিশ্চয়ই অদলীয় লোকদের পরিচালনা করছেন না, বরং তাদের উচ্চ স্তরে তুলে আনবার দায়িত্ব ভুলে যাচ্ছেন, আদর্শের দিক থেকে পিছনে চলেছেন।

(ক)র জেলসমূহে পার্টি সভ্য এবং পার্টি সমর্থকরাই যে বিপুল সংখ্যাধিক, এবং পার্টিই সরকারের বিরুদ্ধে প্রকৃত

বিরোধী শক্তি, বিপ্লবী শক্তি হওয়াটাই এটা স্বাভাবিক ফল সেকথা ভুলে গিয়ে তাঁরা অদলীয় লোকদের নিয়ে যেরকম বাড়াবাড়ি করেছেন তা থেকেই তাদের সুবিধাবাদের স্বরূপ বোঝা যায়। এই রকম সময়ে, এমনভাবে কাজ করা যেন যুক্তফ্রন্টের মধ্যে পার্টি একটা ক্ষুদ্র তুচ্ছ শক্তি, পার্টি যেনমন্ন বিরোধীদের মধ্যে একটা দুর্বল শক্তি ছিল তখনকার মনোভাব আমদানী করাটা নির্লজ্জ সুবিধাবাদ ছাড়া আর কিছুই নয়। এ হচ্ছে অশ্রমিক লোকজনের পিছনে লেজুড় হয়ে চলার একটা বিশেষ ধরণ। (আর জেলে তারাই যে সংখ্যায় বেশী এই কথাটা তারা ভুলে গেছেন। নিজেদের বন্দী কমরেডদের কথা, সংগ্রামী শ্রমিক কর্মীদের কথা ভুলে গিয়ে তারা অশ্রমিক সহযোগীদের চেতনার সংগে নিজেদের খাপ খাইয়ে নিয়েছেন। তাদের চিঠির প্রতি ছত্রে [৩]'র উল্লেখ, কিন্তু অন্যান্য জেলে শ্রমিক বন্দীদের অস্তিত্ব সম্পর্কে, আমাদের কমরেডদের সম্পর্কে, আমাদের শ্রমিক কর্মীদের সম্পর্কে, তাদের প্রয়োজন সম্পর্কে কোন উল্লেখ নেই বললেই চলে। মনে হয় যেন আমরা (৩)কে পরিচালনা করছি না, বরং তারাই আমাদের পরিচালনা করছে।

এই আত্মসমর্পণ-নীতির চূড়ান্ত হোল যখন (ক)র জল্লাদ আই-বি-পির বিরুদ্ধে আমাদের কমরেডরা কোন বিক্ষোভ সংগঠন করতে পারলেন না। তারা যেভাবে একেবারে নির্লজ্জের মত, কোন আত্মসমালোচনা না করে; এই ঘটনা বর্ণনা করেছেন তা থেকেই তাদের চেতনার চরম অবনতি এবং রাজনৈতিক আত্মমর্যাদা জ্ঞানের অভাব বোঝা যায়।

(খ) জেলে আমাদের কমরেডদের কাছ থেকে বেশ গরম অভ্যর্থনা পাবার পর আ-ঞ্জি-পি (খ)তে আসছিল। সুপারিন্টেণ্ডেণ্ট ধূর্তের মত অদলীয় নেতা (১৪)কে ডেকে এই প্রতিশ্রুতি আদায় করে নেয় যে আমাদের ইয়ার্ডে আ-ঞ্জি-পির আসা নিয়ে কোন আপত্তি হবে না। উচিত ছিল এই প্রতিশ্রুতি নাকচ করে তৎক্ষণাৎ স্লোগান এবং অন্যান্য সমস্ত উপায়ে বিক্ষোভ সংগঠন করা। তা না করে (খ)র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা গম্ভীরভাবে তর্ক শুরু করলেন যে এভাবে নাকচ করে দিলে (১৪)র সংগে আমাদের সম্পর্ক খারাপ হয়ে যাবে কিনা; এবং সিদ্ধান্ত করলেন যে, আই-ঞ্জি-পি আমাদের ইয়ার্ডে ঢোকার পরই শুধু স্লোগান দেওয়া হবে, সে যখন জেলে ঢুকবে এবং অন্যান্য ইয়ার্ডে ঘুরবে তখন নয়। (১৪)র সংগে সম্পর্ক নিয়েই তাদের যত মাথাব্যথা, কিন্তু আমাদের যে দুজন কমরেড পার্টির জন্য প্রাণ দিয়েছেন তাদের স্মৃতির কথা তারা ভুলে গেলেন। ফল হোল এই যে, আই-জি-পি আমাদের ইয়ার্ডে ঢুকল না। বেশ শান্তিতে অন্যান্য ইয়ার্ড দেখে সে চলে গেল। তার বিরুদ্ধে কোন বিক্ষোভ দেখান হোল না। সুপারিন্টেণ্ডেণ্ট (খ) কমরেডদের বোধ হয় বোকা বানিয়েছিল। (৬) এবং (৭)এর হত্যাকারী চলে গেল, কমিউনিস্ট বন্দীদের চীৎকার বা স্লোগানও তাকে শুনতে হোল না। এই হচ্ছে তাদের নেতৃত্ব, কার্যক্ষেত্রে তাদের যুক্তফ্রন্টের চেহারা। নিজেদের কমরেডদের স্মৃতির প্রতি সম্মান দেখাবার বদলেও তাদের নেই। এর চেয়ে লজ্জাকর দৃশ্য আর কি হতে পারে?

এ থেকে আবার প্রমাণ হয় যে, (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা সমস্ত প্রতিরোধ স্থগিত রাখার জন্যে যে কোন প্রকারে এড়িয়ে যাবার জন্যে একটার পর একটা অজুহাত আবিষ্কার করেন।

জেলে অন্যান্য দল বা উপদলের সংগে কোন বোঝাপড়া করা উচিত নয় একথা কেউ বলছে না। কিন্তু সে বোঝাপড়া যেন আমাদের কাজের পক্ষে বন্ধন হয়ে না দাঁড়ায়। পরিচালক হিসাবে আমাদের ভূমিকা এবং প্রধান শক্তি হিসাবে আমাদের ক্ষমতার সংগে তার ফলাফলের সঙ্গতি থাকা চাই। এবং দরকার হলে, অন্যদের অমতেও, নিজেরাই কিছু করার জন্য আমাদের প্রস্তুত থাকতে হবে। আই-জি-পি'র বিরুদ্ধে বিক্ষোভের ব্যাপার নিয়ে (১৪) আমাদের ছেড়ে গেলেও কিছু এসে যেত না। যে সব লোক আমাদের কমরেডদের হত্যার বিরুদ্ধে প্রতিবাদ করতে চায় না—আমরা প্রতিবাদ করলে চটে যায়, তাদের সংগে মিলে বিপ্লবী কাজ চালাবার বিশেষ কোন সম্ভাবনা নেই। এমনও হতে পারে যে আমাদের আপোষহীন মনোভাব এবং কাজ দেখলে হয়ত তারাও যোগ দিত।

…চিঠির বিরুদ্ধে আক্রমণে (খ) কমরেডরা নিতান্ত অসার সব যুক্তি দেখিয়েছেন। (খ)'র অবস্থার কতকগুলি বিশেষত্ব বিচার না করার জন্য তারা চিঠিখানিকে আক্রমণ করেছেন। সহজেই বোঝা যায় যে, সমস্ত জেলের জন্য লিখিত নির্দেশ দেবার সময় সাধারণ সমস্যাগুলিই মনে রাখতে হয়। নির্দেশগুলিকে এইভাবে বোঝা প্রত্যেক বুদ্ধিমান এবং সাচ্চা পার্টি সভ্যের দায়িত্ব, এ জেলা বা ও জেলের বিশেষ অবস্থাকে বাইরের নির্দেশের বিরুদ্ধে আক্রমণের হাতিয়ার হিসাবে ব্যবহার করা যায়।

(খ)'র বিশেষ অবস্থা হোল এই যে সেখানে অধিকাংশ দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দী অদলীয়, পার্টির নিয়ন্ত্রণের বাইরে। তাছাড়া এসব লোক এখনও বন্দীশিবিরের বিপদ সম্পর্কে সচেতন নয়, সুতরাং তার বিরুদ্ধে লড়তেও চায় না। অনেকে (ক)তে যেতেই চায়।

সহজেই বোঝা যায় যে, এখানে প্রতিরোধ হবেই এমন কথা বলা যায় না। কিন্তু (খ)'র কমরেডরা সত্যিই প্রতিরোধ চাইলে বাইরের কমরেডদের তারা লিখতেন যে, তাদের নির্দেশ ঠিক কিন্তু দ্বিতীয় শ্রেণীরা অদলীয় লোক হওয়ায় এই নির্দেশ পালন করা কঠিন; যাই হোক তারা প্রচার এবং আন্দোলন চালাবেন এবং যথাসম্ভব নির্দেশ অনুযায়ী কাজ করবেন। কিন্তু (খ)র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা তাদের চিঠিতে অদলীয় বন্দীদের মধ্যে প্রচার এবং আন্দোলনের কথা বলেননি। তারা বলেছেন যে, এইসব লোকদের পক্ষে আনা যাবে না, সুতরাং নির্দেশগুলিই অবাস্তব। এইভাবে বাইরের নির্দেশের বিরুদ্ধে তর্কে জেতবার জন্য একটা ছোট ব্যাপারকে বড় করে তোলা হয়েছে। …'র

চিঠিকে হীন করার জন্য (খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যরা কথার ছলনা এবং কৌশলের আশ্রয় নিয়েছেন।

(খ)'র কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যদের এবং (খ) কমিটির সুবিধাবাদী নীতিকে পি-বি সম্পূর্ণভাবে অস্বীকার করছে। পি-বি এইসব দলিলের বিস্তৃত আলোচনা করার কারণ, এগুলি অত্যন্ত ভয়ংকর দলিল এবং এইসব দলিল অনুযায়ী কাজ করলে পার্টি মেম্বর থাকা যায় না। এই ব্যাপারে সংশ্লিষ্ট (খ)'র সমস্ত কমরেডদের এই সুবিধাবাদী-নীতি অস্বীকার করতে, নিজেদের ভুলের আত্মসমালোচনামূলক বিচার করতে এবং পি-বি'র দলিলগুলি তারা সর্বান্তঃকরণে গ্রহণ করেন কিনা তা জানাতে পি-বি আহ্বান জানাচ্ছে। যেসব জেল কমরেডদের বিরুদ্ধে অভিযোগ এসেছে তাদের সম্পর্কে অনুসন্ধান করা এবং উপযুক্ত ব্যবস্থা অবলম্বন করার জন্য পি-বি কেন্দ্রীয় কমিটির ছয়জন সদস্যকে নিয়োগ করছে। অন্য যে কোন কমরেড সংগ্রামের সময় কিরকম ব্যবহার করেছেন সে সম্পর্কে রিপোর্ট চাওয়ার এবং (ছ)গুলিকে পুনর্গঠন করার কোন ব্যবস্থা করা দরকার কিনা সে সম্পর্কে সুপারিশ করার ক্ষমতাও পি-বি এই ছ'জনকে দিচ্ছে।

(খ) এবং অন্যান্য জায়গার পার্টি মেম্বরদের পি-বি আহ্বান জানাচ্ছে—আতংকগ্রস্ত হবেন না; আতংক-প্রচারকদের কথায় ভুলবেন না। জেলের ভেতরে এবং বাইরে যে পার্টির সভ্যরা সমাজতন্ত্রের জন্য লড়াইয়ের ইতিহাসের পাতায় প্রতিদিন নতুন নতুন গৌরবময় কাহিনী রচনা করছেন, আমাদের সেই পার্টির সর্বহারার পতাকাকে উঁচুতে তুলে ধরুন।

৩০-১-৪৯

২। অ-অনশন ধর্ম্মঘট সম্পর্কে পি-বি'র নোট

২৫-৯-৪৯

১৯৪৯-এর মে মাসে অনশন ধর্ম্মঘটের সময় [অ]'র বিভিন্ন জেলে শত শত কমরেড প্রশংসনীয় বীরত্ব দেখিয়েছেন। পার্টি চিরদিন তাদের জন্য গৌরব অনুভব করবে। আর বিশেষ করে গৌরব অনুভব করবে তাদের জন্য যাঁরা তিন সপ্তাহ অনশনের পরও ধর্ম্মঘট উঠিয়ে নেবার বিরোধিতা করেছিলেন।

কিন্তু তা সত্ত্বেও, [অ]'র বিভিন্ন জেলের পার্টি নেতৃত্ব এই ধর্ম্মঘটকে কাপুরুষের মত এবং সংস্কারবাদী দৃষ্টিতে বুঝেছেন এবং চালিয়েছেন। জীবনহানি কিংবা অঙ্গহানির সামান্যতম আশংকায়ই তারা আর্যাত শত্রুর কাছে আত্মসমর্পণ করেছেন। জেল কমরেডদের প্রতি উপদেশে এবং অনশন ধর্ম্মঘটের সমর্থনে আন্দোলন গড়ে তোলার চেষ্টায় [গ] এবং [অ]'র পার্টি নেতৃত্ব স্থূল সংস্কারবাদ এবং আতংকিত মনোভাব দেখিয়েছেন। [অ]'র জনগণ এবং পার্টি কমরেডদের সম্পর্কে শ্রমিক ও কৃষকদের সম্পর্কে বিশ্বাস হারিয়ে তারা জেলের নেতৃত্বের কাপুরুষোচিত পরামর্শের শীকার হয়েছেন। [অ] অনশন ধর্ম্মঘটের প্রতি বিশ্বাসঘাতকতার ফলে রাজনৈতিক বন্দীদের প্রতি স্থানীয় সরকারের ব্যবহারই শুধু আরও কঠোর হয় নি। [অ]'র উদাহরণ দিয়ে কেন্দ্রীয় সরকার অন্যান্য প্রাদেশিক সরকারকে, যেমন পশ্চিম বাংলা সরকারকে, বন্দীদের কাছে দেওয়া প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ করার এবং তাদের বিরুদ্ধে ক্রমেই আরও বর্বর ব্যবস্থা প্রয়োগ করার উৎসাহ দিচ্ছে।

অন্যান্য প্রদেশের তুলনায়ও [অ]তে রাজনৈতিক বন্দীদের সঙ্গে (বিনাবিচারে আটক এবং সাজাপ্রাপ্ত) সবচেয়ে খারাপ ব্যবহার করা হোত। তাদের সংখ্যা কয়েকশত হয়ে দাঁড়িয়েছিল এবং রোজই আরও যোগ হচ্ছিল। বন্দী শ্রমিক-কৃষক যোদ্ধাদের ওপর প্রতিশোধ নেবার জন্য কংগ্রেসী রাজ সাধারণত যেসব পীড়ন এবং অত্যাচার চালায়। সেগুলি ছাড়াও সরকার শ্রেণী-বিভাগের ব্যবস্থা করে বন্দীদের মধ্যে বিভেদ সৃষ্টির চেষ্টা করছিল। অধিকাংশ শ্রমিক এবং কৃষক বন্দীদের দ্বিতীয় শ্রেণী (রাজবন্দী) অথবা তৃতীয় শ্রেণীতে (সাজাপ্রাপ্ত) রাখা হচ্ছিল, কিন্তু মধ্যবিত্ত এবং উচ্চ শ্রেণীর বন্দীদের ওপরের শ্রেণীতে থাকবার সুযোগ দেওয়া হচ্ছিল। তাছাড়া, তারা কারওয়ালা শ্রমিক-কৃষক এবং মধ্যবিত্ত যোদ্ধাদের বিনাবিচারে আটক করে, তারপর তাদের পারিবারিক ভাতা দিতে অস্বীকার করছিল। সরকারের উদ্দেশ্য ছিল এইভাবে, পরিবারগুলিকে ধ্বংস করে বন্দীদের মনোবল ভেঙ্গে দেওয়া।

স্পষ্টই বোঝা যায় যে এরকম অবস্থায় যে কোন জেল সংগ্রামের দাবী হওয়া উচিত—শ্রেণী-বিভাগ রদ, সমস্ত রাজবন্দীর জন্য সমান ব্যবহার, রাজবন্দীদের পরিবারের জন্য ভাতা, সমস্ত রাজবন্দীর মুক্তি এবং বিচারাধীন আর সাজাপ্রাপ্ত বন্দীদের জন্য উন্নত ব্যবস্থা। এবং [অ]'র অবস্থায় সরকারকে নোয়াতে হলে বন্দীদের যে কঠিন এবং দৃঢ় সংগ্রাম করতে হবে সে কথাও যে কোন লোকের কাছে স্পষ্ট ছিল।

দাবী সম্পর্কে দুর্ব্বলতা

কিন্তু অনশন ধর্ম্মঘট সংগ্রামকে বোঝাই হয়েছিল সংকীর্ণ সংস্কারবাদী কায়দায়, সম্ভব হোলে কয়েকটা ছোটখাট দাবী আদায়ের জন্য। সেই কারণেই দাবীগুলির এই গুরুত্ব ভুলে যাওয়া হয়েছিল।

প্রথমত, অনশন ধর্ম্মঘট সুরু হবার আগেই অনেকে রাজবন্দীদের মূল দাবীগুলি—শ্রেণী-বিভাগ লোপ এবং সমস্ত রাজবন্দীদের প্রথম শ্রেণীতে রাখার দাবীগুলি পর্য্যন্ত বাদ দেবার চেষ্টা করেন।

জেলের কমরেডরা সরকারের কাছে তাদের প্রথম স্মারকলিপিতে সঠিকভাবেই দাবী করেছিলেন যে—রাজবন্দীদের বিচার করতে হবে, নয়ত ছেড়ে দিতে হবে, শ্রেণী-বিভাগ রদ করতে হবে, সমস্ত রাজবন্দীদের প্রথম শ্রেণীতে রাখতে হবে, পারিবারিক ভাতা দিতে হবে ইত্যাদি। (ক) জেলে আমাদের বন্দীদের একটি সবচেয়ে বড় কেন্দ্র এবং সেই হিসাবে বন্দী সংগ্রামের নেতা। অথচ তারাই পরে এক স্মারকলিপিতে সরকারকে তার নিজের শ্রেণী-বিভাগের মানদণ্ড অনুযায়ী কাজ করতে অনুরোধ করেছেন! তারা অনুরোধ করেছেন, "আমরা অনেকেই শ্রমিক ছিলাম। বেশ ভাল মজুরী পেতাম এবং এ অবস্থায় যতটা সম্ভব স্বচ্ছল জীবন যাপন করতাম। আমরা কেউ কেউ মধ্যবিত্ত শ্রেণীর লোক। সরকার যদিও মুখে বলে যে আমাদের শিক্ষা এবং বাইরের জীবনযাত্রার ধরণ অনুযায়ীই আমাদের সংগে ব্যবহার করা হয়, কিন্তু আমাদের ক্ষেত্রে সরকার তার নিজের রীতিই ভঙ্গ করেছে।"

এই মিনতির পর তারা চান, খাবার জিনিষের উন্নতি, পৃথক রান্নাঘর, অন্তত কিছু কাপড়-চোপড়, খাওয়া এবং স্নানের ব্যবস্থার কিছু উন্নতি, পায়খানার টুকরির জন্য ঢাকা, পারিবারিক ভাতা ইত্যাদি সম্পর্কে দশটি দাবী পেশ করেছেন। তারা মুক্তি বা শ্রেণী-বিভাগ রদ করার দাবী তোলেননি। শুধু তাই নয় না-তোলাকে সমর্থন করার জন্য খোসামুদে এবং নির্লজ্জের মত বলেছেন যে:

"সরকার রাজবন্দীদের সংগে ব্যবহারে শ্রেণী-বিভেদ

রাখতে জোর করছে আর আমরা শ্রেণী-বিভেদ থাকা উচিত না বলে জোর করছি—এই কথা ধরে নিয়েই (ওপরের) দাবীগুলি উপস্থিত করা হয়েছে।"

এইভাবে মুক্তির দাবী, শ্রমিক-কৃষক বন্দীদের জন্য সমান এবং উন্নত ব্যবস্থার দাবী নির্লজ্জের মত ছেড়ে দেওয়া হোল, আর শ্রমিক-কৃষক বন্দীদের চিরদিন আটক রাখা এবং তাদের প্রতি অমানুষের মত ব্যবহার করার নীতির চৌহদ্দির মধ্যে কিছু তুচ্ছ সুবিধা নেবার জন্য সরকারের কাছে আবেদন করা হোল।

(অ)তে উপস্থিত (ধ) নেতারা সমস্ত বন্দীদের কাছে লেখা একখানি চিঠিতে জোর দিয়ে বলেছিলেন যে, আসল লড়াই হবে "প্রদেশের সমস্ত জায়গার সমস্ত রাজবন্দীদের মূল দাবী নিয়ে, এই সব দাবী হোল—শ্রেণীবিভাগ লোপ, পারিবারিক ভাতা ইত্যাদি।" তারা মনে করিয়ে দিয়েছিলেন যে, "মূল দাবীগুলি মনে রাখা এবং এটা যে শ্রমিক শ্রেণীর যোদ্ধাদের জন্য লড়াই সে কথা ভুলে না যাওয়াই হচ্ছে আসল কথা।"

কিন্তু অন্যান্য জেলে ধর্মঘটের তিন দিন পরে, নিজেদের ধর্মঘট শুরু করার ঠিক আগে (ক) জেলের প্রথম শ্রেণীর বন্দীরা, কেন্দ্রীয় কমিটির একজন সদস্য—কমরেড (৮)এর নেতৃত্বে সরকারকে এক নোটিশ পাঠান। সেখানে তারা সরকারকে শ্রেণী-বিভাগ তুলে দেবার জন্য 'অনুরোধ' করলেও, তার সঙ্গে আবার নিচের 'কিন্তুটি' জুড়ে দিয়েছেন:

"এই ধরণের ব্যবস্থা না হওয়া পর্যন্ত আমরা দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীদের সমর্থন জানাচ্ছি এবং দাবী করছি যে আমাদের তাদের সংগে অবাধে মেলামেশা করতে দেওয়া হোক।"

কথাটা দাঁড়াল এই যে, বন্দীদের মুক্তি, শ্রেণী-বিভাগ রদ, দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীদের জন্য প্রথম শ্রেণীর ব্যবস্থা—এসব দাবীর জন্য লড়াই প্রথম শ্রেণীর বন্দীদের লড়াই নয়, তারা কেবল দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীদের প্রতি সমর্থন জানাবার জন্যে এবং তাদের সংগে অবাধে মেলামেশা করার জন্যে লড়বেন!

সমস্ত রাজবন্দীর সাধারণ দাবী এবং সমান ব্যবস্থার জন্য লড়াই ছেড়ে পালানটা, (১৫)র কাছে লেখা (৮)এর চিঠিতে আরও স্পষ্ট হয়ে উঠেছে। আশ্চর্যের কথা, অনশন ধর্মঘটের লিখিত নোটিশে কমরেড (৮) সই করেননি, অন্য কমরেডরা তাকে পৃথকভাবে (১৫)কে লিখতে অনুমতি দেন। সে যাই হোক, এই চিঠিখানিতে (চিঠিটা আবার অন্য পার্টি নেতারা বোকার মত বিনা আপত্তিতে প্রচার করেছেন) (১৬)'র কাছে (৮) আবেদন করেছেন:

"আমরা (ঞ) ক্যাম্পে যা পেতাম তার সঙ্গে আপনি (১৬) আজ প্রথম এবং দ্বিতীয় শ্রেণীকে যা দিচ্ছেন তার তুলনা করলে দেখতে পাবেন যে, আগে আপনি বা আমি যেভাবে ছিলাম তার চেয়ে আপনার শাসনে রাজবন্দীরা অনেক খারাপ অবস্থায় আছে।

"আগেকার অনেক রেগুলেশনের বন্দী বা ১৯৪১-৪৫এর প্রথম ও দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীদের চেয়ে অনেক খারাপ ব্যবহার আমাদের সঙ্গে করা হচ্ছে।

"কোন কোন মূল ব্যাপারে আমাদের অবস্থা আরও খারাপ? (ঞ)র মীমাংসা অনুযায়ী প্রথম এবং দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীরা সকলেই একটা নির্দিষ্ট হিসাবে বছরে দুবার সাধারণ কাপড়-চোপড় পেত এবং তার মধ্যে জুতো এবং শীতের পোষাকও ধরা হোত। যাদের দরকার তাদের জন্য পারিবারিক ভাতার দাবীও স্বীকার করা হয়েছিল, এবং কেউ কেউ ভাতা পেত। প্রত্যেক শ্রেণী তাদের নিজেদের পছন্দমত রান্নার ব্যবস্থা করত, এবং সেজন্য ভাল রান্না সম্ভব হোত। খাদ্যের পরিমাণ এবং গুণেরও পরিবর্তন করা হয়েছিল।

"আমি একথা বলতে চাই যে, রেশন ব্যবস্থার বাধা-নিষেধের কথা বিচার করলে আপনার সরকার প্রথম শ্রেণীর খাদ্যের মান আগেকার চেয়ে নিচু করেনি। কিন্তু অন্য সমস্ত ব্যাপারে প্রথম এবং দ্বিতীয় শ্রেণীর জন্য আপনাদের ব্যবস্থা বেশ নিচে নেমে গেছে।

"আপনাদের নিজের অনুযায়ীও যা ন্যায্য এবং (ঞ)র ধর্মঘটের সময় আপনাদের গুরুও যা সমর্থন করেছিলেন, বিরোধীদের তাও দিতে আপনারা অস্বীকার করছেন।"

এই ধরনের আরও অনেক কিছু লেখার পর তিনি এই বলে শেষ করেছেন:

"অনেক রেগুলেশনের বন্দীদের চেয়েও এবং (ঞ) ক্যাম্পে ধর্মঘটের পর আপনাদের ক্ষেত্রেও যা স্বীকৃত এবং পালিত হয়েছিল, তার চেয়েও আপনাদের ব্যবস্থা খারাপ। এই হচ্ছে প্রধান কথা। এর প্রতিই আমি আপনার দৃষ্টি আকর্ষণ করতে চাই।

"খাদ্য, পোষাক এবং ভাতা সম্পর্কে প্রথম এবং দ্বিতীয় শ্রেণীর রাজবন্দীদের সমস্ত দাবীর তালিকা দেওয়ার এখানে কোন দরকার নেই। আগেকার চুক্তিগুলিও ভঙ্গ করা হচ্ছে, আগেকার চেয়েও ব্যবস্থা খারাপ করা হচ্ছে এবং সেই জন্যই কেবলমাত্র আগেকার ভাগিদেই আমাদের সেই পুরান অনশন ধর্মঘট শুরু করতে হচ্ছে। এই ব্যাপারের দিকেই আপনার দৃষ্টি আকর্ষণ করাই আমার উদ্দেশ্য।"

শ্রেণী-বিভাগের সরকারী ব্যবস্থা রদ করার দাবীর উল্লেখও (৮)র চিঠিতে নেই, যে কংগ্রেস সরকার জেলের মধ্যে কমিউনিস্ট বন্দীদের খুন করেছে, যে সরকার এই চিঠি লেখার সময়েও, প্রদেশের অন্যান্য সমস্ত জেলের রাজবন্দীদের দুদিন ধরে অনশন ধর্মঘটকে হৃদয়হীনের মত উপেক্ষা করছিল, তার বিরুদ্ধে কোন অভিযোগ (৮)র চিঠিতে নেই। তার জায়গায় আছে পুরান (ঞ)র ব্যবস্থা মেনে চলার জন্যে করুণ আবেদন—অথচ (ঞ)র সেই ব্যবস্থায়ও শ্রেণী বিভাগ থাকবে বলে ধরেই নেওয়া হয়েছিল।

দাবীর প্রতি এই মনোভাব, একান্ত জরুরী দাবীগুলিকেও কমিয়ে এনে তুচ্ছ কয়েকটা সুবিধার ভিত্তিতে তাড়াতাড়ি আপোষ করার এবং এইভাবে কোন সত্যিকারের লড়াই এড়িয়ে যাবার কাপুরুষোচিত চেষ্টা—এইসব কারণে স্বভাবতই ধর্মঘটের প্রথম থেকেই দ্বিধা দেখা দেয় এবং সংগ্রামের মধ্যে সেই দ্বিধা দ্রুত আত্মসমর্পণের মনোভাবে পরিণত হয়। এই সংগ্রামকে বিশেষ গুরুত্ব

দেওয়া হয় নি বলেই কোন জেলে (জ) গুলিকে পুনর্গঠন করার কথা অথবা বন্দীদের মধ্যে নীতিগত ঐক্যের ভিত্তিতে কমরেডদের নিয়ে ধর্মঘট কমিটি গড়ার কথা ভাবা হয় নি।

(খ) জেলে বহু পুরুষ কমরেড লড়াই ছেড়ে পালান। (৫) ধর্মঘটের ৫ম দিনেই চা খেয়েছিলেন, এবং সরকারী চরের মত ২রা স্থানান্তরের ব্যবস্থাকে জেল কমরেডদের দিয়ে মানিয়ে নেবেন বলে জেলারকে কথা দিয়েছিলেন। এই (৫)ই আবার তার পালাবার সমর্থনে একটা তত্ত্ব পর্যন্ত খাড়া করেছিলেন। কিন্তু সেখানকার পার্টি-সেল তাকে তীব্রভাবে নিন্দা করেনি, কিংবা তার স্বরূপও প্রকাশ করে দেয়নি। বরংচ সেল তাকে ডাক্তারি কারণে ৯ম দিনে ধর্মঘট ভাঙতে অনুমতি দেয়।

(ঝ)তে প্রথম শ্রেণীর কমরেডরা ২রার কয়েকদিন আগে উচ্চমন রেল ধর্মঘটের বন্দীদের সংগে অনশন ধর্মঘট করতে অস্বীকার করে তাদের সমর্থন হারিয়েছিলেন। ফলে ২রা থেকে অনশন ধর্মঘটে তারা রেল শ্রমিকদের টানতে পারেননি। কিন্তু নিজেদের দুর্বলতা এবং ভুল ঢাকবার জন্য তারা রেল শ্রমিকদের ঘাড়ে দোষ চাপিয়ে দিয়ে বলেন যে ওরা "হতাশ" হয়ে পড়েছে। ইউনিটের এই দুর্বলতার ফলে শুধু যে দু'জন কমরেড অনশন ধর্মঘটে যোগ দেয়নি তাই নয়, তারা ক্ষমা চায় এবং পার্টি ছেড়ে যায়।

(ঘ)তে সাতজন কমরেড অনশন ধর্মঘট করেন। কিন্তু মাত্র আটদিন পরেই তারা ধর্মঘট তুলে নেন। এবং এই আটদিনও তারা জেলের ডাক্তারের কাছ থেকে 'ঔষুধ' গ্রহণ করেন—সে 'ঔষুধ' হচ্ছে দিনে আধসের গ্লুকোজ। সরকার তৎক্ষণাৎ সুযোগ নিয়ে এই ঘটনা প্রচার করে দেয় এবং অনশন ধর্মঘটের বদনাম করে।

কমরেড (৮)'র দ্বারা পরিচালিত [ক] জেলের কমরেডদের ব্যবহারই হয় সবচেয়ে কাপুরুষের মত। তাদের ব্যবহারকে অন্যান্য জেলের লড়াইকে পেছন থেকে ছুরি মারাও বলা যায়। দাবী সম্পর্কে তাদের মনোভাবের কথা আগেই বলা হয়েছে। প্রথম শ্রেণীর বন্দীরা দ্বিতীয় শ্রেণীর থেকে পৃথকভাবে অনশন ধর্মঘটের নোটিশ দেন এবং সেই নোটিশে দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীদের দাবীর প্রতি 'সমর্থন' জানান। এই পৃথক নোটিশ দেওয়া এবং সমর্থন প্রকাশ করা থেকেই যথেষ্ট স্পষ্ট বোঝা যায় যে প্রথম শ্রেণীর বন্দীরা শ্রেণী-বিভাগ মেনে নিয়েছেন।

[ক] সমেত সমস্ত জেলকে ২রা থেকে একসাথে অনশন ধর্মঘট শুরু করার কথা জানান হয়েছিল। [ক] ছাড়া আর সবাই তা শুরু করে।

(ক)'র বিশ্বাসভঙ্গ

কিন্তু কমরেড (৮)'র পরামর্শে (ক)'র নেতারা তাদের কমরেডদের আশ্বাসভঙ্গ করেন। তারা ২রা ধর্মঘট শুরু করেননি। অন্যান্য জায়গায় ধর্মঘট তিনদিন চলার পর তারা সরকারকে উপরোক্ত নোটিশ পাঠান এবং পরের সপ্তাহ থেকে অনশন ধর্মঘট শুরু করার প্রস্তাব করেন। তারা কষ্ট করে সরকারকে একথাও জানিয়ে দেন যে, অসুস্থরা অনশন ধর্মঘটে যোগ দেবে না, অর্থাৎ এমনই কোন ক্রত চরম অবস্থা বা গণ্ডগোল সৃষ্টি হবে, সরকারের এমন আশংকা করার কোন দরকার নেই। অন্যদের পুরো এক-সপ্তাহ পরে তারা অনশন ধর্মঘট শুরু করেন।

অথচ সময়ে শুরু করে দেবার পরও সাতদিন পর্য্যন্ত অনশন ধর্মঘট না করাটা নিতান্ত কাপুরুষতা, মরণের ভয়, নিজের প্রাণ বাঁচাবার চেষ্টা এবং সাধারণ সংগ্রামের প্রতি চরম বিশ্বাসঘাতকতা।

সামান্য অসুস্থ কমরেডদেরও তারা লড়াই ছেড়ে দেবার অনুমতি দেন। (৮) কোন গুরুতর অসুখে ভুগছেন বলে জানা না থাকলেও, কমরেডদের জেনারেল বডি মিটিংএ তাকে অনশন ধর্মঘট থেকে বাদ দেবার সিদ্ধান্ত করা হয়। অবশ্য কমরেড (৮) 'রাজনৈতিক কারণে' তাকে বাদ দেওয়া থেকে অন্যদের বিরত করেন, কিন্তু "তার স্বাস্থ্য বেশী রকমের খারাপ হয়ে পড়লে ডাক্তারি বাধানিষেধ মেনে চলতে" রাজি হন। এর অর্থ; লড়াইয়ের নেতাকেই যুদ্ধে আহত হবার প্রথম সম্ভাবনায়ই পালিয়ে যেতে দেওয়া হবে।

আপোষের জন্য (৮)'র আবেদন

এই মনোভাব থাকার ফলে প্রথম থেকেই তারা আত্ম-সমর্পণ করতে শুরু করেন। সাতদিনের মধ্যেই ১৫ জন ভেঙে পড়লেন এবং (৮) তাদের কয়েকজনকে অনশন ধর্মঘট ভাঙতে অনুমতি দিলেন। ১৪ই থেকে কমিটি বাইরে এই মর্মে আতংকপূর্ণ চিঠি পাঠাতে লাগলেন যে, সমস্ত কমরেডই "খুব দুর্বল অনুভব করছে।"

সেইদিনই নিষ্ক্রিয় কমিটির মত নিয়ে [৮] আর একটা চিঠি লিখলেন [১৫]কে। [১৫] তার আগেকার চিঠির উত্তর দেয়নি। এই চিঠিতে তার গাফিলতিকে [৮] ক্ষমা করলেন এই বলে যে, "অন্যান্য গুরুদায়িত্বের" জন্যই বোধহয় [১৫] আগেকার চিঠির উত্তর দিতে পারেনি। তিনি আরও স্বীকার করলেন যে, "সরকারের (তখন) যা মনোভাব তাতে তার কাছ থেকে (অনশন ধর্মঘট) সমস্যা সম্পর্কে নিরপেক্ষ বিচার আশা করা যায় না।" এবং অবশেষে তিনি এই কাপুরুষোচিত আপোষের আবেদন করলেন:

"দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীরা যে সর্বনিম্ন ভদ্র ব্যবহার এবং প্রয়োজনীয় জিনিষগুলি দাবী করছেন সেগুলি সঙ্গত কিনা এবং এমনকি সবচেয়ে বড় পাপীদের ক্ষেত্রেও যে সুবিচারের ধারণা এবং মানবোচিত মাপকাঠি অনুযায়ী ব্যবহার করা দরকার তার সঙ্গে বিশেষ করে দ্বিতীয় শ্রেণীর বর্তমান অবস্থা খাপ খায় কিনা—সে সম্পর্কে কোন নিরপেক্ষ ট্রাইবুনালকে বিচার করতে দিতে আমি সম্পূর্ণ রাজি আছি।

"পুনশ্চ:—আমি বিশেষ করে দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীদের কথা উল্লেখ করছি এই জন্য যে বর্তমান অনশন ধর্মঘটের প্রধান প্রশ্নই হচ্ছে দ্বিতীয় শ্রেণীর প্রতি ব্যবহার।"

অন্য জেলের কমরেডদের সঙ্গে পরামর্শ না করেই (৮) এই চিঠি লেখেন। এবং সেই চিঠিতে তিনি যে শুধু শ্রেণী-বিভাগ মেনে নিয়েছেন এবং বুর্জোয়া নিরপেক্ষ ট্রাইবুনালে সরল বিশ্বাস প্রকাশ করেছেন তাই নয়;

...দের বিচার মেনে নিতে রাজি আছি—সরকারকে এ কথা বলে তিনি সংগ্রামের সর্বনাশ করেছেন। যে নেতা ধর্মঘটের সাত দিন না যেতেই, অধিকাংশ ধর্মঘটির অজ্ঞাতে, ট্রাইবুনাল মেনে নিতে সম্মতি জানায় তাকে কি বলা যায়?

(অ)তে ১৬ তারিখে প্রাপ্ত চিঠিতে তারা (খ) নেতাদের বিদ্রূপ করে প্রশ্ন করেছেন, "এ অনশন ধর্মঘট 'আমরণ' নয়ত? নাকি সত্যিই আমরণ?"

তারা (১১)'র মত মধ্যস্থদের ওপর বিশ্বাস স্থাপন করেছিলেন। আর এখন হতাশ হয়ে বলছেন, "(১১)'র মত মধ্যস্থরা এই সরকারের ওপর বিশেষ কোন প্রভাব বিস্তার করতে পারে না। এই ব্যাপারে (অ)তে আমাদের ক্ষমতা বাংলার তুলনায় অনেক কম।" বাংলার বন্দীদের যে বীরত্বপূর্ণ সংগ্রাম এবং তার সমর্থনে জাগ্রত যে গণসমর্থন দাবী মানতে সরকারকে বাধ্য করল, তার মধ্যে (ক)'র কমরেডরা শুধু (১১)'র মত মধ্যস্থদের প্রভাবই দেখলেন। যে বন্দীরা দাবী স্বীকৃত হবার আগে নড়তে অস্বীকার করলেন, তাদের কঠোর প্রতিজ্ঞা (ক) কমরেডদের নজরে পড়ল না; জনগণের যে বিক্ষোভ এবং জেলের ভেতরে ও বাইরে অগুন্তি পুরুষ এবং মেয়ে কমরেডের আত্মদান সরকারকে কাঁপিয়ে দিল, সেটা তারা দেখলেন না। তারা শুধু দেখলেন মধ্যস্থের প্রভাব। নিজেদের কঠিন প্রতিজ্ঞা বা নিজেদের শ্রেণী কিংবা জনগণের ওপর তারা বিশ্বাস রাখেননি। তাই ধর্মঘটের ১২ দিনের মধ্যেই তারা নিরাশ হয়ে পড়লেন এবং কাপুরুষের মত আত্মসমর্পণ করার পরামর্শ দিলেন। এবং সেই কাজকে সমর্থন করার জন্য বিবৃতি দিলেন:

"এই সংগ্রাম শুরু করার আগেও নিশ্চয়ই আমরা একথা বিশ্বাস করিনি যে, এই সরকার আমাদের সঙ্গে কোন আপোষ করবে।"

(খ)তে অপেক্ষাকৃত বেশী দৃঢ়তা এবং শৃংখলার সঙ্গে অনশন ধর্মঘট শুরু হয়, যদিও সমস্ত মেয়ে কমরেডদের বাদ দেবার প্রস্তাব করা তাদের অন্যায় হয়েছিল। মেয়ে কমরেডরা সঠিকভাবেই এই প্রস্তাবের বিরোধীতা করেন।

কিন্তু এখানেও অনশন ধর্মঘটকে এভাবে দেখা হয়নি যে, এটা কঠিন জীবন-মরণের লড়াই এবং রাজবন্দীদেরই প্রধানত লড়তে হবে, এবং এমনভাবে লড়তে হবে যাতে বাইরের জনগণের মধ্যে সরকারের বিরুদ্ধে তীব্রতম বিক্ষোভ জাগে এবং কমিউনিস্টদের মৃত্যুভয়হীন সাহস আর আপোষহীন দৃঢ়তা শ্রেষ্ঠ প্রশংসা অর্জন করে। পি-বি'র একজন সদস্য, একজন কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্য এবং (অ)'র নির্ভীক শ্রমিক শ্রেণীর সুপরিচিত নেতাদের অধিকাংশ (খ)তে ছিলেন। আশা করা গিয়েছিল যে তারা নিজেদের শ্রেণীর লড়াইয়ের ঐতিহ্যকে আরও উজ্জল করে তুলবেন।

কিন্তু তারা ১২ দিন লড়াইয়ের পরই ভয় পেয়ে গেলেন। জোর করে খাওয়ান সাময়িকভাবে বন্ধ হয়েছে দেখে এবং একেবারে শেষ অবস্থার আগে জোর করে খাইয়ে না দেবার হুকুম জারি হয়েছে শুনে তারা মৃত্যু অথবা চিরদিনের জন্য পঙ্গু হবার আশংকায় আতংকিত হয়ে পড়লেন। তাদের ধারণা হোল যে এটা সরকারের একটা শয়তানী চক্রান্ত। এই বিষয়ে দৃষ্টি আকর্ষণ করে তারা লিখলেন:

"জেল কর্তৃপক্ষ যদি না খাওয়াবার এই শয়তানী নীতি চালু রাখে তাহলে আমাদের পিছু হঠতে হবে। এই অবস্থায় ২১শের পর সংগ্রাম চালিয়ে যাবার অর্থ হবে এই যে, আমাদের কমরেডদের চিরদিনের জন্য পঙ্গু করে দেবার ঝুঁকি নিতে হবে, তাছাড়া ধর্মঘট সংগ্রাম ভেঙ্গে পড়ার ঝুঁকিও দেখা দিবে……

"…পিছু হঠতেই যদি হয়, তবে বেশ আগে থেকেই তার জন্য ব্যবস্থা করতে হবে…

"যারবেদা থেকে এই প্রস্তাব দিয়েছে: বর্তমান অবস্থা যদি চলতে থাকে এবং পিছু হঠা দরকার হয়ে পড়ে তাহলে আমাদের (গ)র (১১) এবং (১২)র মত লোকদের কাছে যেতে হবে এবং বাইরের জনসাধারণ ব্যাপারটা গ্রহণ করেছে, তারাই আন্দোলন চালিয়ে যাবে এই যুক্তি দিয়ে তাদের এবং রাজবন্দী সাহায্য কমিটির তরফ থেকে অনশন ধর্মঘটকারীদের কাছে ধর্মঘট বন্ধ করার জন্য একটি আবেদন পাঠাবার ব্যবস্থা করতে হবে…"

"এখন আমাদের মনে হয় যে, রাজবন্দী-সাহায্য-কমিটি এবং সম্ভব হোলে নাগরিক-স্বাধীনতা-কমিটির তরফ থেকে রাজবন্দীদের অনশন ত্যাগ করতে অনুরোধ করে তারগুলি ২১শে তারিখেই সমস্ত জেলে পৌঁছন দরকার। খসে-পড়া, হতাশা এবং কমরেডদের স্বাস্থ্যের গুরুতর ক্ষতি এড়াবার জন্যে এটা অবশ্য কর্তব্য এবং নিতান্তই অপরিহার্য্য।"

১৬ তারিখ তারা সরকারের প্রতিশোধমূলক মনোভাবের খবর আবার জানালেন। কিছু কিছু ধর্মঘটির অনশন ত্যাগের খবর দিলেন এবং লিখলেন, "২১শের পর আর একদিনও চালান সম্ভব নয়" এবং "অনশন ভঙ্গ করার জন্য আবেদন ২১শে তারিখের মধ্যে পৌঁছন চাই, তারপরে কিছুতেই নয়। সম্ভব হোলে একদিন আগেও আসতে পারে কিন্তু কোনক্রমেই ২১শের পরে একদিনও নয়।"

এ কথা খুবই স্পষ্ট যে লড়াইকে আরও তীব্র করার প্রশ্ন, আরও আত্মত্যাগ করে এবং দৃঢ়তা নিয়ে সরকারের শয়তানী চক্রান্তের বিরুদ্ধে লড়াই চালাবার কথা ঘুণাক্ষরেও তাদের মনে ছিল না। অনশন ধর্মঘটের নেতারা নিজেরাই ভয় পেয়েছিলেন এবং ১৪ই-এর পর থেকে, পিছু হঠার ব্যবস্থা ছাড়া আর কিছুই করেননি!

কমিউনিস্টদের পথ

২০ দিন অনশন ধর্মঘট করে থাকা সত্যিই এক ভীষণ যন্ত্রনা। কিন্তু ব্যাথার ভয়ে কমিউনিস্টরা কবে লড়াই করতে ভয় পেয়েছে? একথা ঠিক যে বাইরের নেতাদের সংস্কারবাদী দৃষ্টিভঙ্গীর জন্য বাইরের আন্দোলন সাময়িকভাবে একটা ধাক্কা খেয়েছিল। কিন্তু কমিউনিস্ট যোদ্ধাদের কি তাতে হতাশ হওয়া উচিত? বন্দীদের লড়াই কি প্রধানত বাইরের ওপর নির্ভরশীল হওয়া উচিত? অবস্থা চরমে না পৌঁছন পর্য্যন্ত লড়াই চালিয়ে যাওয়াই কি তাদের কর্তব্য নয়? কেউ কেউ লড়াই ছেড়ে পালাচ্ছিল একথাও ঠিক। কিন্তু সামান্য কয়েকজন বিশ্বাসঘাতক বা দ্বিধা-

অন্তের আনুকূল্যতায় মূল কমিউনিস্ট যোদ্ধার হার স্বীকার বা মনোবল হারান কি করে?

জোর করে খাওয়ান বন্ধ করার, চিরদিনের মত অঙ্গহানি এবং এমনকি কয়েকজনের জীবন হারাবার বিপদ নিশ্চয়ই ছিল। কিন্তু অনশন ধর্মঘট সংগ্রামে সে সম্ভাবনা সব সময়ই থাকে। সেই সব সম্ভাবনা অগ্রাহ্য করেই লড়াই চরমে ওঠে এবং বাইরের ব্যাপকতম আন্দোলন জাগিয়ে তোলে। বাংলার বিভিন্ন জেলে শ্রমিক, মহিলা এবং অন্যান্য কমরেডরা তাদের শেষ শক্তিটুকু দিয়েও জোর করে খাওয়ানের প্রতিরোধ করেছিলেন এবং সেই অবসন্ন অবস্থায় প্রহার পর্যন্ত সহ্য করেছিলেন। আর, জোর করে খাওয়ান বন্ধ করে দেবে এই সম্ভাবনাতেই কি আমাদের (খ) কমরেডদের ভয় পাওয়া উচিত হয়েছে? (অ)র বাড়দার কমরেড যখন তার নেতাদের সমর্থনে ফাঁসিমুখে মৃত্যু বরণ করে নিয়েছিলেন, তখন যদি তিনি শুনতেন যে তার নেতারা নিজেদের মধ্যে কয়েকজনের মৃত্যু বা অঙ্গহানির আশংকায় ভয় পেয়ে গেছেন, তাহলে তিনি কি ভাবতেন?

জেল নেতৃত্বের কাপুরুষোচিত আপোষকামী মনোভাব এবং ৮ই-এর পর আবার আন্দোলন সুরু করার ব্যাপারে (গ)'র ব্যর্থতার ফলে সরকার কয়েকজনকে মরণের মুখে ঠেলে দেবার শয়তানী চক্রান্ত কাঁদবার সাহস পায়। মৃত্যু অগ্রাহ্য করে তার এই চ্যালেঞ্জ গ্রহণ করাই ছিল এই চক্রান্তের মোকাবিলা করার পথ। দু'একজনের মৃত্যু সত্ত্বেও, দৃঢ়ভাবে ধর্মঘট চালিয়ে গেলে (১৩) কেঁপে উঠত, বাইরের উত্তেজনা আগুনের মত জ্বলে উঠত, এবং (১৩)কে হার মানতে হোত। সেইদিন থেকে আজ পর্যন্ত সরকারের বর্বরতা নিশ্চয়ই বেড়েছে। কিন্তু তখনকার অবস্থায় তাদের নিশ্চয়ই শান্তি প্রতিষ্ঠার জন্য প্রস্তাব করতে হোত।

জেলের মধ্যে সংগ্রাম

জেলের মধ্যেকার জীবন এবং সংগ্রাম সম্পর্কে সংস্কারবাদী দৃষ্টিভঙ্গী থেকেই, মূলতঃ, কতকগুলি ভুলধারণা দেখা দেয়। এবং সেই সব ভুল ধারনা থেকেই অনশন ধর্মঘট এবং জেলের বিভিন্ন ধরণের সংগ্রাম সম্পর্কে বিশ্বাসঘাতকতা এবং দ্বিধা জন্ম নেয়।

কিছু কমরেড মনে করেন যে, একবার জেলে পৌঁছলেই তারা অন্ততঃ সাময়িকভাবে দেশের শ্রেণীসংগ্রাম থেকে দূরে চলে গেলেন এবং সে সময়টা তারা বিশ্রাম নিয়ে এবং পুঁথিগত শিক্ষালাভ করে উপভোগ করতে পারবেন। পশ্চিম বাংলার জেল কমরেডদের প্রতি লেখা পি বি নোটে সঠিকভাবেই এই সংস্কারবাদী ধারণা সম্পর্কে সতর্ক করে দিয়ে বলা হয়েছে:

"একজন কমিউনিস্ট যেখানেই থাকুক, কারখানাতেই হোক, ক্ষেতেই হোক, রাস্তাতেই হোক, আদালতেই হোক আর জেলেই হোক, সর্বত্রই সে শ্রমিক শ্রেণীর জন্যে, পার্টির জন্যে, সমস্ত মেহনতী জনগণের জন্যে নিরলস যোদ্ধা। অত্যাচারী শাসক শ্রেণীর বিরুদ্ধে সে আপোষহীন যোদ্ধা। জেল তার কাছে বিশ্রামের শিবির নয়, আর একটা লড়াইয়ের ময়দান, সবচেয়ে কঠিন লড়াইয়ের ময়দান। জেলের মধ্যেও তাকে লড়াই চালিয়ে যেতে হবে।"

কিন্তু সংস্কারবাদী সংগ্রামবিরোধী মনোভাব নানা ভাবে বেঁচে থাকে।

দ্বিধাগ্রস্তদের সাধারণ ধারণাটা হোল এই রকম: আন্দোলনের অগ্রণী বাহিনী এবং সবচেয়ে গুরুত্বপূর্ণ কর্মীরা জেলের মধ্যে রয়েছেন। সুতরাং একই সঙ্গে বাইরে সরকারকে বাধ্য করার মত একটা বিরাট আন্দোলন বা বিক্ষোভ না থাকিলে, এমন বাছাই করা লোকদের ওপর জীবন হারাবার বা পঙ্গু হয়ে যাবার ঝুঁকি চাপিয়ে দেওয়া উচিত নয়। অবশ্য, অনশন ধর্মঘট বা অন্য কোন আত্মরক্ষামূলক উপায়ে জেলের অবস্থার বিরুদ্ধে বিক্ষোভ দেখাবার জন্য কিছু প্রতিরোধ করা যেতে পারে, কিন্তু এসবই বাইরের আন্দোলনের ওপর নির্ভর করে। তাছাড়া, জেলের ভেতরকার লড়াইয়ে বেশী কর্মী হারাতে না হয়।

তারা ভুলে গেছেন যে, জেলও একটা লড়াইয়ের ময়দান। সরকার তার শ্রেণী-যুদ্ধ লড়বার জন্যই শ্রেণী-বিভাগের ব্যবস্থা করে, বন্দীদের ওপর শারিরীক, মানসিক এবং অন্যান্য অত্যাচার চালায়। শ্রেণী-সংগ্রামের বন্দীদের সংখ্যা ক্রমেই বাড়ছে। তাদের ভয় দেখিয়ে, তাদের মনোবল ভেঙ্গে অথবা তাদের ওপর প্রতিশোধ নিয়ে বাইরের আন্দোলনকেও দুর্বল করাই সরকারের উদ্দেশ্য। বাইরে থেকে সাড়া যাই হোক না কেন, জেলের মধ্যে শ্রেণী-সংগ্রামের বন্দীদের এই নীতির বিরুদ্ধে প্রাণপণ লড়াই চালাতে হবে। কোন কারখানার শ্রমিকরা যখন ধর্মঘট করেন বা কতদিন ধর্মঘট চলবে তা ঠিক করেন, তখন তারা বাইরের সমর্থনকেই বড় বলে মনে করেন না। প্রধানত নিজেদের শক্তির ওপর নির্ভর করে, নিজেদের টিঁকে থাকার ক্ষমতার ওপর নির্ভর করেই তারা লড়েন। অবশ্য দু'একজন দ্বিধা দেখাতে পারে কিংবা হয়ত কয়েকজনকে প্রাণ দিতেও হতে পারে, কিন্তু অধিকাংশের লড়াই চালিয়ে যাবার ক্ষমতার ওপরই লড়াইয়ের শক্তি নির্ভর করে। মৃত্যু বা অঙ্গহানির আশংকায় ভয়ে দীন হয়ে যাওয়া কমিউনিস্ট কর্মীদের শোভা পায় না। বাইরে আমাদের কর্মীরা এবং সাধারণ মেহনতী মেয়ে-পুরুষ প্রতিদিন জীবন দিচ্ছেন। জেলের ভেতরকার কর্মীদের বাঁচিয়ে রাখার জন্য বিশেষ ব্যবস্থা করার কোন কারণ নেই।

বাইরে শ্রেণী-সংগ্রাম যতই তীব্র হচ্ছে, সরকার শ্রেণী-সংগ্রামের বন্দীদের ওপর বর্বর আক্রমণ বাড়াবার যতই চেষ্টা করছে, ততই তার স্বরূপ আরও প্রকাশ হয়ে যাচ্ছে। সে আরও বিচ্ছিন্ন হয়ে পড়ছে। প্রদেশের বাইরে স্থানান্তর করা সম্পর্কে সাম্প্রতিক অভিযান, চুক্তি পালন না করা, এবং জেলের মধ্যে বন্দীদের গুলি করে মারা—এইসব ঘটনা থেকে সেকথা আরও স্পষ্ট হয়ে উঠেছে। এর বিরুদ্ধে দৃঢ়পণ এবং অবিরাম লড়াই চালাতে হবে। এবং বন্দীদেরই সে লড়াইয়ে প্রথম দায়িত্ব নিতে হবে। এসময় যে কোন দ্বিধা বা সংস্কারবাদী মনোভাবের অর্থ হবে শ্রমিক শ্রেণীর প্রতি বিশ্বাসঘাতকতা এবং শ্রেণী শত্রুর কাছে আত্মসমর্পণ।

আত্মসমর্পণের পরের ঘটনা

পাংলা, ভেলোর এবং অন্যান্য জায়গার বন্দীদের অপূর্ব লড়াইয়ে অনুপ্রাণিত হয়ে (অ)তেও আজকাল এ সম্পর্কে চেতনা বাড়ছে। তার প্রমাণ—আই-জি'র পরিদর্শনের সময় (খ)তে বিক্ষোভের প্রস্তুতি, (ঘ)তে (১৭)'র বিরুদ্ধে জঙ্গী বিক্ষোভ এবং পৃথক করার আগে স্থানান্তরের বিরুদ্ধে লড়াইয়ে (ঝ)'র কমরেডদের মৃত্যুহীন সাহস—এই লড়াইয়ে দু'জন কমরেড প্রাণ দিয়েছেন।

তা সত্ত্বেও, সংগ্রাম এবং সংগ্রামের রূপ সম্পর্কে জেল-কমরেডদের মধ্যে বেশ কিছুটা ভ্রান্ত ধারণা এবং দ্বিধার ভাব রয়েছে। (খ)'র দুজন কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্য এবং তাদের কমরেডরা সবাই গত অনশন ধর্মঘটের সময় নিজেদের গাফিলতির সমালোচনা গ্রহণ করতে অস্বীকার করেছেন। তারা বলেছেন যে, "অনশন ধর্মঘট প্রত্যাহার করাটা কাপুরুষের কাজ হয়েছে, এই দাবীকে তারা মিথ্যা এবং দায়িত্বজ্ঞানহীন বলে মনে করেন।"

এইরকম মনোভাব থাকার ফলে স্বভাবতই তারা এখনও প্রস্তাবটা নতুন লড়াই অথবা লড়াইয়ের নতুন কায়দা সম্পর্কে দ্বিধার পরিচয় দিচ্ছেন। ২রা আগষ্ট সমস্ত জেল কমরেডদের কাছে লেখা এক চিঠিতে (অ)'র (খ) নেতারা জানিয়ে দেন যে, সরকার সমস্ত প্রথম শ্রেণীর বন্দীদের (ক)তে এবং দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীদের (খ)তে এনে জড়ো করতে চায়; তাদের উদ্দেশ্য হচ্ছে নেতাদের কাছ থেকে শ্রমিক-কৃষক বন্দীদের পৃথক করা, বন্দীদের মনোবল ভাঙ্গা এবং (ঞ)তে স্থানান্তরের জন্য জমি প্রস্তুত করা। এইসব কারণে সার্কুলারে বন্দীদের বিভিন্ন জেলে স্থানান্তর প্রতিরোধ করার ডাক দেওয়া হয়। এই ধরণের স্থানান্তরের বিরুদ্ধেই (ঝ)'র কমরেডরা রক্ত দিয়ে লড়েছিলেন। সার্কুলার পাবার আগেই তারা এইভাবে লড়েছিলেন। এর থেকেই বোঝা যায় তারা পশ্চিমবাংলা, ভেলোর এবং কুড্ডালোরের সংগ্রাম থেকে কিভাবে শিক্ষা গ্রহণ করেছিলেন, সরকারী নীতি সম্পর্কে সঠিক বিপ্লবী ধারণা এবং বিপ্লবী বীরত্বকে তারা কিভাবে মিলিয়েছিলেন তাও এ থেকে বোঝা যায়।

দুর্বলতা থেকেই গেল

একজন পি-বি সদস্য এবং একজন কেন্দ্রীয় কমিটির সদস্যের নেতৃত্বে, (খ)'র কমরেডরা কিন্তু (ঝ) সংগ্রামের প্রয়োজনীয়তা সম্পর্কেই প্রশ্ন তুললেন। তখনও পর্যন্ত বন্দীদের (খ)তে স্থানান্তর করা হচ্ছে, সুতরাং (ঞ)তে স্থানান্তরের ব্যাপারটা জনসাধারণ তখনও সুনিশ্চিত ভাবে জানে না। তাদের মতে; এমন অবস্থায় স্থানান্তরের প্রতিরোধ করতে মূল্যবান জীবন নষ্ট করা বুদ্ধির পরিচয় নয়। তারা স্পষ্ট বললেন যে, প্রদেশের মধ্যে স্থানান্তরের শারিরীক প্রতিরোধ করা উচিত নয়, তবে প্রতিবাদ করা যেতে পারে।

তারা নিজেরাই এক চিঠিতে জানিয়েছিলেন যে, বোধ হয় (ঞ)তে স্থানান্তরের প্রাথমিক ব্যবস্থা হিসাবে, দ্বিতীয় শ্রেণীর রাজবন্দীদের (ক)তে এবং প্রথম শ্রেণীর রাজবন্দীদের (খ)তে এনে জড়ো করার ব্যবস্থা হচ্ছে। তবে দুই শ্রেণীর মধ্যে এই বিভেদ করা, তাদের পরস্পর থেকে পৃথক করা, ভাগ করাটা এমন কিছু গুরুতর ব্যাপার বলে মনে হয় না—তারা একে প্রতিরোধ করার বিরুদ্ধে। সরকারের শ্রেণীবিভেদ নীতি এবং তাকে স্থায়ী করার চেষ্টার কাছে আত্মসমর্পণ ছাড়া একে আর কি বলা যেতে পারে? বর্তমানে তারা যে আত্মসমর্পণ করছেন, তাকে ঢাকার জন্যেই তারা (ঞ)তে স্থানান্তরের চেষ্টায় সময় প্রতিরোধের কথা বলেছেন।

লড়াইয়ের কারণ জনগণের কাছে পরিষ্কার থাকা সম্পর্কে তারা অনেক কিছু লিখেছেন এবং তারই ভিত্তিতে (ঝ)'র কমরেডদের কাজের তীব্র নিন্দা করেছেন। কিন্তু তারা যদি বলতেন যে তারা দুই শ্রেণীকে পৃথক করার বিরুদ্ধে লড়ছেন তাহলে কি কারণটা জনসাধারণের কাছে পরিষ্কার হোত না? তারা যদি (অ)'র শ্রমিক শ্রেণীর কাছে বলতেন যে, তাদেরই ভাই, তাদেরই সংগ্রামের নেতাদের চিরদিনের জন্য দ্বিতীয় শ্রেণীতে রাখার ব্যবস্থা হচ্ছে, তাদের মিলিত সংগ্রামের শক্তিকে বিচ্ছিন্ন করার চেষ্টা হচ্ছে—তাহলেও কি (অ)'র শ্রমিক শ্রেণী লড়াইয়ের কারণ বুঝতো না। (ঞ)তে ছাড়া অন্য কোন জায়গায় স্থানান্তরের বিরুদ্ধে লড়াইয়ের প্রয়োজনীয়তা (ত) বুঝতে পারেনি। তাদের এই বুঝতে না পারাকে লড়াই শুরু না করার অজুহাত হিসাবে দেখান হয়েছে। কিন্তু সেই (ত)রাও কি এই সহজ ব্যাপারটা বুঝতো না? তাছাড়াও, কয়েকজনের দুর্বলতার জন্যে বিপুল সংখ্যাধিক বন্দীদের কেন আত্মসমর্পণ করতে হবে?

এখনও সকলে প্রস্তুত হয়নি, এখনও গণসমর্থন জাগান যায়নি ইত্যাদি যুক্তি দিয়ে সংস্কারবাদীরাই যতদিন পর্যন্ত সম্ভব লড়াই স্থগিত রাখে। আমাদের (খ) কমরেডরাও তাদেরই মত ব্যবহার করছেন।

"আত্মরক্ষামূলক প্রতিরোধে"র তত্ত্ব

তাদের মতেই যদি কখনও প্রতিরোধ করা দরকার হয় এবং যখন হবে, তখন প্রতিরোধের ধরণ কি হবে সে সম্পর্কে পর্যন্ত তারা জোশীপন্থী যুক্তি হাজির করেছেন।

তারা বলেছেন যে, শারিরীক প্রতিরোধ যখন দরকার হয়ে পড়বে তখনও সেটা "আত্মরক্ষামূলক প্রতিরোধ হওয়া উচিত।" আত্মরক্ষামূলক প্রতিরোধকে তারা এইভাবে ব্যাখ্যা করেছেন:—

"আমরা এক জায়গায় জমায়েৎ হবো, শ্লোগান দেব এবং পরস্পর থেকে আলাদা হতে কিংবা লক-আপে ঢুকতে অস্বীকার করব। ওরা যদি আমাদের আক্রমণ করে তাহলে আমরা খালি হাতেই আত্মরক্ষা করব, পারলে ওদের লাঠি কেড়ে নেব ইত্যাদি। কিন্তু আমরা ইটপাথর জড়ো করে পুলিশের ওপর ছুড়ব না। অবশ্য যখন সত্যিই সংঘর্ষ বেধে যায় এবং ওরা বিশেষ বর্ব্বরের মত ব্যবহার শুরু করে, তখন শুধু আত্মরক্ষার জন্যেই হাতের কাছে যা পাওয়া যায় তাই নিয়ে পাল্টা আঘাত করা সত্যিই দরকার হয়ে পড়ে। .....কিন্তু প্রশ্ন হচ্ছে, প্রথম থেকেই আমাদের একটা অন্য রকমের পরিকল্পনা করা দরকার কিনা, পাথর প্রভৃতি জোগাড় করা, সেই পাথর ছুড়ে পুলিশকে আমাদের ব্যারাকের কাছে আসতে না দেওয়া, ওদের আক্রমণের জন্যে অপেক্ষা না করে নিজেরাই উদ্যোগ নেবার ব্যবস্থা করা দরকার কিনা।...

"...জেলের মধ্যে আমরা শুধু অস্ত্রবলেই দুর্বল নই

সংখ্যায়ও [illegible] জেলের মধ্যে আক্রমণ নেবার ব, সরকার মত মোকাবিলা করারও উপায় নেই। সুতরাং সেখানে এই ধরণের লড়াই করতে যাওয়ার একমাত্র ফল হবে এই যে, আমাদের পক্ষে ভীষণ ক্ষতি হবে অথচ শত্রুর গায়ে দুএকটি আঁচড় লাগা ছাড়া তার আর কোন ক্ষতিই হবে না। (ঝ)তে গুলিচালনার বর্ব্বরতা থেকেই বোঝা যায় যে সরকারের উদ্দেশ্য হচ্ছে, আমাদের যত বেশী সংখ্যক সম্ভব কমরেডকে খতম করা অথবা পঙ্গু করে দেওয়া। এই চক্রান্ত সফল করবার সুবিধা হয় এমন কায়দায় লড়াই করা উচিত নয় বলেই আমরা মনে করি।"

এই বন্দীরা নিশ্চয়ই শুনেছেন কিভাবে পশ্চিম বাংলার বিভিন্ন জেলে বন্দীরা লড়েছেন এবং চারটী মূল্যবান জীবন বলি দিতে হয়েছে। তাতে কি সরকারী পরিকল্পনার সুবিধা হয়েছে? না। তার ফলে সরকারের স্বরূপ আরও প্রকাশ হয়ে গেছে, সে আরও বিচ্ছিন্ন হয়ে পড়েছে। (ঝ)'র কমরেডরা স্বাধীনতার প্রতিরোধ করতে গিয়ে কিভাবে দুটি জীবন দিয়েছেন তাও তারা শুনে থাকবেন। তার ফলে কি আমাদের পার্টি বা জনগণ হতাশ হয়ে পড়েছে, অথবা সরকার কি তার ফলে আরও শক্তিশালী হয়েছে? না। তার ফলে বরংচ পার্টির মধ্যে নতুন উৎসাহ জেগে উঠেছে, জনগণের বিক্ষোভ আরও বেড়েছে। পশ্চিম বাংলা এবং (ঝ)র কমরেডরা যদি জীবন হারাবার কিংবা পঙ্গু হয়ে যাবার ভয়ে কাবু হয়ে যেতেন তাহলে এসব কিছুই হোত না। কিন্তু (খ)র কমরেডরা এই আশংকার অজুহাতেই কাপুরুষের মত অনশন ধর্ম্মঘট প্রত্যাহার করেছেন এবং এখন জঙ্গী প্রতিরোধ এড়িয়ে যাচ্ছেন।

সেই জন্যেই তারা পাথর-লাঠি জড়ো করবেন না, সেসব ছুঁড়বেন না, ব্যারিকেড বাঁধবেন না, কারণ তাতে "গুলি-চালনা অপরিহার্য হয়ে পড়ে"। তারা শুধু আক্রান্ত হলে পর খালি হাতে প্রতিরোধ করবেন—এরই নাম "আত্মরক্ষামূলক প্রতিরোধ"।

পি-সি-যোশী তার কুখ্যাত পত্র-অর্ঘ চিঠিতে পরামর্শ দিয়েছিল যে, কৃষকদের ওপর আক্রমণকারী পুলিশকে তাদের স্বাভাবিক কর্ত্তব্য—মার্চ, গ্রেপ্তার প্রভৃতি—পালন করতে দেওয়া উচিত; একমাত্র তারা খুন, বলাৎকার বা আগুন লাগাতে সুরু করলে তখনই প্রতিরোধ করা যেতে পারে! "আত্মরক্ষামূলক প্রতিরোধ" জনসাধারণের কাছে লড়াইয়ের কারণ পরিষ্কার করে দেওয়া প্রভৃতি সম্পর্কে এইসব অর্থহীন কথা যোশীর সেই পত্র-অর্ঘ চিঠির পচা পুনরুক্তি ছাড়া আর কি?

বাইরের আন্দোলনের রূপ, অবস্থা এবং বেগের সঙ্গে খাপ খাইয়ে জেলের মধ্যে প্রতিরোধের ধরণ ঠিক করা দরকার এই যুক্তিতে তারা লাঠি যোগাড় করা এবং পুলিশের ওপর পাথর ছোঁড়ায় আপত্তি করেছেন। বাইরে কি পুলিশের বিরুদ্ধে লাঠি পাথর ব্যবহার করা হচ্ছে না? বাইরে সমর্থন-আন্দোলনে যতক্ষণ না পাথর ছোঁড়া সুরু হয়, ততক্ষণ জেলের মধ্যে পুলিশের ওপর পাথর ছোঁড়া কি বন্ধ রাখতেই হবে?

এসব হাস্যকর যুক্তি। তাদের দৃষ্টিভঙ্গীর মূলকথা হচ্ছে: যতদিন সম্ভব লড়াই ঠেকিয়ে রাখ এবং যত কম সম্ভব প্রতিরোধ কর। পাকা সংস্কারবাদীরা চিরদিনই এইভাবে কাজ করে। শ্রেণী-সংগ্রামকে অস্বীকার করা এবং কাপুরুষতা থেকেই এসব জিনিষ জন্ম নেয়। এবং শেষ হয় আত্মসমর্পণে।

কমরেড (৮)এর ব্যবহার

অনশন ধর্ম্মঘট পরিচালনার ব্যাপারে এবং তার পরেও কমরেড (৮)এর ব্যবহার অত্যন্ত নিন্দনীয় হয়েছে। পি-বি এ ব্যাপারে নজর না দিয়ে পারে না। কমরেড (৮)এর নেতৃত্বে [ক]'র কমরেডরা যেসব দুর্ব্বলতার পরিচয় দিয়েছেন সেগুলির বিস্তৃত বিবরণও পরে দেওয়া হয়েছে। তাছাড়াও, ব্যক্তিগতভাবে কমরেড [৮] গুরুতর দুর্ব্বলতা দেখিয়েছেন। [ক]র কমরেডরা যুক্তভাবে অনশন ধর্ম্মঘটের যে নোটিশ দেন তাতে তিনি সই করেননি। [১৫]র কাছে এক পৃথক স্মারকপত্র পাঠিয়ে তিনি যুদ্ধ-সংক্রান্ত প্রত্যেকটা নীতি ভঙ্গ করেছেন। এবং সেই চিঠিতে তিনি শ্রেণীবিভেদ প্রায় মেনে নেন। আগে রাজবন্দীরা যে ব্যবহার পেত তারই পুনঃপ্রবর্ত্তনের জন্য আবেদন করেছেন এবং নিজের সমর্থনে গান্ধি আর জয়প্রকাশ নারায়ণের দোহাই দিয়েছেন। তার নেতৃত্বে [ক]র লড়াই অন্যান্যদের চেয়ে ৭ দিন পরে সুরু হয়। এর অর্থ অন্যদের পিছন থেকে ছুরি মারা। শোনা গেল যে, তিনিই নাকি অনশন ধর্ম্মঘটিদের লেবু এবং চিনি খেতে পরামর্শ দিয়েছিলেন। তার এমনই স্পর্দ্ধা যে এই লেবু প্রভৃতির জন্য খরচ হিসাবে তিনি পার্টির কাছে ১৭৫ টাকার একটি বিল পাঠান। সংগ্রাম চলাকালে তিনি [১৫]এর কাছে আর একখানা চিঠি লেখেন। সেই চিঠিতে [১৬]র হৃদয়হীনতাকে তিনি মার্জ্জনা করেন, শ্রেণীবিভেদ রদ করার দাবী ফিরিয়ে আনেন। কিন্তু তার চেয়েও দোষের কথা, সেই চিঠিতে ট্রাইবুনালের বিচার মেনে নিতে রাজি হয়ে তিনি সমস্ত লড়াইয়েরই সর্ব্বনাশ করেন।

এর পরের ঘটনাবলী থেকে, কিংবা পশ্চিম বাংলা, ভেলোর এবং কুড্ডালোরের বন্দীদের অপূর্ব্ব সংগ্রাম থেকেও তিনি কিছুই শেখেননি। (ক)র জেল-কমিটি জানিয়েছেন যে, "(১৮) যখন [খ]তে যায় তখন তার সঙ্গে কমরেড [৮]এর ব্যক্তিগত আলাপ হয়। [১৮] প্রস্তাব করে যে প্রথম শ্রেণীর বন্দীদের (খ)তে আনা হোক…এবং দ্বিতীয় শ্রেণীদের (ক)তে রাখা হোক। এই ব্যবস্থা হোলে জেল কর্ত্তৃপক্ষের পক্ষে রাজবন্দীদের দেখাশোনা করার সুবিধা হবে।…

"সরকারের কাছে তার চিঠিতে কমরেড (৮) প্রস্তাব করেন যে, (খ)তে নয়, সমস্ত প্রথম শ্রেণীর বন্দীদের [ক]তে নিয়ে আসা হোক, কারণ সেখানে আবহাওয়া এবং থাকার ব্যবস্থা [খ]র চেয়ে ভাল।"

প্রথম এবং দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীদের পরস্পর থেকে পৃথক করার সরকারী ব্যবস্থার বিরুদ্ধে কমরেড [৮]এর কিছু বলার নেই। বরংচ তিনি যেন সে ব্যবস্থা মেনে নিয়েছেন বলেই মনে হয়। প্রথম শ্রেণীর বন্দীরা ভাল আবহাওয়া এবং থাকার ব্যবস্থাওয়ালা জায়গা পেল কিনা এই তার চিন্তা।

(জ)তে অবস্থিত (গ)এর (থ) কমরেডরা

অনশন ধর্ম্মঘট সংগ্রামের সমর্থনে আন্দোলন পরিচালনায় [গ] কি করেছেন সে সম্পর্কে বিশদ তথ্য বা রিভিউ আমাদের হাতে নেই। তবু, যা রিপোর্ট পাওয়া গেছে তার থেকেই স্পষ্ট বোঝা যায় যে তারা আতংকগ্রস্ত হয়ে পড়েছিলেন, জনগণের ওপর আস্থা হারিয়ে ফেলেছিলেন, বন্দীদের সংগ্রামকে কাপুরুষের মত সংস্কারবাদী কায়দায়

দেখেছিলেন, বিভিন্ন জেল-নেতৃত্বের কাপুরুষোচিত চাপের কাছে আত্মসমর্পণ করেছিলেন এবং একাধিক এমন ভুল করেছিলেন যার ফলে সংগ্রাম ব্যর্থ হয়ে যায়।

সে-ক্ষেত্রে যেকেই (অ)র শ্রমিক শ্রেণীর মধ্যে বন্দীদের সংগ্রামের সমর্থনে সাড়া বাড়তে থাকে। সভা এবং মিছিলে অংশগ্রহণকারীদের বিপুল সংখ্যা দেখেই একথা বোঝা যাচ্ছিল; কিন্তু বন্দীদের সমর্থনে সাধারণ ধর্মঘটের স্লোগান প্রথম থেকেই দেওয়া হয়েছিল বলে মনে হয় না। (১৩) জানতে পারলে ধর্মঘটের বিরুদ্ধে ভীষণ দমননীতি সুরু করবে এই যুক্তিতে সাধারণ ধর্মঘট ভবিষ্যতের জন্য বন্ধ রাখা হয়।

দ্বিতীয় শ্রেণীর রাজবন্দীরা সরাসরি (অ)র শ্রমিক শ্রেণী থেকে এসেছেন। তাদের অবস্থা সম্পর্কে বিশদ প্রচার করার কাজেও অবহেলা করা হয়। কংগ্রেস সরকার এই দুর্বলতার সুযোগ নিতে দেরী করেনি। প্রথম শ্রেণীর রাজবন্দীদের যে সব সুবিধা এবং "বিলাসিতা"র ব্যবস্থা করে দেওয়া হয়েছে সেই কথা প্রচার করে সে লোককে ভোলাবার চেষ্টা করে। এই ঘটনার পর, অনশন ধর্মঘটের তৃতীয় সপ্তাহে, দ্বিতীয় শ্রেণীর বন্দীদের অবস্থা সম্পর্কে তথ্য দিয়ে প্রচার সুরু হয়।

এই তথ্য দিয়ে প্রচার না করা, এবং সাধারণ ধর্মঘটের স্লোগান প্রচার না করা থেকেই বোঝা যায় যে, সংগ্রাম নিরস্তর কঠিন হবে সে সম্পর্কে (গ)'র কোন ধারণা ছিল না, এর থেকে আরও বোঝা যায় যে, ধর্মঘটের আওয়াজ কয়েকদিন গোপন রাখা হোক বা না হোক, সরকার যে কিরকম বর্বর প্রস্তুতি করবে এবং শ্রমিক শ্রেণীর কাছে এই বর্বরতার স্বরূপ প্রকাশ করে দিয়ে তাদের এর বিরুদ্ধে লড়াইয়ের জন্য জাগানই যে সরকারকে পরাস্ত করার একমাত্র উপায়—সে সম্পর্কেও (গ)'র কোন ধারণা ছিল না, এই জিনিষটা না বুঝে (গ) তাদের ধর্মঘটের আহ্বানে স্বতস্ফূর্ত সাড়ার ওপরই অনেক পরিমাণে নির্ভর করেছিলেন।

৮ তারিখের শোভাযাত্রায় ৫০ জন কর্মী গ্রেপ্তার হওয়া এবং পুলিশের তৎপরতা বেড়ে যাওয়ার ফলে (গ) স্বভাবতই শ্রমিকদের থেকে প্রায় সম্পূর্ণ বিচ্ছিন্ন হয়ে পড়ে। ১১ তারিখে ধর্মঘটের ডাক কেবল ইস্তাহার মারফৎই দেওয়া হয়, শ্রমিকদের সঙ্গে প্রত্যক্ষ সংযোগ বা আন্দোলন ছিল না বললেই চলে, পার্টি কমরেডরা ধর্মঘট সুরু করা তো দূরের কথা, সেই কারণেই ধর্মঘট ব্যর্থ হয়।

এই অবস্থা হওয়ার কারণ, ১১ তারিখের পর (গ) (অ)র শ্রমিক শ্রেণীর ওপর সমস্ত বিশ্বাস হারায় এবং আতঙ্কগ্রস্ত হয়ে পড়ে। (গ)'র (৪) এবং (১৯) প্রস্তাব করেন যে, হয় বন্দীদের অনশন ত্যাগ করতে বলা হোক, নয়ত পিছু-হঠা ঢাকার জন্য (১১)কে দিয়ে মধ্যস্থতা করাবার চেষ্টা করা হোক। এ থেকেই বোঝা যায় যে, বন্দীদের সংগ্রাম সম্পর্কে তাদের ধারণাও ছিল জেল-নেতৃত্বের ধারণার মতই সংস্কারবাদী। কয়েকজন কমরেড প্রাণ হারাবেন অথবা চিরদিনের মত পঙ্গু হয়ে যাবেন এই আশংকায় তারাও সমান ত্রস্ত হয়ে উঠেছিলেন! (অ)'র সংগ্রামী শ্রমিক শ্রেণীর আত্মমর্যাদাজ্ঞানও হারিয়ে তারা মুখরক্ষার জন্য (১১)'র পায়ে পড়ার পরামর্শ দেন।

এই প্রস্তাব অগ্রাহ্য করে (অ)তে অবস্থিত (খ) কমরেডরা ঠিকই করেছিলেন। কিন্তু তাদেরও মনে ঐ একই দুর্বলতা ছিল। ধর্মঘট প্রত্যাহার করার জন্য (ক) এবং (খ) যে চাপ দিচ্ছিল তাতে তারাও সাহস হারিয়ে ফেলেন। সেই জন্যেই, যে চিঠিতে তারা [গ]র প্রস্তাব নাকচ করেন, সেই চিঠিতেই আবার নিজেরা লিখলেন, "এক সপ্তাহের মধ্যে শ্রমিক এবং জনসাধারণকে জাগাবার আর একটা বড় রকমের চেষ্টা করা যাবে। এই মুহূর্তে জেলের কমরেডদের আর এক সপ্তাহ [লড়াই] চালিয়ে যেতে না বলার অর্থ একটা বিরাট সংগ্রামের প্রতি চরম বিশ্বাসঘাতকতা।" এর অর্থ, তারাও মরণের আশংকায় ভয় পেয়েছিলেন; তারাও অনশন ধর্মঘটকে দেখেছিলেন, আহত না হতে হয় এমন একটা নরম বিক্ষোভ প্রদর্শন হিসাবে, তবে হিসাব করে দেখেছিলেন যে গুরুতর রকমে আহত না হয়েও বন্দীরা আর এক সপ্তাহ চালিয়ে যেতে পারবে।

সেই জন্যেই, পরের দিনই তারা জেলের এবং [গ]র দ্বিধাগ্রস্তদের সুরে সুর মেলালেন। ১৬ তারিখ রাজবন্দীদের কাছে এক চিঠিতে তারা বললেন—রাজবন্দীদের অনশন প্রত্যাহার করতে অনুরোধ করার জন্য ১৮ই এবং ১৯শে প্রত্যেক জেলে শ্রমিক এবং নাগরিকদের প্রতিনিধিদল পাঠান হবে; সুতরাং রাজবন্দীরা যেন আর দু দিনের জন্য অনশন ধর্মঘট চালিয়ে যান। সেই সঙ্গে তারা এক সার্কুলারে সমস্ত ইউনিটকে কমরেডদের দল সংগঠন করে [ক] এবং [খ]তে গিয়ে নেতাদের সঙ্গে দেখা করতে বললেন। সেই সার্কুলারেই তারা সবাইকে জানিয়ে দিলেন যে, বর্তমান অবস্থায় (১৩ যখন চাইছে যে অনশন ধর্মঘটে কিছু কমরেড প্রাণ হারাক) "আমাদের কমরেডদের সময়মত অনশন ভঙ্গ করার উপদেশ দিতে হতে পারে।"

এর অর্থ, ১৬ তারিখেই (অ)র (গ) এবং (খ) কমরেডরা আত্মসমর্পণে সম্মত হয়েছিলেন। শুধু তাই নয় দেশকে এবং পার্টি কমরেড ও দরদীদের সেকথা জানিয়ে পর্যন্ত দিয়েছিলেন। এইভাবে তারা নিজেরাই আন্দোলনের সমস্ত সম্ভাবনা নষ্ট করে দেন।

শুধু তাই নয়, প্রায় এই সময়েই, (খ) কমরেডরা (১১) এবং অনুরূপ মহাত্মদের পিছনে উত্তেজিতভাবে ছুটে বেড়াতে সম্মতি দিয়েছিলেন, এবং (১১) আর তার সাঙ্গপাঙ্গদের নাগরিক কমিটি রাজবন্দীদের দাবী নিয়ে লড়াই চালিয়ে যাবে এই প্রতিশ্রুতিতে ধর্মঘট প্রত্যাহার করার মুখ-বাঁচান ব্যবস্থায়ও তারা সম্মতি দিয়েছিলেন।

আর চূড়ান্ত হল এই যে, (অ)তে অবস্থিত (খ) কমরেডরা পি-বি'র নামের অপব্যবহার করে ১৯ তারিখ জেল-কমরেডদের কাছে পি-বি'র নামে এক চিঠি পাঠান। জেল-কমরেডরা সবাই যেরকম "অটল সাহস, কঠিন দৃঢ়তা, আদর্শ একতা এবং শৃংখলার" সঙ্গে "মহান কমিউনিস্ট পার্টির পক্ষে সত্যই উপযুক্ত" সংগ্রাম চালিয়েছেন তার জন্যে (খ) কমরেডরা তাদের এই চিঠিতে অভিনন্দন জানান। এবং অবিলম্বে তাদের সকলকে অনশন ধর্মঘট শেষ করতে বলেন।

ঠিক জেলের নেতৃত্বের মতই, অবস্থা সম্পর্কে সংস্কারবাদী ধারণা এবং বন্দীদের দাবীর জন্য সংগ্রামকে দেশের তীব্র শ্রেণীসংগ্রামের অংশ বলে বুঝতে না পারার জন্যই (অ)তে অবস্থিত (খ) কমরেডদের এই সব গুরুতর ভুল হয়েছে।

ফ্যাসিবাদ ও গোলামীর সনদ এই
কংগ্রেসী শাসনতন্ত্রকে ধ্বংস কর

জনগণের স্বাধীনতা ও গণরাষ্ট্রের জন্য এগিয়ে চল
—তেলেঙ্গানা ও কাকদ্বীপের পথে।

২৬শে জানুয়ারী ফ্যাসিষ্ট কংগ্রেসী সরকারকে চুড়ান্ত আঘাত করতে—গ্রামাঞ্চলের সর্ব্বহারা ক্ষেতমজুর শ্রেণী নেতৃত্ব নাও।

- হাটে বাজারে সাধারণ ধর্মঘট কর
- হাট-বাজার ক্ষেত-খামার ধর্মঘট করে অচল করে দাও।
- শত্রুর অস্ত্র কেড়ে নিয়ে সশস্ত্র অভিযান চালাও
- শত্রুকে চুড়ান্ত আঘাত করে বিচ্ছিন্ন করে দাও।

শ্রমিক-ক্ষেতমজুর-কৃষক-ছাত্র-শোষিত মধ্যবিত্ত!
হিন্দু-মুসলমান-সাঁওতাল ভাই এবং বোনেরা!

২৬শে জানুয়ারী থেকে কংগ্রেস সরকার যাহা [illegible] হতে নতুন শাসনতন্ত্র চালু করবে। এই শাসনতন্ত্রের উদ্দেশ্য দেশের কোটি কোটি সর্বহারা মানুষকে শক্ত লোহার শেকলে বেঁধে আমেরিকা ও বৃটিশের বুটের তলায় ফেলে দেওয়া। রাইফেল আর বেয়নেট চালিয়ে—জনতার কণ্ঠরোধ করা। সমস্ত মেহনতী মানুষের [illegible]—এই দেশ থেকে [illegible] বাঁচার [illegible] টাটা-বিড়লা-ডালমিয়া মহাজনের মালিকদের পাকা-পোক্তভাবে কায়েম করা।

এই শাসনতন্ত্র আপনাদের সমস্ত অধিকার হরণ করেছে [illegible] আপনাদের উপর নানা নিষেধাজ্ঞা চাপিয়ে দিয়েছে—নিজেদের মিলিত শক্তি দিয়ে আপনারা তার প্রতিটি নিষেধাজ্ঞা চূর্ণ করে দিন। এই শাসনতন্ত্রের আইনের বলে ক্ষেতমজুর কোনও দিনই [illegible] মজুরী বা জমি পাবে না—[illegible] পাবে না—বাঁচার মত মজুরী পাবে না—হাজারে হাজারে ছাঁটাই হবে। এই শাসনতন্ত্রের বলেই—[illegible] জমিদারীর জমি কেড়ে নিয়ে তাদের উচ্ছেদ করে পথে বসাবে,—মধ্যবিত্ত চাষীর উপর ট্যাক্স, খাজনার বোঝা চাপিয়ে তার জমি নিলাম করে হাজার হাজার পরিবারকে পথের ভিখারী করবে,—শিক্ষিত মধ্যবিত্ত চাকুরীজীবীরা [illegible]—তারা কাজ পাবে না, না খেয়ে মরবে। ছাত্র-ছাত্রীদের বাধ্যতামূলকভাবে পড়া বন্ধ করাবে—[illegible]। এই শাসনতন্ত্র হিন্দু-মুসলমান [illegible] ভাইয়ে ভাইয়ে আবার দাঙ্গা লাগিয়ে দেবে।

এই শাসনতন্ত্রের বলেই, প্রতিটি গ্রামে ও শহরে, মজুতদার আর জমিদার [illegible] শোষণ করার অবাধ অধিকার। কংগ্রেসী [illegible] আর রাইফেল—সৈন্যদল আর [illegible] শোষণ ও জুলুম চালাতে পারবে। [illegible] ও বন্দুকের জোরে [illegible] খোরাকী [illegible]—তারা মধ্যবিত্তের ঘরের ধান—[illegible] নিয়ে যাবে, চাষীরা খোরাক পাবে না—[illegible] পাবে না—[illegible] পাবে না—দলে দলে না খেয়ে মরবে।

এই শাসনতন্ত্রের বলেই এরা আমেরিকান-বৃটেনের স্বার্থে দেশের লক্ষ লক্ষ যুবককে বাধ্যতামূলকভাবে সৈন্য-বাহিনীতে ভর্তি করবে [illegible] গোলাম [illegible] হতে পারিবে। এর বিরুদ্ধে প্রতিবাদ পর্যন্ত করতে দেবে না। সভা-শোভাযাত্রা বন্ধ করে—১৪৪ ধারা ও মিলিটারী আইন জারী [illegible] মেয়ে-পুরুষ

শিশুকে জেলখানায় আটকে রেখে, সেখানে গুণ্ডহত্যা করে—তারা জনতার বুকের ওপর নতুন শাসনতন্ত্র জগদ্দল-পাথরের মত চাপিয়ে দম ফেলতেও দেবে না।

এই শাসনতন্ত্রের সর্ব্বগ্রাসী আক্রমণ থেকে বাঁচার ও মুক্তির পথ দেখিয়েছে তেলেঙ্গানার ২০ লক্ষ মানুষ আর আমাদের জেলার কাকদ্বীপের হাজার হাজার সর্ব্বহারা। কংগ্রেসীদের হিংসাক্ত আক্রমণ—ওদের পাশবিক বর্ব্বরতা, তেলেঙ্গানা আর কাকদ্বীপের বিপ্লবী জনগণ কোনঠাসা করে রেখেছে। ওদের রক্তাক্ত অভিযান—বেয়নেট আর বন্দুকের হুড়াহুড়ি সেখানকার অত্যাচারীদের রক্ষা করতে পারেনি। নিশ্চিহ্ন হয়েছে কংগ্রেসী শাসন—তেলেঙ্গানা আর দক্ষিণ কাকদ্বীপের বুক থেকে। লক্ষ লক্ষ বিঘা জমির মালিক লাটদারের অসংখ্য কাছারী জলেছে—কংগ্রেসী-পাণ্ডা-সেবাদলের মাথা,—ঘৃণিত শত্রু যারা, তারা প্রতিদিন খতম হচ্ছে—সশস্ত্র জনতার হাতে। ক্রুদ্ধ জনতার সশস্ত্র আক্রমণের সামনে বার বার আহত হয়ে পালিয়ে যাচ্ছে কংগ্রেসীদের পুলিশ আর মিলিটারী রাইফেল আর মেশিন-গান নিয়ে। সেখানে তারা থেকে পায় না—তাদের ক্যাম্প জলেছে—দাঁড়াবার জায়গা নেই। এক কথায় দক্ষিণ কাকদ্বীপের জনতার সশস্ত্র অভিযান ওদের বুকে মরণের কাঁপন জাগিয়ে দিয়েছে।

সারা সুন্দরবনের মেহনতী জনতা—হাজার হাজার গণসমাবেশ ও মিছিল করে শত্রুর মুখোস ছিঁড়ে ফেলো—দক্ষিণ কাকদ্বীপের পথে এগিয়ে চল। শত্রুর অস্ত্র কেড়ে নাও। তোমাদের হাতের কাছে যে অস্ত্র আছে তাই নিয়ে শত্রুকে আঘাত কর। যে যেখানে যেভাবে পারো জনতার মধ্য থেকে সশস্ত্র অভিযান চালাও। সে সশস্ত্র অভিযানের আঘাতে কংগ্রেসী পুলিশ ফৌজ, কংগ্রেসী নেতা-সেবাদলের পাণ্ডা-বড়লোক গোষ্ঠী—এককথায় এই শাসনতন্ত্রের ভারবাহি প্রত্যেকটি নরপিশাচকে প্রাণপণে আঘাত করে খতম কর। তাদের ঘাঁটি, আস্তানা তাদের বিষয়-সম্পত্তি দখল করে নাও। তেলেঙ্গানা ও কাকদ্বীপে যেমন ক্ষেতমজুর ও সর্ব্বহারা ওদের জমি, বাড়ী, সম্পত্তি দখল করে নিয়ে নিজেদের শাসনতন্ত্র চালু করেছে তেমনি করে চাষী-মজুর রাজ কায়েম কর। ২৬শে নতুন শাসনতন্ত্র জমাবার আগেই তার রাক্ষসী মাকে শুদ্ধ শেষ করে দাও।

জেলার অন্যান্য এলাকায় নিম্নলিখিত প্রোগ্রাম অনুযায়ী বিরাট বিরাট গণ-সমাবেশ করুন। এই সাতদিন ব্যাপী হাজার হাজার লোকের মিটিং সভা-শোভাযাত্রা করে এই সর্ব্বনাশা শাসনতন্ত্রের মুখোস ছিঁড়ে ফেলুন। নিজেরা সশস্ত্র হয়ে বিপ্লবী কায়দায় সেই সভা ও মিছিল রক্ষা করুন এবং শত্রুকে পেলেই আঘাত করুন। ঘরে ঘরে কালো পতাকা ওড়ান—শাসনতন্ত্র ও কংগ্রেস বিরোধী ধ্বনী দিন। হাট-বাজার-কলকারখানা-ক্ষেত খামার-স্কুল-কলেজ হরতাল করে সরকারকে অচল করে দিন।

১৯শে জানুয়ারী হতে সংগ্রাম সুরু—ঐদিন থেকে সকলে কোমর বেঁধে লাগুন :—

১৯শে জানুয়ারী—বন্দীমুক্তি ও গণতান্ত্রিক অধিকার রক্ষার দিবস।

২০শে „ —ক্ষেতমজুর ধর্ম্মঘট ও ফসল দখলের দিবস—এই দিন বিপ্লবী কায়দায় পুরা ফসল দখল করুন। হাট-বাজার-ক্ষেত খামার হরতাল করে ফসল ঘরে আনুন। শত্রুকে মেরে হঠান।

২১শে „ —ঐতিহাসিক লেনিন দিবস। সোভিয়েট ইউনিয়নের নেতৃত্বে শান্তির সংগ্রামের জন্য জনতাকে ডাক দিন।

২২শে „ —বেকার বিরোধী ও শিক্ষা সংস্কার বিরোধী দিবস। হাজার হাজার ধর্ম্মঘট—জঙ্গী সমাবেশের মধ্য দিয়া ঘৃণা জাগাইতে হইবে।

২৩শে „ —কমনওয়েলথ বিরোধী ও যুদ্ধ বিরোধী দিবস।

২৪শে „ —তেলেঙ্গানা ও লালগঞ্জ দিবস। তেলেঙ্গানার বীরদের ফাঁসীর হুকুমের বিরুদ্ধে ও লালগঞ্জের পুলিশ-পল্টনের বর্ব্বরতার বিরুদ্ধে প্রচণ্ড বিক্ষোভ সৃষ্টি করুন।

২৫শে „ —ঐক্য দিবস। হিন্দু-মুসলমান বাঙ্গালী-অবাঙ্গালী শ্রমিক-কৃষক-ছাত্র ঐক্য পালিত হইবে সাধারণ ধর্ম্মঘটের মধ্য দিয়া।

২৬শে „ —শাসনতন্ত্র বিরোধী গণসমাবেশ।

নিবেদক—

২৪ পরগণা জেলা কমিউনিস্ট পার্টি

২৪ পরগণা জেলা কৃষক সমিতি

ফ্যাসিবাদ ও গোলামীর সনদ এই কংগ্রেসী শাসনতন্ত্রকে ধ্বংস কর

জনগণের স্বাধীনতা ও গণরাষ্ট্রের জন্য এগিয়ে চল —তেলেঙ্গানা ও কাকদ্বীপের পথে।

২৬শে জানুয়ারী ফ্যাসিষ্ট কংগ্রেসী সরকারকে চূড়ান্ত আঘাত করতে—গ্রামাঞ্চলের সর্ব্বহারা ক্ষেতমজুর শ্রেণী নেতৃত্ব নাও।

- হাজারে হাজারে সাধারণ ধর্ম্মঘট কর
- হাট-বাজার ক্ষেত-খামার ধর্ম্মঘট করে অচল করে দাও!!
- শত্রুর অস্ত্র কেড়ে নিয়ে সশস্ত্র অভিযান চালাও
- শত্রুকে চূড়ান্ত আঘাত করে নিশ্চিহ্ন করে দাও।

শ্রমিক-ক্ষেতমজুর-কৃষক-ছাত্র-শোষিত মধ্যবিত্ত!
হিন্দু-মুসলমান-মজুর ভাই এবং বোনেরা!

২৬শে জানুয়ারী থেকে কংগ্রেস সরকার সারা ভারতের বুকে নতুন শাসনতন্ত্র চালু করবে। এই শাসনতন্ত্রের উদ্দেশ্য দেশের কোটি কোটি সর্ব্বহারা মানুষকে শক্ত গোলামীর শেকলে বেঁধে আমেরিকা ও বৃটেনের বুটের তলায় ফেলে দেওয়া। রাইফেল আর বেয়নেট চালিয়ে—জনতার সর্ব্বস্ব লোপ করা। সমস্ত মেহনতী মানুষের আশা-আকাঙ্খা—পেট ভরে খেয়ে পরে বেঁচে থাকার দাবীকে টুঁটি টিপে মেরে ফেলে 'টাটা'-'বিড়লা'-জমিদার মহাজনের রাজত্বকে পাকা-পোক্তভাবে কায়েম করা।

এই শাসনতন্ত্র আপনাদের সমস্ত অধিকার হরণ করেছে [illegible] আপনাদের ওপর নানা নির্দেশ চাপিয়ে দিয়েছে—নিজেদের মিলিত শক্তি দিয়ে আপনারা তার প্রতিটি নির্দেশকে চূর্ণ করে দিন। এই শাসনতন্ত্রের আইনের বলে ক্ষেতমজুর কোনও দিনই ন্যায্য মজুরী বা জমি পাবে না—কলকারখানার মজুর কাজ পাবে না—বাঁচার মত মজুরী পাবে না—হাজারে হাজারে ছাঁটাই হবে। এই শাসনতন্ত্রের বলেই—মহাজন-জোতদার ভাগচাষীর ধান কেড়ে নিয়ে [illegible] করে পথে বসাবে,—মধ্যবিত্ত চাষীর জমি নীলাম, খাজনার বোঝা চাপিয়ে গরীব চাষীর জমি নিলাম করে হাজার হাজার পরিবারকে পথের ভিখারী করবে।—শিক্ষিত মধ্যবিত্ত চাকুরীজীবীকে বেকার করবে—তারা খেতে পাবে না, না খেয়ে মরবে। ছাত্র-ছাত্রীদের [illegible] পড়া বন্ধ করাবে—পরীক্ষার ফিস বাড়াবে। এই শাসনতন্ত্র হিন্দু-মুসলমান ছোট-বড়দের মধ্যে ভাইয়ে ভাইয়ে দাঙ্গার আগুন লাগিয়ে দেবে।

এই শাসনতন্ত্রের বলেই, প্রতিটি গ্রামে ও শহরে, বড়লোক আর জমিদার শ্রমিক চাষীকে শোষণ করার অবাধ অধিকার। কংগ্রেসী ফৌজ-পেয়াদা আর রাইফেল—পুলিশ আর সাম্রাজ্য-জমিদারদের দ্বারা অবাধ শোষণ ও জুলুম চালাতে পারবে। আমেরিকা ও বৃটেনের মালিকদের সাম্রাজ্য চোরাকারী বেচে তারা সমস্ত খোরাক—চাষী মজুরদের ধান-পাট—বিদেশে নিয়ে যাবে, চাষীরা খোরাক পাবে না—বীজধান পাবে না—মজুররা খেতে পাবে না—কাজে না খেয়ে মরবে।

এই শাসনতন্ত্রের বলেই ওরা আমেরিকান-বৃটিশদের স্বার্থে দেশের লক্ষ লক্ষ যুবককে বাধ্যতামূলকভাবে সৈন্যবাহিনীতে ভর্ত্তি করবে [illegible] বিরুদ্ধে প্রতিবাদ সংগঠিত করতে দেবে না। সভা-শোভাযাত্রা বন্ধ করে—১৪৪ ধারা জারী করে—হাজার হাজার

শিশুকে জেলখানায় আটকে রেখে, সেখানে গুলিতে হত্যা করে—তারা জনতার বুকের ওপর নতুন শাসনতন্ত্র জগদ্দল-পাথরের মত চাপিয়ে দম ফেলতেও দেবে না।

এই শাসনতন্ত্রের সর্বগ্রাসী আক্রমণ থেকে বাঁচার ও মুক্তির পথ দেখিয়েছে তেলেঙ্গানার ২০ লক্ষ মানুষ আর আমাদের জেলার কাকদ্বীপের হাজার হাজার সর্বহারা। কংগ্রেসীদের হিংস্র আক্রমণ—ওদের পাশবিক বর্বরতা, তেলেঙ্গানা আর কাকদ্বীপের বিপ্লবী জনগণ কোনঠাসা করে রেখেছে। ওদের রক্তাক্ত অভিযান—বেয়নেট আর বন্দুকের হুলাহুলি তেলেঙ্গানার অত্যাচারীদের রক্ষা করতে পারেনি। নিশ্চিহ্ন হয়েছে কংগ্রেসী শাসন—তেলেঙ্গানা আর দক্ষিণ কাকদ্বীপের বুক থেকে। লক্ষ লক্ষ বিঘা জমির মালিক জোতদারের অসংখ্য কাছারী জ্বলেছে—কংগ্রেসী গুণ্ডা-জোতদারদের মাথা,—দুর্গত শত্রু যারা, তারা প্রতিদিন খতম হচ্ছে—সশস্ত্র জনতার হাতে। ক্রুদ্ধ জনতার সশস্ত্র আক্রমণের সামনে বার বার আহত হয়ে পালিয়ে যাচ্ছে কংগ্রেসীদের পুলিশ আর মিলিটারী রাইফেল আর মেশিন-গান নিয়ে। সেখানে তারা বেঁচে পায় না—তাদের ক্যাম্প জ্বলছে—দাঁড়াবার জায়গা নেই। এক কথায় দক্ষিণ কাকদ্বীপের জনতার সশস্ত্র অভিযান ওদের বুকে মরণের কাঁপন জাগিয়ে দিয়েছে।

সারা দুনিয়ার মেহনতী জনতা—হাজার হাজার গণসমাবেশ ও মিছিল করে শত্রুর মুখোস ছিঁড়ে ফেলো—দক্ষিণ কাকদ্বীপের পথে এগিয়ে চল। শত্রুর শিবির কেড়ে নাও। তোমাদের হাতের কাছে যে অস্ত্র আছে তাই নিয়ে শত্রুকে আঘাত কর। যে যেখানে যেভাবে পারো জনতার মধ্যে থেকে সশস্ত্র অভিযান চালাও। সে সশস্ত্র অভিযানের আঘাতে কংগ্রেসী পুলিশ ফৌজ, কংগ্রেসী নেতা-নেতাদের গাঁটা-বড়লোক গোষ্ঠী—এককথায় এই শাসনতন্ত্রের ভিত্তিবাহি প্রত্যেকটি মহা[illegible] প্রাণপনে আঘাত করে খতম কর। তাদের ঘাঁটি, আস্তানা তাদের বিষয়-সম্পত্তি দখল করে দাও। তেলেঙ্গানা ও কাকদ্বীপে যেমন ক্ষেতমজুর ও সর্বহারা ওদের জমি, বাড়ী, সম্পত্তি দখল করে নিয়ে নিজেদের শাসনতন্ত্র চালু করেছে তেমনি করে চাষী মজুর রাজ কায়েম কর। ২৬শে নতুন শাসনতন্ত্র জারীর আগেই তার রাক্ষসী মাকে শুদ্ধ শেষ করে দাও।

জেলার সর্বত্র এলাকার নিম্নলিখিত প্রোগ্রাম অনুযায়ী বিরাট বিরাট গণ-সমাবেশ করুন। এই সাতদিন ব্যাপী হাজার হাজার লোকের মিটিং সভা-শোভাযাত্রা করে এই সর্বনাশা শাসনতন্ত্রের মুখোশ ছিঁড়ে ফেলুন। নিজেরা সশস্ত্র হয়ে বিপ্লবী কায়দায় সেই সভা ও মিছিল রক্ষা করুন এবং শত্রুকে পেলেই আঘাত করুন। ঘরে ঘরে কালো পতাকা তুলুন—শাসনতন্ত্র ও কংগ্রেস বিরোধী ধ্বনী দিন। হাট-বাজার-কলকারখানা-ক্ষেত খামার-স্কুল-কলেজ হরতাল করে সরকারকে অচল করে দিন।

১৯শে জানুয়ারী হতে সংগ্রাম সুরু—ঐদিন থেকে সকলে কোমর বেঁধে লাগুন :—

১৯শে জানুয়ারী—সর্বমুক্তি ও গণতান্ত্রিক অধিকার রক্ষার দিবস।

২০শে „ —ক্ষেতমজুর ধর্মঘট ও ফসল দখলের দিবস—এই দিন বিপ্লবী কায়দায় পুরা ফসল দখল করুন৷ হাট-বাজার-ক্ষেত খামার হরতাল করে ফসল ঘরে আনুন। শত্রুকে মেরে হটান।

২১শে „ —ঐতিহাসিক লেনিন দিবস। সোভিয়েট ইউনিয়নের নেতৃত্বে শান্তির সংগ্রামের জন্য জনতাকে ডাক দিন।

২২শে „ —বেকার বিরোধী ও শিক্ষা সংকোচ বিরোধী দিবস। হাজার হাজার ধর্মঘট—ছাত্র সমাবেশের মধ্য দিয়া রূপ [illegible] হইবে।

২৩শে „ —কালাকানুন বিরোধী ও যুদ্ধ বিরোধী দিবস।

২৪শে „ —তেলেঙ্গানা ও কাকদ্বীপ দিবস। তেলেঙ্গানার বীরদের ফাঁসীর হুকুমের বিরুদ্ধে ও লালগঞ্জের পুলিশ-মিলিটারীর বর্বরতার বিরুদ্ধে প্রচণ্ড বিক্ষোভ সৃষ্টি করুন।

২৫শে „ —ঐক্য দিবস। হিন্দু-মুসলমান বাঙ্গালী-অবাঙ্গালী শ্রমিক-কৃষক-ছাত্র ঐক্য পালিত হইবে সাধারণ ধর্মঘটের মধ্য দিয়া।

২৬শে „ —শাসনতন্ত্র বিরোধী গণসমাবেশ।

নিবেদক—

২৪ পরগণা জেলা কমিউনিস্ট পার্টি
২৪ পরগণা জেলা কৃষক সমিতি

ফ্যাসিবাদ ও গোলামীর সনদ এই কংগ্রেসী শাসনতন্ত্রকে ধ্বংস কর

জনগণের স্বাধীনতা ও গণরাষ্ট্রের জন্য এগিয়ে চল —তেলেঙ্গানা ও কাকদ্বীপের পথে।

২৬শে জানুয়ারী ফ্যাসিস্ট কংগ্রেসী সরকারকে চূড়ান্ত আঘাত করতে—গ্রামাঞ্চলের সর্বহারা ক্ষেতমজুর শ্রেণী নেতৃত্ব দাও।

- হাজারে হাজারে সাধারণ ধর্মঘট কর
- হাট-বাজার ক্ষেত-খামার ধর্মঘট করে অচল করে দাও।
- শত্রুর অস্ত্র কেড়ে নিয়ে সশস্ত্র অভিযান চালাও
- শত্রুকে চূড়ান্ত আঘাত করে নিশ্চিহ্ন করে দাও।

শ্রমিক-ক্ষেতমজুর-কৃষক-ছাত্র-শোষিত মধ্যবিত্ত।
হিন্দু-মুসলমান-অছুৎ ভাই এবং বোনেরা।

২৬শে জানুয়ারী থেকে কংগ্রেস সরকার সারা ভারতের বুকে নতুন শাসনতন্ত্র চালু করবে। এই শাসনতন্ত্রের উদ্দেশ্য দেশের কোটি কোটি সর্বহারা মানুষকে শক্ত লোহার শেকলে বেঁধে আমেরিকা ও বৃটেনের বুটের তলায় ফেলে দেওয়া। রাইফেল আর বেয়নেট চালিয়ে—জনতার কণ্ঠস্বর রোধ করা। সমস্ত মেহনতী মানুষের আশা-আকাঙ্খা—পেট ভরে খেয়ে পরে বেঁচে থাকার দাবীকে টুঁটি টিপে মেরে ফেলে 'টাটা'-'বিড়লা'-জমিদার মহাজনের রাজত্বকে পাকা-পোক্তভাবে কায়েম করা।

এই শাসনতন্ত্র আপনাদের সমস্ত অধিকার হরণ করেছে জবরদস্তি আপনাদের ওপর নানা নিষেধাজ্ঞা চাপিয়ে দিচ্ছে—নিজেদের মিলিত শক্তি দিয়ে আপনারা তার প্রতিটি নিষেধাজ্ঞা চূর্ণ করে দিন। এই শাসনতন্ত্রের আইনের বলে ক্ষেতমজুর কোনও দিনই ন্যায্য মজুরী বা জমি পাবে না—কলকারখানার মজুর কাজ পাবে না—খাঁচার মত মজুরী পাবে না—হাজারে হাজারে ছাঁটাই হবে। এই শাসনতন্ত্রের বলেই—মহাজন-জোতদার ভাগচাষীর জমি কেড়ে নিয়ে তাদের উচ্ছেদ করে পথে বসাবে,—মধ্যবিত্ত চাষীর ওপর ট্যাক্স, খাজনার বোঝা চাপিয়ে তার জমি নিলাম করে হাজার হাজার পরিবারকে পথের ভিখারী করবে,—শিক্ষিত বেকার মধ্যবিত্ত চাকুরীজীবীকে বেকার করবে—তারা কাজ পাবে না, না খেয়ে মরবে। ছাত্র-ছাত্রীদের বাধ্যতামূলকভাবে পড়া বন্ধ করাবে—পরীক্ষায় ফেল করাবে। এই শাসন-তন্ত্র হিন্দু-মুসলমান ছুৎ-অছুতের প্রশ্ন তুলে ভাইয়ে ভাইয়ে আবার লড়াই লাগিয়ে দেবে।

এই শাসনতন্ত্রের বলেই, প্রতিটি গ্রামে ও সহরে, বড়লোক আর জমিদার পাবে গরীবকে শোষণ করার অবাধ অধিকার। কংগ্রেসী ফৌজ-বেয়নেট আর রাইফেল—সেবাদল আর গ্রামরক্ষী-গুণ্ডাবাহিনীর দ্বারা অবাধ শোষণ ও জুলুম চালাতে পারবে। আইনের ও বন্দুকের হুমকী দেখিয়ে সামান্য খোরাকী রেখে তারা সমস্ত খোরাক—চাষা মধ্যবিত্তের ঘরের ধান—বিদেশে নিয়ে যাবে, চাষীরা খোরাক পাবে না—বীজধান পাবে না—একমুঠো হাওলাতও পাবে না—দলে দলে না খেয়ে মরবে।

এই শাসনতন্ত্রের বলেই ওরা আমেরিকান-ইংরেজের স্বার্থে দেশের লক্ষ লক্ষ যুবককে বাধ্যতামূলকভাবে সৈন্য-বাহিনীতে ভর্তি করবে তারপর কোরিয়ার গোলার খোরাক হতে পাঠাবে। এর বিরুদ্ধে প্রতিবাদ পর্য্যন্ত করতে দেবে না। সভা-শোভাযাত্রা বন্ধ করে—১৪৪ ধারা ও মিলিটারী আইন জারী করে—হাজার হাজার মেয়ে-পুরুষ-

শিশুকে জেলখানায় আটকে রেখে, সেখানে গুলিহত্যা করে—তারা জনতার বুকের ওপর নতুন শাসনতন্ত্র জগদ্দল-পাথরের মত চাপিয়ে দম ফেলতেও দেবে না।

এই শাসনতন্ত্রের সর্বগ্রাসী আক্রমণ থেকে বাঁচার ও মুক্তির পথ দেখিয়েছে তেলেঙ্গানার ২০ লক্ষ মানুষ আর আমাদের জেলার কাকদ্বীপের হাজার হাজার সর্বহারা। কংগ্রেসীদের হিংসামত্ত আক্রমণ—ওদের পাশবিক বর্বরতা, তেলেঙ্গানা আর কাকদ্বীপের বিপ্লবী জনগণ কোনঠাসা করে রেখেছে। ওদের রক্তাক্ত অভিযান—বেয়নেট আর বন্দুকের হুড়াহুড়ি সেখানকার অত্যাচারীদের রক্ষা করতে পারেনি। নিশ্চিহ্ন হয়েছে কংগ্রেসী শাসন—তেলেঙ্গানা আর দক্ষিণ কাকদ্বীপের বুক থেকে। লক্ষ লক্ষ বিঘা জমির মালিক লাটদারের অসংখ্য কাছারী জ্বলেছে—কংগ্রেসী-পাণ্ডা-সেবাদলের মাথা,—ঘৃণিত শত্রু যারা, তাদের [illegible] খতম হচ্ছে—অস্ত্র জনতার হাতে। ক্রুদ্ধ জনতার সশস্ত্র আক্রমণের সামনে বার বার আহত হয়ে পালিয়ে গেছে কংগ্রেসীদের পুলিশ আর মিলিটারী রাইফেল আর মেশিন-গান নিয়ে। সেখানে তারা খেতে পায় না—[illegible]—পালাবার জায়গা নেই। এক কথায় দক্ষিণ কাকদ্বীপের জনতার সশস্ত্র অভিযান শত্রুর বুকে মরণের কাঁপন জাগিয়ে দিয়েছে।

সারা সুন্দরবনের মেহনতী জনতা—হাজার হাজার জনসমাবেশ ও মিছিল করে শত্রুর মুখোস ছিঁড়ে ফেলো—দক্ষিণ কাকদ্বীপের পথে এগিয়ে চল। অস্ত্র তুলে নাও। তোমাদের হাতের কাছে যে অস্ত্র আছে তাই নিয়ে শত্রুকে আঘাত কর। যে যেখানে যেভাবে পারো জনতার মধ্য থেকে সশস্ত্র অভিযান চালাও। সে সশস্ত্র অভিযানের আঘাতে কংগ্রেসী পুলিশ ফৌজ, কংগ্রেসী নেতা-নেতাদের পাণ্ডা-ভদ্রলোক গোষ্ঠী—এককথায় এই শাসকদলের জমিদার প্রত্যেকটি নরপিশাচকে প্রাণপণে আঘাত করে খতম কর। তাদের বাড়ি, গাড়ি, তাদের বিষয়-সম্পত্তি দখল করে নাও। তেলেঙ্গানা ও কাকদ্বীপে যেমন ক্ষেতমজুর ও সর্বহারা ওদের জমি, বাড়ী, সম্পত্তি দখল করে নিয়ে নিজেদের শাসনতন্ত্র চালু করেছে তেমনি করে গ্রামে নতুন রাজ কায়েম কর। ওদের নতুন শাসনতন্ত্র জন্মাবার আগেই তার রাক্ষসী মাকে শুদ্ধ শেষ করে দাও।

জেলার সমস্ত এলাকায় নিম্নলিখিত প্রোগ্রাম অনুযায়ী বিরাট বিরাট জনসমাবেশ করুন। এই সাতদিন ব্যাপী হাজার হাজার লোকের মিটিং সভা-শোভাযাত্রা করে এই সর্বনাশা শাসনতন্ত্রের মুখোস ছিঁড়ে ফেলুন। নিজেরা সশস্ত্র হয়ে বিপ্লবী কায়দায় সেই সভা ও মিছিল রক্ষা করুন এবং শত্রুকে বেপরোয়া আঘাত করুন। ঘরে ঘরে কালো পতাকা ওড়ান—শাসনতন্ত্র ও কংগ্রেস বিরোধী ধ্বনি দিন। হাট-বাজার-কলকারখানা-ক্ষেত খামারে স্কুল-কলেজে হরতাল করে সরকারকে অচল করে দিন।

১৯শে জানুয়ারী হতে সংগ্রাম শুরু—ঐদিন থেকে সকলে কোমর বেঁধে লাগুন :—

১৯শে জানুয়ারী—বন্দীমুক্তি ও গণতান্ত্রিক অধিকার রক্ষার দিবস।

২০শে „ —ক্ষেতমজুর বর্গাদার ও ফসল দখলের দিবস।—এই দিন বিপ্লবী কায়দায় পুরা ফসল দখল করুন। হাট-বাজার-ক্ষেত খামার হরতাল করে ফসল ঘরে আনুন। শত্রুকে মেরে হঠান।

২১শে „ —ঐতিহাসিক লেনিন দিবস। সোভিয়েট ইউনিয়নের নেতৃত্বে শান্তির সংগ্রামের জন্য জনতাকে ডাক দিন।

২২শে „ —বেকার বিরোধী ও শিক্ষা সংস্কার বিরোধী দিবস। হাজার হাজার ধর্মঘট—জঙ্গী সমাবেশের মধ্য দিয়া ঘৃণা জাগাইতে হইবে।

২৩শে „ —কমনওয়েলথ বিরোধী ও যুদ্ধ বিরোধী দিবস।

২৪শে „ —তেলেঙ্গানা ও লালগঞ্জ দিবস। তেলেঙ্গানার বীরদের ফাঁসীর হুকুমের বিরুদ্ধে ও লালগঞ্জের পুলিশ-গুণ্ডাদের বর্বরতার বিরুদ্ধে প্রচণ্ড বিক্ষোভ সৃষ্টি করুন।

২৫শে „ —ঐক্য দিবস। হিন্দু-মুসলমান বাঙালী-অবাঙালী শ্রমিক-কৃষক-ছাত্র ঐক্য স্থাপিত হইবে সাধারণ ধর্মঘটের মধ্য দিয়া।

২৬শে „ —শাসনতন্ত্র বিরোধী গণসমাবেশ।

নিবেদক—

২৪ পরগণা জেলা কমিউনিস্ট পার্টি

২৪ পরগণা জেলা কৃষক সমিতি

ফ্যাসিবাদ ও গোলামীর সনদ এই কংগ্রেসী শাসনতন্ত্রকে ধ্বংস কর

জনগণের স্বাধীনতা ও গণরাষ্ট্রের জন্য এগিয়ে চল —তেলেঙ্গানা ও কাকদ্বীপের পথে।

২৬শে জানুয়ারী ফ্যাসিস্ট কংগ্রেসী সরকারকে চূড়ান্ত আঘাত করতে—গ্রামাঞ্চলের সর্ব্বহারা ক্ষেতমজুর শ্রেণী নেতৃত্ব নাও!

- শহরে শহরে সাধারণ ধর্মঘট কর
- হাট-বাজার ক্ষেত-খামার বর্জ্জন করে অচল করে দাও।
- পুলিশের অস্ত্র কেড়ে নিয়ে সশস্ত্র অভিযান চালাও
- শত্রুকে চূড়ান্ত আঘাত করে নিশ্চিহ্ন করে দাও।

শ্রমিক-ক্ষেতমজুর-কৃষক-ছাত্র-শোষিত মধ্যবিত্ত!
হিন্দু-মুসলমান-অচ্ছুৎ জাতি এবং মেয়েরা!

২৬শে জানুয়ারী থেকে কংগ্রেস সরকার নাম্বা [illegible] ঘটা করে নতুন শাসনতন্ত্র চালু করছে। এই শাসনতন্ত্রের [illegible] দেশের কোটি কোটি সর্ব্বহারা মানুষের গলায় লোহার শেকলে বেঁধে আমেরিকা ও বৃটিশের বুটের তলায় ফেলে দেওয়া। রাইফেল আর বেয়নেট চালিয়ে—জনতার কণ্ঠস্বর রোধ করা। সমস্ত মেহনতী মানুষের আশা-আকাঙ্খা—পেট ভরে খেয়ে পরে বেঁচে থাকার দাবীকে টুঁটি টিপে মেরে ফেলে 'টাটা'-'বিড়লা'-ডালমিয়া বড়লোকদের লুঠকে পাকা-পোক্তভাবে কায়েম করা।

এই শাসনতন্ত্র আপনাদের সমস্ত অধিকার হরণ করেছে [illegible] আপনাদের উপর নানা নিষেধাজ্ঞা চাপিয়ে দিয়েছে—নিজেদের মিলিত শক্তি দিয়ে আপনারা তার প্রতিটি নিষেধাজ্ঞা চূর্ণ করে দিন। এই শাসনতন্ত্রের আইনের বলে ক্ষেতমজুর কোনদিনই ন্যায্য মজুরী বা জমি পাবে না—কলকারখানার মজুর কাজ পাবে না—বাঁচার মত মজুরী পাবে না—হাজারে হাজারে ছাঁটাই হবে। এই শাসনতন্ত্রের বলেই—মহাজন-জোতদার ভাগচাষীর জমি কেড়ে নিয়ে তাদের ভিটেমাটি ছাড়া করবে,—মধ্যবিত্ত চাষীর ওপর ট্যাক্স, খাজনার বোঝা চাপিয়ে তার জমি নিলাম করে হাজার হাজার পরিবারকে পথের ভিখারী করবে,—শিক্ষিত মধ্যবিত্ত চাকুরীজীবীকে বেকার করবে—তারা খেতে পাবে না, না খেয়ে মরবে। ছাত্র-ছাত্রীদের [illegible] পড়া বন্ধ করাবে—প্রতিবাদ করলে জেলে পুরবে। এই শাসনতন্ত্র হিন্দু-মুসলমান [illegible] ভাইয়ে ভাইয়ে আবার লড়াই লাগিয়ে দেবে।

এই শাসনতন্ত্রের বলেই, প্রতিটি গ্রামে ও শহরে, বড়লোক আর জমিদার গরীবকে শোষণ করার অবাধ অধিকার। কংগ্রেসী ফৌজ-পুলিশ আর গুণ্ডা—মেম্বার আর গ্রামরক্ষী-স্বেচ্ছাসেবী দিয়ে তারা অবাধ শোষণ ও জুলুম চালাতে পারবে। আমেরিকা ও বৃটেনের একচেটিয়া পুঁজিপতিরা খোরাকী রেখে বাকী সমস্ত খোরাক—চাষী মধ্যবিত্তের সমস্ত ধান—বিদেশে নিয়ে যাবে, চাষীরা খোরাক পাবে না—বীজধান পাবে না—অথচ [illegible] পাবে না—দুর্ভিক্ষে না খেয়ে মরবে।

এই শাসনতন্ত্রের বলেই [illegible] আমেরিকা-বৃটেনের স্বার্থে দেশের লক্ষ লক্ষ যুবককে [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] বেঁধে মারতে [illegible]। এই [illegible] প্রতিবাদ করলে [illegible] [illegible]। [illegible] এক করে—১৪৪ ধারা ও মিলিটারী আইন জারী [illegible]—[illegible]

শিশুকে জেলখানায় আটকে রেখে, সেখানে গুপ্তহত্যা করে—তারা জনতার বুকের ওপর নতুন শাসনতন্ত্র জগদ্দল-পাথরের মত চাপিয়ে দম ফেলতেও দেবে না।

এই শাসনতন্ত্রের সর্বগ্রাসী আক্রমণ থেকে বাঁচার ও মুক্তির পথ দেখিয়েছে তেলেঙ্গানার ২০ লক্ষ মানুষ আর আমাদের জেলায় কাকদ্বীপের হাজার হাজার সর্বহারা। কংগ্রেসীদের হিংসান্মত্ত আক্রমণ—ওদের পাশবিক বর্বরতা, তেলেঙ্গানা আর কাকদ্বীপের বিপ্লবী জনগণ কোনঠাসা করে রেখেছে। ওদের রক্তাক্ত অভিযান—বেয়নেট আর বন্দুকের ছুটাছুটি সেখানকার অত্যাচারীদের রক্ষা করতে পারেনি। নিশ্চিহ্ন হয়েছে কংগ্রেসী শাসন—তেলেঙ্গানা আর দক্ষিণ কাকদ্বীপের বুক থেকে। লক্ষ লক্ষ বিঘা জমির মালিক লাটদারের অসংখ্য কাছারী জলেছে—কংগ্রেসী-পাণ্ডা-সেবাদলের মাথা,—ঘৃণিত শত্রু যারা, তারা এতদিন খতম হচ্ছে—সমস্ত জনতার হাতে। ক্রুদ্ধ জনতার সশস্ত্র আক্রমণের সামনে বার বার আহত হয়ে পালিয়ে যাচ্ছে কংগ্রেসীদের পুলিশ আর মিলিটারী রাইফেল আর মেশিন-গান নিয়ে। সেখানে তারা খেতে পায় না—তাদের ক্যাম্প জ্বলেছে—দাঁড়াবার জায়গা নেই। এক কথায় দক্ষিণ কাকদ্বীপের জনতার সশস্ত্র অভিযান ওদের বুকে মরণের কাঁপন জাগিয়ে দিয়েছে।

সারা সুন্দরবনের মেহনতী জনতা—হাজার হাজার গণসমাবেশ ও মিছিল করে শত্রুর মুখোস ছিড়ে ফেলো—দক্ষিণ কাকদ্বীপের পথে এগিয়ে চল। শত্রুর অস্ত্র কেড়ে নাও। তোমাদের হাতের কাছে যে অস্ত্র আছে তাই নিয়ে শত্রুকে আঘাত কর। যে যেখানে যেভাবে পারো জনতার মধ্য থেকে সশস্ত্র অভিযান চালাও। সে সশস্ত্র অভিযানের আঘাতে কংগ্রেসী পুলিশ ফৌজ, কংগ্রেসী নেতা-সেবাদলের পাণ্ডা-বড়লোক গোষ্ঠী—এককথায় এই শাসনতন্ত্রের তল্পিবাহি প্রত্যেকটি নরপিশাচকে প্রাণপনে আঘাত করে খতম কর। তাদের ঘাঁটি, আস্তানা তাদের বিষয়-সম্পত্তি দখল করে নাও। তেলেঙ্গানা ও কাকদ্বীপে যেমন ক্ষেতমজুর ও সর্বহারা ওদের জমি, বাড়ী, সম্পত্তি দখল করে নিয়ে নিজেদের শাসনতন্ত্র চালু করেছে তেমনি করে চাষী মজুর রাজ কায়েম কর। ২৬শে নতুন শাসনতন্ত্র জন্মাবার আগেই তার রাক্ষসী মাকে শুদ্ধ শেষ করে দাও।

জেলার অন্যান্য এলাকায় নিম্নলিখিত প্রোগ্রাম অনুযায়ী বিরাট বিরাট গণ-সমাবেশ করুন। এই সাতদিন ব্যাপী হাজার হাজার লোকের মিটিং সভা-শোভাযাত্রা করে এই সর্বনাশা শাসনতন্ত্রের মুখোস ছিঁড়ে ফেলুন। নিজেরা সশস্ত্র হয়ে বিপ্লবী কায়দায় সেই সভা ও মিছিল রক্ষা করুন এবং শত্রুকে পেলেই আঘাত করুন। ঘরে ঘরে কালো পতাকা ওড়ান—শাসনতন্ত্র ও কংগ্রেস বিরোধী ধ্বনী দিন। হাট-বাজার-কলকারখানা-ক্ষেত খামার-স্কুল-কলেজ হরতাল করে সরকারকে অচল করে দিন।

১৯শে জানুয়ারী হতে সংগ্রাম সুরু—ঐদিন থেকে সকলে কোমর বেঁধে লাগুন :—

১৯শে জানুয়ারী—বন্দীমুক্তি ও গণতান্ত্রিক অধিকার রক্ষার দিবস।

২০শে „ —ক্ষেতমজুর ধর্মঘট ও ফসল দখলের দিবস—এই দিন বিপ্লবী কায়দায় পুরা ফসল দখল করুন। হাট-বাজার-ক্ষেত খামার হরতাল করে ফসল ঘরে আনুন। শত্রুকে মেরে হঠান।

২১শে „ —ঐতিহাসিক লেনিন দিবস। সোভিয়েট ইউনিয়নের নেতৃত্বে শান্তির সংগ্রামের জন্য জনতাকে ডাক দিন।

২২শে „ —বেকার বিরোধী ও শিক্ষা সংকার বিরোধী দিবস। হাজার হাজার ধর্মঘট—জঙ্গী সমাবেশের মধ্য দিয়া ঘৃণা জাগাইতে হইবে।

২৩শে „ —কমনওয়েলথ বিরোধী ও যুদ্ধ বিরোধী দিবস।

২৪শে „ —তেলেঙ্গানা ও লালগঞ্জ দিবস। তেলেঙ্গানার বীরদের ফাঁসীর হুকুমের বিরুদ্ধে ও লালগঞ্জের পুলিশ-পল্টনের বর্বরতার বিরুদ্ধে প্রচণ্ড বিক্ষোভ সৃষ্টি করুন।

২৫শে „ —ঐক্য দিবস। হিন্দু-মুসলমান বাঙ্গালী-অবাঙ্গালী শ্রমিক-কৃষক-ছাত্র ঐক্য পালিত হইবে সাধারণ ধর্মঘটের মধ্য দিয়া।

২৬শে „ —শাসনতন্ত্র বিরোধী গণসমাবেশ।

নিবেদক—

২৪ পরগণা জেলা কমিউনিস্ট পার্টি

২৪ পরগণা জেলা কৃষক সমিতি

ফ্যাসিবাদ ও গোলামীর সনদ এই কংগ্রেসী শাসনতন্ত্রকে ধ্বংস কর

জনগণের স্বাধীনতা ও গণরাষ্ট্রের জন্য এগিয়ে চল —তেলেঙ্গানা ও কাকদ্বীপের পথে।

২৬শে জানুয়ারী ফ্যাসিস্ট কংগ্রেসী সরকারকে চুড়ান্ত আঘাত করতে—গ্রামাঞ্চলের সর্ব্বহারা ক্ষেতমজুর শ্রেণী নেতৃত্ব নাও।

- হাজারে হাজারে সাধারণ ধর্ম্মঘট কর
- হাট-বাজার ক্ষেত-খামার ধর্ম্মঘট করে অচল করে দাও।
- শত্রুর অস্ত্র কেড়ে নিয়ে সশস্ত্র অভিযান চালাও
- শত্রুকে চুড়ান্ত আঘাত করে নিশ্চিহ্ন করে দাও।

শ্রমিক-ক্ষেতমজুর-কৃষক-ছাত্র-শোষিত মধ্যবিত্ত!
হিন্দু-মুসলমান-অছুৎ ভাই এবং বোনেরা!

২৬শে জানুয়ারী থেকে কংগ্রেস সরকার সারা ভারতের বুকে নতুন শাসনতন্ত্র চালু করবে। এই শাসনতন্ত্রের উদ্দেশ্য দেশের কোটি কোটি সর্ব্বহারা মানুষকে শক্ত লোহার শেকলে বেঁধে আমেরিকা ও বৃটিশের বুটের তলায় ফেলে দেওয়া। রাইফেল আর বেয়নেট চালিয়ে—জনতার কণ্ঠস্বর রোধ করা। সমস্ত মেহনতী মানুষের আশা-আকাঙ্খা—পেট ভরে খেয়ে পরে বেঁচে থাকার দাবীকে টুঁটি টিপে মেরে ফেলে 'টাটা'-'বিড়লা'-ডালমিয়ার মহাজনের রাজত্বকে পাকা-পোক্তভাবে কায়েম করা।

এই শাসনতন্ত্র আপনাদের সমস্ত অধিকার হরণ করেছে জবরদস্তি আপনাদের ওপর সারা নিষেধাজ্ঞা চাপিয়ে দিচ্ছে—নিজেদের মিলিত শক্তি দিয়ে আপনারা তার প্রতিটি নিষেধাজ্ঞা চূর্ণ করে দিন। এই শাসনতন্ত্রের আইনের বলে ক্ষেতমজুর কোনও দিনই ন্যায্য মজুরী বা জমি পাবে না—কলকারখানার মজুর কাজ পাবে না—বাঁচার মত মজুরী পাবে না—হাজারে হাজারে ছাঁটাই হবে। এই শাসনতন্ত্রের বলেই—মহাজন-জোতদার ভাগচাষীর জমি কেড়ে নিয়ে তাদের উচ্ছেদ করে পথে বসাবে,—মধ্যবিত্ত চাষীর ওপর ট্যাক্স, খাজনার বোঝা চাপিয়ে তার জমি নিলাম করে হাজার হাজার পরিবারকে পথের ভিখারী করবে,—শিক্ষিত মধ্যবিত্ত চাকুরীজীবীকে বেকার করবে—তারা কাজ পাবে না, না খেয়ে মরবে। ছাত্র-ছাত্রীদের বাধ্যতামূলকভাবে পড়া বন্ধ করাবে—পরীক্ষায় ফেল করাবে। এই শাসনতন্ত্র হিন্দু-মুসলমান ছুৎ-অছুতের মধ্যে ভেদ তুলে ভাইয়ে ভাইয়ে আবার লড়াই লাগিয়ে দেবে।

এই শাসনতন্ত্রের বলেই, [illegible] জীবন ও সম্পদে, ধনলোক আর জমিদার পাবে গরীবকে শোষণ করার অবাধ অধিকার। কংগ্রেসী ফৌজ-বেয়নেট আর রাইফেল—সেনাদল আর রাজাকারী-গুণ্ডাবাহিনীর দ্বারা অবাধ শোষণ ও জুলুম চালাতে পারবে। মালিকের ও মজুতের [illegible] দেখিয়ে নামমাত্র [illegible] দেখে তারা সমস্ত খোরাক—চাষা মধ্যবিত্তের [illegible] ধান—বিদেশে নিয়ে যাবে, চাষীরা খোরাক পাবে না—শীতবস্ত্র পাবে না—একমুঠো হাওনাতও পাবে না—দলে দলে না খেয়ে মরবে।

এই শাসনতন্ত্রের বলেই তারা আমেরিকান-বৃটিশের স্বার্থে দেশের লক্ষ লক্ষ যুবককে বাধ্যতামূলকভাবে সৈন্য-বাহিনীতে ভর্তি করবে [illegible] কামানের খোরাক হতে পাঠাবে। এর বিরুদ্ধে প্রতিবাদ পর্যন্ত করতে দেবে না। সভা-শোভাযাত্রা বন্ধ করবে—১৪৪ ধারা ও নিরাপত্তা আইন জারী করবে—হাজার হাজার মেয়ে-পুরুষ-

শিশুকে জেলখানায় আটকে রেখে, সেখানে গুপ্তহত্যা করে—তারা জনতার বুকের ওপর নতুন শাসনতন্ত্র জগদ্দল-পাথরের মত চাপিয়ে দম ফেলতেও দেবে না।

এই শাসনতন্ত্রের সর্বগ্রাসী আক্রমণ থেকে বাঁচার ও মুক্তির পথ দেখিয়েছে তেলেঙ্গানার ২০ লক্ষ মানুষ আর আমাদের জেলার কাকদ্বীপের হাজার হাজার সর্বহারা। কংগ্রেসীদের হিংসাত্মক আক্রমণ—ওদের পাশবিক বর্বরতা, তেলেঙ্গানা আর কাকদ্বীপের বিপ্লবী জনগণ কোনঠাসা করে রেখেছে। ওদের রক্তাক্ত অভিযান—বেয়নেট আর বন্দুকের হুড়াহুড়ি সেখানকার অত্যাচারীদের রক্ষা করতে পারেনি। নিশ্চিহ্ন হয়েছে কংগ্রেসী শাসন—তেলেঙ্গানা আর দক্ষিণ কাকদ্বীপের বুক থেকে। লক্ষ লক্ষ বিঘা জমির মালিক লাটদারের অসংখ্য কাছারী জ্বলেছে—কংগ্রেসী-পাণ্ডা-সেবাদলের মাথা,—ঘৃণিত শত্রু যারা, তারা প্রতিদিন খতম হচ্ছে—সশস্ত্র জনতার হাতে। ক্রুদ্ধ জনতার সশস্ত্র আক্রমণের সামনে বার বার আহত হয়ে পালিয়ে যাচ্ছে কংগ্রেসীদের পুলিশ আর মিলিটারী রাইফেল আর মেশিন-গান নিয়ে। সেখানে তারা খেতে পায় না—তাদের ক্যাম্প জ্বলেছে—দাঁড়াবার জায়গা নেই। এক কথায় দক্ষিণ কাকদ্বীপের জনতার সশস্ত্র অভিযান ওদের বুকে মরণের কাঁপন জাগিয়ে দিয়েছে।

সারা সুন্দরবনের মেহনতী জনতা—হাজার হাজার গণসমাবেশ ও মিছিল করে শত্রুর মুখোস ছিঁড়ে ফেলো—দক্ষিণ কাকদ্বীপের পথে এগিয়ে চল। শত্রুর অস্ত্র কেড়ে নাও। তোমাদের হাতের কাছে যে অস্ত্র আছে তাই নিয়ে শত্রুকে আঘাত কর। যে যেখানে যেভাবে পারো জনতার মধ্য থেকে সশস্ত্র অভিযান চালাও। সে সশস্ত্র অভিযানের আঘাতে কংগ্রেসী পুলিশ ফৌজ, কংগ্রেসী নেতা-সেবাদলের পাণ্ডা-বড়লোক গোষ্ঠী—এককথায় এই শাসনতন্ত্রের তল্পিবাহি প্রত্যেকটি নরপিশাচকে প্রাণপণে আঘাত করে খতম কর। তাদের ঘাঁটি, আস্তানা তাদের বিষয়-সম্পত্তি দখল করে নাও। তেলেঙ্গানা ও কাকদ্বীপে যেমন ক্ষেতমজুর ও সর্বহারা ওদের জমি, বাড়ী, সম্পত্তি দখল করে নিয়ে নিজেদের শাসনতন্ত্র চালু করেছে তেমনি করে চাষী মজুর রাজ কায়েম কর। ২৬শে নতুন শাসনতন্ত্র জন্মাবার আগেই তার রাক্ষসী মাকে শুদ্ধু শেষ করে দাও।

জেলার সর্বত্র এলাকায় নিম্নলিখিত প্রোগ্রাম অনুযায়ী বিরাট বিরাট গণ-সমাবেশ করুন। এই সাতদিন ব্যাপী হাজার হাজার লোকের মিটিং সভা-শোভাযাত্রা করে এই সর্বনাশা শাসনতন্ত্রের মুখোস ছিঁড়ে ফেলুন। নিজেরা সশস্ত্র হয়ে বিপ্লবী কায়দায় সেই সভা ও মিছিল রক্ষা করুন এবং শত্রুকে পেলেই আঘাত করুন। ঘরে ঘরে কালো পতাকা ওড়ান—শাসনতন্ত্র ও কংগ্রেস বিরোধী ধ্বনী দিন। হাট-বাজার-কলকারখানা-ক্ষেত খামার-স্কুল-কলেজ হরতাল করে সরকারকে অচল করে দিন।

১৯শে জানুয়ারী হতে সংগ্রাম সুরু—ঐদিন থেকে সকলে কোমর বেঁধে লাগুন :—

১৯শে জানুয়ারী—বন্দীমুক্তি ও গণতান্ত্রিক অধিকার রক্ষার দিবস।

২০শে „ —ক্ষেতমজুর ধর্মঘট ও ফসল দখলের দিবস—এই দিন বিপ্লবী কায়দায় পুরা ফসল দখল করুন। হাট-বাজার-ক্ষেত খামার হরতাল করে ফসল ঘরে আনুন। শত্রুকে মেরে হঠান।

২১শে „ —ঐতিহাসিক লেনিন দিবস। সোভিয়েট ইউনিয়নের নেতৃত্বে শান্তির সংগ্রামের জন্য জনতাকে ডাক দিন।

২২শে „ —বেকার বিরোধী ও শিক্ষা সংস্কার বিরোধী দিবস। হাজার হাজার ধর্মঘট—জঙ্গী সমাবেশের মধ্য দিয়া ঘৃণা জাগাইতে হইবে।

২৩শে „ —কমনওয়েলথ বিরোধী ও যুদ্ধ বিরোধী দিবস।

২৪শে „ —তেলেঙ্গানা ও লালগঞ্জ দিবস। তেলেঙ্গানার বীরদের ফাঁসীর হুকুমের বিরুদ্ধে ও লালগঞ্জের পুলিশ-পল্টনের বর্বরতার বিরুদ্ধে প্রচণ্ড বিক্ষোভ সৃষ্টি করুন।

২৫শে „ —ঐক্য দিবস। হিন্দু-মুসলমান বাঙ্গালী-অবাঙ্গালী শ্রমিক-কৃষক-ছাত্র ঐক্য গঠিত হইবে সাধারণ ধর্মঘটের মধ্য দিয়া।

২৬শে „ —শাসনতন্ত্র বিরোধী গণসমাবেশ।

নিবেদক—

২৪ পরগণা জেলা কমিউনিস্ট পার্টি

২৪ পরগণা জেলা কৃষক সমিতি